Postal Regn No./C.G./RYP DN/48/2022-24

website- www.dvpnews.in

रायपुर (छ.ग.) एवं झांसी (उ.प्र.) से एक साथ प्रकाशित राष्ट्रीय हिन्दी पत्र

दैनिक विश्व परिवार

● अंक : 253 ● वर्ष : 12 ● रायपुर, शनिवार 29 मार्च 2025 ● पृष्ठ : 08 ● मूल्य : 3 रूपए ● संस्थापक : कीर्तिशेष- श्री कैलाश चन्द्र जैन

सुविचार

अगर तुम सीखना चाहते हो तो भूलों से सीखो।

If you want to learn, learn from the errors.

आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज

महापौर मीनल चौबे ने निगम सदन में 1529 करोड़ 53 लाख 28 हजार रुपए का बजट पेश किया

इलेक्ट्रॉनिक मार्केट और ट्रेड टावर बनेंगे, वर्किंग विमेंस हॉस्टल, युवाओं को हाईटेक लाइब्रेरी, दिव्यांग पार्क और बच्चों के लिए प्ले जोन बनाए जाएंगे

रायपुर (विश्व परिवार)। रायपुर नगर निगम में महापौर श्रीमती मीनल चौबे ने 1529 करोड़ 53 लाख 28 हजार रुपए का बजट पेश कर दिया है। महापौर ने इसे फायदे का बजट बताया है जिसमें सभी वर्ग का ध्यान रखा गया है। महापौर मीनल चौबे ने पीले रंग की मखमली फाइल में बजट लेकर निगम कार्यालय पहुंची थीं। फाइल में छत्तीसगढ़ महतारी की फोटो छपी है।

महापौर मीनल चौबे ने अपने कार्यकाल का प्रथम बजट रायपुर निगम सदन में प्रस्तुत किया. इसमें प्रारंभिक शेष 67 करोड़ 11 लाख 41 हजार, कुल वार्षिक आय 1462 करोड़ 41 लाख 87 हजार, योग 1529 करोड़ 53 लाख 28 हजार, कुल व्यय 1528 करोड़ 73 लाख 83 हजार, अंतिम शेष 79 लाख 45 हजार का फायदा की जानकारी निगम सदन में महापौर द्वारा बजट अभिभाषण में प्रस्तुत की गयी।

इस दौरान मीनल चौबे ने कहा कि पिछले महापौर ने लगभग 2000 करोड़ का बजट प्रस्तुत किया था, उसमें सिर्फ 850 करोड़ रुपए ही खर्च हुए। हमारा जो बजट है वास्तविकता का बजट है। हम जितना अनुमान लगा रहे हैं उन सभी कामों को किया जाएगा। मीनल चौबे ने कहा कि 15 साल के बाद भाजपा के मेयर के रूप में मैंने अपना पहला बजट पेश किया, हमने सभी क्षेत्रों के विकास के लिए बजट में सभी चीजों को शामिल किया है। बजट में जिन चीजों का उल्लेख किया है वह सभी कार्य पूरा करने का प्रयास करेंगे।

बजट में महिलाओं के लिए खास है...

रायपुर में तीन जगहों पर वर्किंग विमेंस हॉस्टल बनेगा। पब्लिक प्लेस पर विमेंन रेस्ट रुम भी बनेंगे। जिसमें सैनेटरी वेंडिंग मशीन और बेबी फीडिंग रूम भी होंगे। सार्वजनिक स्थलों पर महिला सुरक्षा के तहत सर्विलेंस कैमरे लगेंगे। 20 लाख का प्रावधान किया गया है। निगम क्षेत्र में महिला टॉयलेट में सैनेटरी नैपकिन वेंडिंग मशीन लगाए जाएंगे। 25 लाख का प्रावधान है। महिला स्वावलंबन और रोजगार के लिए राज्य शासन द्वारा 10 करोड़ की राशि दी गई है। इस राशि से गारमेंट फैक्टरी का संचालन किया जाएगा। जिससे स्थानीय महिलाओं और युवाओं को रोजगार से जोड़कर आर्थिक समृद्धि प्रदान की जाएगी। स्ट्रीट वेंडर्स को डिजिटल लेनदेन का प्रशिक्षण दिया जाएगा। इनके परिवार के सदस्यों को शासन के अन्य योजनाओं का लाभ दिलवाया जायेगा। वेंडिंग जोन को विकसित किया जाएगा। साथ ही मार्केट डेवलपमेंट प्लान के तहत बाजारों को विकसित किया जाएगा। तृतीय लिंग के समूहों को चिन्हांकित कर उनको / उनके रूचि के अनुसार प्रशिक्षण दिया जाएगा ताकि वे समाज की मुख्य धारा से जुड़ सकें और आर्थिक/सामाजिक रूप से सशक्त बन सके।

दिव्यांगों के लिए क्या खास? : दिव्यांगों के लिए 10 करोड़ की लागत से दिव्यांग पार्क बनेंगे। दिव्यांग फ्रेंडली भवन और टॉयलेट भी बनाए जाएंगे। 10 करोड़ का प्रावधान।

व्यापार के क्षेत्र में क्या खास? : रायपुर में इलेक्ट्रॉनिक मार्केट, क्रिस्टल आर्केड कॉमर्शियल हब और ट्रेड टॉवर तैयार किए जाएंगे इससे युवा उद्यमियों को रोजगार के साथ ही स्टार्ट-अप गतिविधियों को बढ़ावा मिलेगा। 219 करोड़ का प्रावधान

रोजगार के क्षेत्र में क्या खास? : जोन कार्यालय क्षेत्र में चौपाटी का निर्माण किया जाएगा। छोटे व्यापारियों/ फुटकर कारोबारियों को व्यापार के लिए जगह मिलेगी। इनोवेशन सेंटर बनाने के लिए 10 करोड़ का प्रावधान है।

युवाओं के लिए क्या खास? : युवाओं के लिए यूथ हॉस्टल तैयार किए जाएंगे। नालंदा लाइब्रेरी की तर्ज पर रायपुर के अलग-अलग क्षेत्रों में हाईटेक लाइब्रेरी बनेंगे। नगर निगम में बच्चों के लिए प्ले जोन तैयार किए जाएंगे।

विपक्ष बोला : वहीं नेता प्रतिपक्ष संदीप साहू ने इसे फेलियर बजट कहा है। संदीप साहू के मुताबिक बजट में मूलभूत सुविधाओं की बात नहीं है। गौ संरक्षण के लिए गौ अभयारण्य बनाने का कोई प्रावधान नहीं है। मच्छरों के उन्मूलन के लिए पर्याप्त प्रावधान नहीं है। तालाबों के संरक्षण के लिए कोई विशेष व्यवस्था नहीं की गई।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से अभनपुर रायपुर रेल सेवा का शुभारंभ 30 मार्च को

रायपुर से अभनपुर किराया मात्र 10 रुपए

रायपुर (विश्व परिवार)। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी 30 मार्च को छत्तीसगढ़ में कनेक्टिविटी को बेहतर बनाने के लिए अभनपुर स्टेशन पर आयोजित कार्यक्रम में वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से अभनपुर रायपुर रेल सेवा का शुभारंभ 15:30 बजे किया जाएगा।

गाड़ी संख्या 08835 अभनपुर-रायपुर इनॉग्रल मेमू पैसेंजर स्पेशल आठ कोच के साथ अभनपुर से 15:30 बजे रवाना होकर केंद्री15.38 बजे सीबीडी 15 .52 बजे मंदिर हसौद 16.10 बजे रायपुर 16.55 बजे पहुंचेगी। दिनांक 31 मार्च 2025 से रायपुर अभनपुर रायपुर के मध्य सुबह एवं शाम को दो मेमो स्पेशल ट्रेनों की सुविधा यात्रियों को मिलेगी।

68760/ 68761 रायपुर अभनपुर रायपुर मेमू पैसेंजर- गाड़ी संख्या 68760 रायपुर अभनपुर मेमू पैसेंजर रायपुर से 9:00 बजे रवाना होकर 9:18 बजे मंदिर हसोद 9:32 बजे सीबीडी 9:50 बजे केंद्रीय 10:10 बजे अभनपुर पहुंचेगी। यह गाड़ी वापसी में गाड़ी संख्या 68761 अभनपुर रायपुर पैसेंजर अभनपुर से 10:20 बजे रवाना होकर केंद्री 10.28 बजे सीबीडी, 10.42 बजे मंदिर हसौद 11:00 बजे रायपुर 11:45 बजे पहुंचेगी।

68762/68763 रायपुर अभनपुर रायपुर मेमू पैसेंजर- गाड़ी संख्या 68762 रायपुर अभनपुर मेमू पैसेंजर रायपुर से 16:20 बजे रवाना होकर 16:38 बजे मंदिर हसौद,16:52 बजे सीबीडी, 17:10 बजे केंद्री, 17:30 बजे अभनपुर पहुंचेगी। गाड़ी संख्या 68763 अभनपुर रायपुर मेमू पैसेंजर अभनपुर से 18:10 बजे रवाना होकर 18:18 केंद्री, 18:32 बजे सीबीडी, 18:45 बजे मंदिर हसौद, 19:20 बजे रायपुर पहुंचेगी। रायपुर से अभनपुर किराया मात्र 10 रुपए है।

कलेक्टर-एसएसपी डीआरएम ने लिया जायजा : अभनपुर-रायपुर के बीच नई रेल सेवा के शुभारंभ को लेकर तैयारियां जोरों पर है। कलेक्टर डॉ. गौरव सिंह व एसएसपी डीआरएम ने रेलवे के वरिष्ठ अधिकारियों के साथ अभनपुर से रायपुर तक निरीक्षण वैन से यात्रा कर रेलवे ट्रैक और अन्य सुविधाओं की जांच की। उन्होंने कार्यक्रम स्थल पर लोगों के बैठने की व्यवस्था, पेयजल सहित अन्य सुविधाओं का निरीक्षण किया।

छ.ग. स्टेट पॉवर कंपनी से ए.के. धर, जयेश बोन्डे एवं डी.एस. भगत की भावभीनी विदाई

रायपुर (विश्व परिवार)। छत्तीसगढ़ स्टेट पॉवर कंपनीज से तीन उच्च अधिकारी सहित 10 कर्मचारियों को कंपनी प्रबंधन द्वारा भावभीनी विदाई दी गई। सेवानिवृत्त हो रहे अधिकारियों में कार्यपालक निदेशक एस.एंड पी. (डिस्ट्रीब्यूशन कंपनी) श्री अंजन कुमार धर, कार्यपालक निदेशक (सिविल) उत्पादन श्री जयेश बोन्डे एवं मुख्य अभियंता (प्रशिक्षण) श्री धरम साय भगत को सेवाभवन में पॉवर कंपनी के अध्यक्ष डॉ. रोहित यादव तथा प्रबंध निदेशकगण द्वारा सम्मानित कर विदाई दी गई।

इस अवसर पर अध्यक्ष श्री यादव ने अधिकारियों की कार्यशैली की प्रशंसा की एवं उनके योगदान को पॉवर कंपनी के हित में बताया। उन्होंने कहा कि तीनों सेवानिवृत हो रहे अधिकारियों की विदाई से कंपनी में अनुभवी कर्मियों की कमी महसूस होती है। अधिकारीगण सेवा में रहते हुए भी अपने ज्ञान व तकनीकी कौशल को बढ़ाते रहे हैं जिससे कंपनी को समय-समय पर लाभ मिलता रहा है। कार्यक्रम में एमडी (जनरेशन) श्री एस.के. कटियार, एमडी (टांसमिशन) श्री आर.के.शुक्ला, एमडी (डिस्ट्रीब्यूशन) श्री भीम सिंह कंवर ने भी सेवानिवृत्त अधिकारियों की सुखद भविष्य और अच्छे स्वास्थ्य की कामना की। इस अवसर पर कार्यपालक निदेशक श्री केएस मनोठिया, श्री एमएस चौहान, श्री संजय पटेल, श्री आर.ए.पाठक, श्रीमती ज्योति नंनौरे, श्री सी.एल.नेताम, श्री संदीप वर्मा, श्री गिरीश गुप्ता, श्री वीके दीक्षित, मुख्य अभियंता श्री एएम परियल, श्रीमती शारदा सोनवानी, श्री केबी पात्रे, श्री वाई.बी.जैन, श्री सुभाष शर्मा, श्री हेमंत सिंह, श्री एस.के.गजपाल, श्री एम.जामुलकर उपस्थित थे।

पुलिस लाईन के परेड ग्राउण्ड में रायपुर रेंज अंतर जिला पुलिस खेलकूद प्रतियोगिता वर्ष 2025 हुआ सम्पन्न

समापन समारोह में विजेताओं एवं प्रतिभागियों में दिखा उत्साह

रायपुर (विश्व परिवार)। श्री अमरेश कुमार मिश्रा (भापुसे) पुलिस महानिरीक्षक, रायपुर क्षेत्र रायपुर के मार्गनिर्देशन में, डॉ. लालउमेद सिंह (भापुसे) उमनि/ वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक, रायपुर की गरिमामय उपस्थिति में रायपुर रेंज का अंतर जिला पुलिस खेलकूद प्रतियोगिता वर्ष 2025 का समापन समारोह पुलिस लाईन रायपुर के परेड ग्राउण्ड में संपन्न हुआ।

समापन समारोह में सर्वप्रथम उप पुलिस महानिरीक्षक एवं वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक महोदय का आगमन हुआ, खेल परेड तथा पुलिस बैण्ड द्वारा उनका अभिवादन किया गया। उमनि/ वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक, रायपुर का सर्वप्रथम पुष्प गुच्छ भेंट कर स्वागत् किया जाकर मंच पर आमंत्रित किया गया, मंच पर खेल परेड तथा पुलिस बैण्ड द्वारा सलामी दिया जाकर अभिवादन किया गया। तत्पश्चात् माननीय महोदय से अनुमति प्राप्त कर रेंज के पांचो जिले के खिलाड़ी प्रतिभागियों द्वारा बैण्ड के धुन पर आकर्षक मार्च पास्ट प्रस्तुत किया गया, इस आकर्षक मार्च पास्ट का दर्शक दीर्घा में बैठे पुलिस के जवानों, गणमान्य नागरिकों ने अपनी करतल ध्वनि से ताली बजाकर स्वागत् किया। मार्च पास्ट के पश्चात् खेल प्रतियोगिता के परिचयात्मक उद्बोधन में उमनि/वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक रायपुर ने बताया कि पुलिस महानिरीक्षक के निर्देश पर रायपुर रेंज का रेंज स्तरीय खेलकूद प्रतियोगिता का आयोजन दिनांक 26.03.2025 से प्रारंभ किया जाकर आज दिनांक 28.03.2025 को समापन किया जा रहा है।

महापौर मधुसूदन यादव के परिषद की पहली बैठक में बजट पर अनुशंसा सहित अन्य विषयों की स्वीकृति

राजनांदगांव (विश्व परिवार)। महापौर श्री मधुसूदन यादव की अध्यक्षता में महापौर परिषद की बैठक निगम स्थित महापौर कक्ष में संपन्न हुई। बैठक में आय-व्यय अनुमान पत्रक 2025-2026 पर विचार विमर्श उपरांत स्वीकृति हेतु सामान्य सभा को प्रेषित किया गया एवं वित्तीय वर्ष 2024-2025 के आय-व्यय को पुनरीक्षण की अनुशंसा सहित सामान्य सभा को भेजा गया। साथ ही नगर निगम के विभिन्न विभागों के लिये निविदा आमंत्रण सहित अन्य विषयो पर स्वीकृति प्रदान की गई। बैठक के पूर्व में महापौर श्री यादव सहित निगम अध्यक्ष श्री टोपेन्द्र सिंह पारस वर्मा तथा महापौर परिषद के सभी प्रभारी सदस्यों का आयुक्त श्री अतुल विश्वकर्मा, उपायुक्त श्री मोबिन अली, कार्यपालन अभियंता श्री यू.के.रामटेके, श्री संजय वर्मा व श्री दीपक खांडे के अलावा विभागीय अधिकारियों ने पुष्पगुच्छ से स्वागत किया।

महापौर श्री यादव ने बताया कि वित्तीय वर्ष 2025-26 के लिये बजट के संबंध में विस्तार से चर्चा करते हुये अनुशंसा सहित स्वीकृति हेतु सामान्यसभा को प्रेषित किया गया। उन्होंने बताया कि बजट में शासन द्वारा राजनांदगांव के विकास के लिये दी गयी स्वीकृति व बजट प्रावधान को रखा जायेगा। इसके अलावा जनहित एवं जनभावनाओं के अनुरूप बजट में प्रावधान किया जायेगा। उन्होंने कहा कि अगले माह अप्रैल में नवरात्रि के पश्चात सामान्य सभा में बजट प्रस्तुत किया जायेगा।

महापौर श्री यादव ने बताया कि बजट के अलावा राष्ट्रीय परिवार सहायता योजनांतर्गत पात्र हितग्राहियों को सहायता राशि भुगतान किये जाने की स्वीकृति तथा लोक सेवा केन्द्र से प्राप्त सामाजिक सुरक्षा पेंशन के पात्र आवेदनों की अनुशंसा सहित स्वीकृति हेतु सामान्य सभा को अग्रेषित किया गया। इसके अलावा मवेशी बाजार निलामी की उच्चतम बोली की स्वीकृ ति तथा वार्षिक निविदा आमंत्रण की स्वीकृति प्रदान की गयी। साथ ही शासन के निर्देशानुसार नवागांव ट्रेंचिंग ग्राउण्ड में शेष लिगेसी वेस्ट पार्ट-2 के निपटान के लिये निविदा आमंत्रण की स्वीकृति प्रदान की गयी।

बैठक में महापौर श्री यादव ने अधिकारियों से कहा कि सभी अपने अपने दायित्वो का निष्ठापूर्वक निर्वहन करेंगे, चुकि नगर निगम जनता से जुडी संस्था है, अतः जनता की समस्या का प्राथमिकता के आधार पर निराकरण करेंगे। उन्होंने कहा कि सभी अधिकारी पार्षदों से सामंजस्य बनाकर कार्य करेंगे, अधिकारी कर्मचारी संबंधित वार्ड के पार्षद से मिलकर जानकारी देकर कार्य संपादित करेंगे। उन्होंने अधिकारी कर्मचारी के पदोन्नति, क्रमोन्नति तथा अनुकंपा नियुक्त के प्रकरणो का प्राथमिकता से निराकरण करने आयुक्त श्री विश्वकर्मा को निर्देशित किये।

कलेक्टर डॉ. गौरव सिंह ने अमृत सरोवर और मनरेगा कार्यों का लिया जायजा

रायपुर (विसं)। कलेक्टर डॉ. गौरव सिंह ने आज अभनपुर ब्लॉक के ग्राम केंद्री का दौरा किया, जहां उन्होंने अमृत सरोवर के तहत बनाए जा रहे तालाब का निरीक्षण किया और गहरीकरण कार्य की प्रगति का जायजा लिया। इस दौरान उन्होंने मौके पर जाकर खुद गड्ढे की साइज का माप करवाया और कार्य की गुणवत्ता को सुनिश्चित करने के लिए अधिकारियों को आवश्यक निर्देश दिए। निरीक्षण के दौरान कलेक्टर ने मनरेगा के तहत काम कर रहे मजदूरों से बातचीत की। उन्होंने पूछा कि क्या उन्हें समय पर काम और मजदूरी मिल रही है, जिससे यह सुनिश्चित किया जा सके कि श्रमिकों को किसी प्रकार की असुविधा न हो। मजदूरों ने अपने अनुभव साझा किए और कलेक्टर ने उनकी समस्याओं को सुना। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिया कि मजदूरी के भुगतान में किसी भी प्रकार की देरी न हो और श्रमिकों को समय पर सभी सुविधाएं मिलें।

रिसाली निगम का बजट अप्रैल के प्रथम सप्ताह में, परिषद ने लिया निर्णय

पार्षदो के सुझाव बजट में शामिल

रिसाली (विश्व परिवार)। महापौर शशि सिन्हा की अध्यक्षता में महापौर परिषद की बैठक हुई। रिसाली निगम का बजट अप्रैल माह के प्रथम सप्ताह में सदन में रखने का निर्णय लिया गया। महापौर शशि ने परिषद के सदस्यों और आयुक्त मोनिका वर्मा के साथ लगभग दो घंटे तक बजट संबंधी चर्चा की। साथ ही बजट में पार्षद द्वारा आमंत्रित सुझाव को भी शामिल करने का निर्णय लिया गया।

शुक्रवार की दोपहर बाद महापौर परिषद के सदस्यों ने 2025-26 के बजट को लेकर निगम के अधिकारियों से चर्चा की। परिषद के सद्स्यों ने चर्चा और मंत्रणा के बाद सभापति केशव बंछोर से चर्चा की। बजट के लिए सामान्य सभा अप्रैल प्रथम सप्ताह में बुलाने सहमती बनी। उल्लेखनीय है कि महापौर ने रिसाली निगम के सभी पार्षदों से बजट के लिए सुझाव मांगा था। उन्होंने निर्धारित समय अवधी में प्राप्त सुझावों और विकास कार्यो को आगामी वर्ष के लिए तैयार बजट में शामिल करने के निर्देश दिए। महापौर परिषद की बैठक में एमआईसी संजू नेताम, जहीर अब्बास, सनीर साहू, अनिल देशमुख, ममता यादव, आयुक्त मोनिका वर्मा, कार्यपालन अभियंता सुनील दुबे, एम.पी. देवांगन, निगम सचिव अश्वनी देशमुख सहित विभाग प्रमुख, अभियंता उपस्थित थे।

महापौर परिषद ने यह भी निर्णय लिया- अम्बेडकर स्कूल से सी.आई.सी.एफ. बटालियन नेवई तक विद्युतीकरण करने निविदा एवं दर को स्वीकृत किया। स्वच्छ भारत मिशन के अंतर्गत एस.एल.आर.एम. सेंटरों से पुनर्चकित किए जाने योग्य कचरे के पृथकीकरण एवं गीले कचरे से खाद तैयार करने के कार्य के लिए दर का अनुमोदन किया। वार्ड क्र. 08 में पेवर ब्लाक लगाने के कार्य की स्वीकृति। (स्थल परिवर्तन)। पुरैना में नाली निर्माण कार्य की स्वीकृति। जोरातराई में प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र निर्माण कार्य के लिए दर को स्वीकृति। तालपुरी में एस.टी.पी. के रख रखाव के लिए दर स्वीकृति।

महापौर श्रीमती अलका बाघमार ने प्रस्तुत की 5 सौ 19 करोड़ 52 लाख रुपए की बजट नवनिर्वाचित परिषद की पहली बैठक

पक्ष विपक्ष के सुझाव के साथ महिलाओ को टैक्स में छूट

मल्टी लेवल पार्किंग गया नगर में पानी टंकी सहित कई योजना, सर्वसम्मति से हुआ पारित

इंदिरा मार्केट में बनेगा मल्टीलेवल पार्किंग, प्रमुख मार्गों का होगा चौड़ीकरण

दुर्ग (विश्व परिवार)। नगर पालिक निगम के मुख्यालय सभागार में सभापति श्याम शर्मा के अध्यक्षता में निगम की पहली सामान्य सभा बुलाई शुक्रवार को दुर्ग नगर निगम के महापौर श्रीमती अलका बाघमार ने सदन में पहला बजट पेश करते हुए कहा मैं बजट के तथ्यों को आपके समक्ष रख रही हूँ। इस बजट में आगामी वित्तीय वर्ष 2025-26 के लिए समस्त स्त्रोतों एवं ऋण अनुदान से प्राप्ति के रूप में 5 सौ 19 करोड़ 52 लाख का प्रावधान किया गया है तथा अनुमानित प्रारंभिक शेष 01 अरब 28 करोड़ 08 लाख, इस प्रकार कुल आय 6 अरब 47 करोड़ 61 लाख रू0 दर्शाया गया है। व्यय शीर्ष में विभिन्न मदों में 5 सौ 19 करोड़ 57 लाख रू0 एवं अंतिम शेष 1 अरब 28 करोड़ 03 लाख का प्रावधान किया गया है। इस प्रकार आगामी वर्ष 2025-26 के लिए कुल 647.61 करोड़ का बजट अनुमानित किया गया है, जिसके आय पक्ष में राजस्व आय 177.45 करोड़ एवं पूंजीगत आय 342.07 करोड़ तथा इसके विरूद्ध राजस्व व्यय 177.39 करोड़ एवं पूंजीगत व्यय 342.18 करोड़ रखा गया है। इस प्रकार 4.95 लाख का हानि का बजट आपके समक्ष प्रस्तुत किया गया है।

मुख्य मुख्य विषय वस्तु एवं उस पर प्रावधानित बजट, प्रमुख मार्ग, नाली एवं 10 एसएलआरएम सेंटर निर्माण 25 करोड़, अमृत मिशन अंतर्गत एसटीपी प्लांट स्थापना कार्य 60 करोड़, नगर उत्थान योजना के तहत् प्रमुख मार्गो का निर्माण एवं विकास कार्य-25 करोड़, मुख्यमंत्री घोषणा अंतर्गत सांईस कॉलेज से स्टेशन तक केनाल रोड निर्माण, 5.50 करोड़, इंदिरा मार्केट मल्टीलेवल पार्किंग निर्माण 05 करोड़, सिकोल नाला सुदृढ़िकरण कार्य 01 करोड़, अटल परिसर निर्माण, 01 करोड़, मुख्यमंत्री पालिका बाजार योजना शनिचरी बाजार 01 करोड़, भक्तिपथ निर्माण 01 करोड़, सेनेटरी लैंड फिल्ड का विकास 01 करोड़ आदि का प्रावधान किया गया है।

3 दिन और शेष इसके बाद जमा करने पर 18 प्रतिशत अधिभार, 1000 रुपए पेनल्टी से बचने के लिए भारी उत्साह

भिलाईनगर/भिलाई (विश्व परिवार)। निगम क्षेत्र के करदाताओ को बिना अधिभार एवं पेनल्टी के के टैक्स पटाने 3 दिन शेष है। 3 दिन पश्चात सभी करदाताओं को वर्ष 2024-25 का संपत्तिकर जमा करने पर संपत्तिकर राशि पर 18 प्रतिशत अधिभार एवं 1000 रूपये पेनल्टी की राशि जमा करना पड़ेगा। संपत्तिकर, भूभाटक भूपटक जल कर जमा करने के लिए लोग में भारी उत्साह है। नगर निगम में भी उनके बैठने के लिए उनको पानी पीने के लिए उनके सहयोग के लिए सब व्यवस्था की गई है। सबके लिए अभी अच्छा अवसर है, संपत्तिकर जमा करने अधिभार एवं पेनल्टी से बचने का।

नगर निगम भिलाई में नागरिको की सुविधा के लिए मुख्य कार्यालय एवं जोन कार्यालय में संपत्तिकर जमा करने के लिए काउंटर खुले हुए है। आवश्यकता के अनुसार कर्मचारियो को बैठाया गया है। जो स्व: विवरणीय भरने में सहयोग कर रहे है। वैशाली नगर विधायक रिकेश सेन, महापौर नीरज पाल एवं आयुंक्त राजीव कुमार पाण्डेय ने सभी संपत्तिकर दाताओ से अनुरोध किये है कि शीघ्र से शीघ्र अपना बकाया संपत्तिकर की राशि निगम कोष में जमा कर एक आदर्श नागरिक बने। संपत्तिकर के माध्यम से ही नगर निगम भिलाई जनता से जुड़ी जनकल्याणकारी योजनाएं चलाती है।

गौरतलब है कि 31 मार्च के पूर्व नागरिक अपने आवासीय, व्यावसायिक भवनों के संपत्तिकर सहित निगम के अन्य देय कर राशि को जमा करके 1 अप्रेल से लगने वाले 18 प्रतिशत अधिभार तथा 1000 हजार रूपये पेनल्टी शुल्क की राशि से बच सकते है। नागरिको के सुविधा के लिए घर बैठे-बैठे आनलाईन संपत्तिकर जमा करने के लिए भी सुविधा प्रदान की गई है। आनलाईन वेबसाईट https://Chhattishgarhmunicipal.com/nagarnigam/citizen/ में संपत्तिकर बटन पर क्लीक करने पर संपत्तिकर में रजिस्टर्ड मोबाईल नम्बर पर ओटीपी आयेगा, ओटीपी डालने पर संपत्तिकर का विवरण, डिमांड नोट आदि की जानकारी प्राप्त होगी। भुगतान में क्लीक करने पर विकल्प के रूप में क्रेडिट, डेबिट, नेटबैंकिग, यूपीआई पूछा जायेगा, जिस पर क्लीक करने पर भुगतान की प्रक्रिया पूर्ण होगी। साथ ही वेबसाईट से ही भुगतान की रसीद जनरेट होगी, जिसे भवन मालिक प्रिंटकर सुरक्षित रख सकते है। अवकाश के दिनों में भी नगर निगम के मुख्य कार्यालय जोन कार्यालय में आकर के संपत्ति कर जमा कर सकते हैं खुला रहेगा।

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-10)
अमलीडीह पानी टंकी, रायपुर
E-mail ID - rmczone10@gmail.com

पत्र क्र./19436/ न.पा.नि./जोन क्र.-10/2025
रायपुर, दिनांक 28-03-2025

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 19436
वार्ड का नाम- 55 - रविन्द्रनाथ टैगोर वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 55 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. RPR652K00127 जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती MO. NAEEM KHAN पिता/पति, श्री/श्रीमती JANAB MO.FARUK KHAN के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती 1. SALMA KHATUN 2.MO. FAHEEM KHAN 3. MO. FAIZ KHAN पिता/पति, श्री/श्रीमती SW. MOHAMMAD NAIM KHAN ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **मृत्यु प्रमाण पत्र व शपथ पत्र बी1** / वंशानुक्रम/ अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री राकेश शर्मा
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक-(10)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-10)
अमलीडीह पानी टंकी, रायपुर
E-mail ID - rmczone10@gmail.com

पत्र क्र./19371 / न.पा.नि./जोन क्र.-10/2025
रायपुर, दिनांक 28-03-2025

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 19371
वार्ड का नाम- 54 - कामरेड सुधीर मुखर्जी वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 54 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. RPR651S0054D जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती NITEEN JAIN पिता/पति, श्री/श्रीमती LATE. DHARAM CHAND JAIN के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती TANVEER KHATOON पिता/पति, श्री/श्रीमती KAFIL AHMAD KHAN ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख** / वंशानुक्रम/ अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री राकेश शर्मा
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक-(10)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-10)
अमलीडीह पानी टंकी, रायपुर
E-mail ID - rmczone10@gmail.com

पत्र क्र./19370/ न.पा.नि./जोन क्र.-10/2025
रायपुर, दिनांक 28-03-2025

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 19370
वार्ड का नाम- 54 - कामरेड सुधीर मुखर्जी वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 54 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. RPR651S0054C जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती NITEEN JAIN पिता/पति, श्री/श्रीमती LATE. DHARAM CHAND JAIN के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती TANVEER KHATOON पिता/पति, श्री/श्रीमती KAFIL AHMAD KHAN ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख** / वंशानुक्रम/ अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री राकेश शर्मा
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक-(10)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-10)
अमलीडीह पानी टंकी, रायपुर
E-mail ID - rmczone10@gmail.com

पत्र क्र./19306/ न.पा.नि./जोन क्र.-10/2025
रायपुर, दिनांक 28-03-2025

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 19306
वार्ड का नाम- 54 - कामरेड सुधीर मुखर्जी वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 54 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. RPR6521S0079K जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती MANAV DEVELOPERS PARTNER SANJAY GOLECHHA पिता/पति, श्री/श्रीमती LT. RAMANLAL JI GOLECHHA के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती YATENDRA NATH SINGH पिता/पति, श्री/श्रीमती SHAILENDRA PRATAP SINGH ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख** / वंशानुक्रम/ अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री राकेश शर्मा
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक-(10)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्रं.-2)
शहीद समारक भवन, फाफाडीह, रायपुर
Email ID - rmczone2@gmail.com

पत्र क्रं./19416/न.पा.नि./जोन क्रं.-2/2025
रायपुर दिनांक : 28-03-2025

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 19416
वार्ड का नाम- 36- हवलदार अब्दूल हमीद वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि 36 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी-आई.डी.- RPR436G00149 जो कि निगम अभिलेख में श्री/श्रीमती SHEIKH JAINUDDIN पिता/पति, श्री/श्रीमती S/O NASRUDDIN के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **शेख शमशुद्दीन** पिता/पति, श्री/श्रीमती **पिता - स्व. शेख जैनुद्दीन** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत हक त्याग विलेख** / वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नही की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

सूचना जारी करें
श्री आर.के. डोंगरे
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक- (2)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-8)
मोहबा बाजार, रायपुर
E-mail ID - rmczone8@gmail.com

पत्र क्र. /19173/ न.पा.नि./जोन क्र.-8/2025
रायपुर, दिनांक 26-03-2025

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 19173
वार्ड का नाम- 69 - माधवराव सप्रे वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 69 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. RPR568K00158 जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती AJAY PODAR पिता/पति, श्री/श्रीमती LT. RADHESHYAM PODAR के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती PRADEEP KUMAR SONI पिता/पति, श्री/श्रीमती SHRI BABURAO SONI ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख** / वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री आदित्य कुमार हालदार
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक-8
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-10)
अमलीडीह पानी टंकी, रायपुर
E-mail ID - rmczone10@gmail.com

पत्र क्र./19285/ न.पा.नि./जोन क्र.-10/2025
रायपुर, दिनांक 26-03-2025

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 19285
वार्ड का नाम- 50 - रानी दुर्गावती वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 50 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. RPR445O00226 जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती G.C. TOLWANI पिता/पति, श्री/श्रीमती .... के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती SMT. KALPANA TOLWANI पिता/पति, श्री/श्रीमती W/O LT. G.C. TOLWANI ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/ अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री राकेश शर्मा
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक-(10)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-10)
अमलीडीह पानी टंकी, रायपुर
E-mail ID - rmczone10@gmail.com

पत्र क्र./19284/ न.पा.नि./जोन क्र.-10/2025
रायपुर, दिनांक 27-03-2025

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 19284
वार्ड का नाम- 50 - रानी दुर्गावती वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 50 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. RPR446E00230 जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती MOHAN LAL KHATUJA पिता/पति, श्री/श्रीमती CHANDU LAL KHATUJA SHRI के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती CHANDRESH KUMAR PANJWANI पिता/पति, श्री/श्रीमती S/O LT. HUNDRAJ PANJWANI ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/ अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री राकेश शर्मा
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक-(10)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय सम्पदा अधिकारी, छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल,
सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र-02, शंकर नगर रायपुर (छ.ग.), फोन नं.- 0771-4903223
Email Id: eocghbzone02@gmail.com

आम-सूचना

सर्व-साधारण को सूचित किया जाता है कि **छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मंडल द्वारा शंकर नगर सरहद, रायपुर** में निर्मित **दीनदयाल आवास योजनांतर्गत एल.आई.जी. फ्लैट कमांक-69, ब्लॉक-05,** प्रथम तल, **सुश्री अंजली तरनेशन कैवत्रा पिता श्री तरनेशन कैवत्रा** के नाम पर इस कार्यालय के पत्र **क्रमांक-11296 दिनांक 26.02.2018** को नामांतरित है। वर्तमान में नामांतरी **सुश्री अंजली तरनेशन कैवत्रा पिता श्री तरनेशन कैवत्रा, निवासी- 407, श्री कृष्णा सी.एच.एस.एल.टी.डी. महावीर नगर, संकल्प के पास, मुम्बई कांदिवाली वेस्ट (महाराष्ट्र)** के द्वारा उक्त फ्लैट को **क्रेता श्रीमती अनिता सेन पति श्री दिनेश्वर, निवासी खल्लारी पारा पोस्ट बिरकोनी वार्ड नं.-05, महासमुंद जिला-महासमुंद (छ.ग.)** को विक्रय करने के लिये अनापत्ति प्रमाण पत्र (एन.ओ.सी.) प्राप्त करने हेतु इस कार्यालय में अपना आवेदन प्रस्तुत किया गया है।

अतः उक्त फ्लैट के विक्रय के संबंध में किसी व्यक्ति शासकीय/अर्द्धशासकीय संस्था, निकाय बैंक अथवा वित्तिय संस्था, को कोई आपत्ति हो तो सूचना प्रकाशन दिनांक के 15 दिवस के अंदर लिखित आपत्ति मय दस्तावेज अधोहस्ताक्षरकर्ता के कार्यालय में प्रस्तुत करें। अन्यथा बाद में प्राप्त होने वाली आपत्ति पर विचार नहीं किया जावेगा।

सम्पदा अधिकारी,
छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल,
सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र-02, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय सम्पदा अधिकारी, छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल,
सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र-02, शंकर नगर रायपुर (छ.ग.), फोन नं.- 0771-4903223
Email Id: eocghbzone02@gmail.com

आम-सूचना

सर्व-साधारण को सूचित किया जाता है कि **छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मंडल** द्वारा **अवंति विहार तेलीबांधा, रायपुर** में निर्मित **दीनदयाल आवास योजनांतर्गत एल.आई.जी. फ्लैट क्रमांक-112, ब्लॉक-07, तृतीय तल, श्री प्रफुल्ल कुमार शर्मा पिता श्री गज्जु लाल शर्मा** के नाम पर स्ववित्तीय आधार पर आबंटित है। आबंटी द्वारा समस्त राशि जमा कर फ्लैट कि **लीजडीड दिनांक 23.03.2006** को पंजीकृत करने उपरांत फ्लैट का आधिपत्य प्राप्त कर लिया गया है। वर्तमान में आबंटी **श्री प्रफुल्ल कुमार शर्मा पिता श्री गज्जु लाल शर्मा, निवासी- राजा सायकल स्टोर्स गली, नुरानी चौक, राजातालाब, रायपुर (छ.ग.)** के द्वारा उक्त फ्लैट को क्रेता **श्रीमती रूपम शाही पति श्री रूद्र प्रताप शाही, निवासी- ब्लॉक-06, फ्लैट नं.-95, आकाश नगर हाऊसिंग बोर्ड कॉलोनी, अवंति विहार रायपुर (छ.ग.)** को विक्रय करने के लिये अनापत्ति प्रमाण पत्र (एन.ओ.सी.) प्राप्त करने हेतु इस कार्यालय में अपना आवेदन प्रस्तुत किया गया है।

अतः उक्त फ्लैट के विक्रय के संबंध में किसी व्यक्ति शासकीय/अर्द्धशासकीय संस्था, निकाय बैंक अथवा वित्तिय संस्था, को कोई आपत्ति हो तो सूचना प्रकाशन दिनांक के 15 दिवस के अंदर लिखित आपत्ति मय दस्तावेज अधोहस्ताक्षरकर्ता के कार्यालय में प्रस्तुत करें। अन्यथा बाद में प्राप्त होने वाली आपत्ति पर विचार नहीं किया जावेगा।

सम्पदा अधिकारी,
छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल,
सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र-02, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-4)
प्रेस क्लब, पानी टंकी के नीचे, छोटापारा, रायपुर
E-mail ID - rmczone4@gmail.com

पत्र क्र./19369/ न.पा.नि./जोन क्र.-4/2025
रायपुर, दिनांक 27-03-2025

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 19369
वार्ड का नाम-46-मौलाना अब्दूल रऊफ वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 46 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. RPR449C0214A जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती KISHORE HEMRAJ BARDIA पिता/पति, श्री/श्रीमती HEMRAJ BARDIA के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **सरोज बोथरा** पिता/पति, श्री/श्रीमती **धीरज कुमार बोथरा** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार / **पंजीकृत विक्रय विलेख** / वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री अरूण ध्रुव
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक-4
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-4)
प्रेस क्लब, पानी टंकी के नीचे, छोटापारा, रायपुर
E-mail ID - rmczone4@gmail.com

पत्र क्र./19368/ न.पा.नि./जोन क्र.-4/2025
रायपुर, दिनांक 27-03-2025

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 19368
वार्ड का नाम-46-मौलाना अब्दूल रऊफ वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 46 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. RPR440P00015 जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती DM LAXMAN RAO पिता/पति, श्री/श्रीमती D RANGARAO के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **1 नेहा अमेय अगस्ती 2. अमेय अगस्ती** पिता/पति, श्री/श्रीमती **पति अमेय अगस्ती पिता शंकर लक्ष्मण अगस्ती** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार / **पंजीकृत विक्रय विलेख** / वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री अरूण ध्रुव
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक-4
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-4)
प्रेस क्लब, पानी टंकी के नीचे, छोटापारा, रायपुर
E-mail ID - rmczone4@gmail.com

पत्र क्र./19399/ न.पा.नि./जोन क्र.-4/2025
रायपुर, दिनांक 27-03-2025

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 19399
वार्ड का नाम-45-स्वामी विवेकानंद सदर बाजार वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 45 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. RPR757C00206 जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती BHAVARLAL पिता/पति, श्री/श्रीमती UDAY CHAND के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **शांति लाल बोथरा** पिता/पति, श्री/श्रीमती **स्व. भंवर लाल बोथरा** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार / **अन्य दस्तावेज** / वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री अरूण ध्रुव
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक-4
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-4)
प्रेस क्लब, पानी टंकी के नीचे, छोटापारा, रायपुर
E-mail ID - rmczone4@gmail.com

पत्र क्र./19367/ न.पा.नि./जोन क्र.-4/2025
रायपुर, दिनांक 27-03-2025

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 19367
वार्ड का नाम-46-मौलाना अब्दूल रऊफ वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 46 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. RPR449C00214 जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती KISHORE HEMRAJ BARDIA पिता/पति, श्री/श्रीमती HEMRAJ BARDIA के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **सरोज बोथरा** पिता/पति, श्री/श्रीमती **पति धीरज कुमार बोथरा** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार / **पंजीकृत विक्रय विलेख** / वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री अरूण ध्रुव
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक-4
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

दैनिक
विश्व परिवार

बिलासपुर संभाग

रायपुर शनिवार 29 मार्च 2025

कोल इंडिया में बीमार कर्मचारीयो को अनफिट कर आश्रितों को नहीं मिलेगी नौकरी?

नौकरी न मिलने के खिलाफ ओबीसी कोल इंप्लाइज वेलफेयर एसोसिएशन ने दिल्ली जंतर मंतर पर किया प्रदर्शन

गोपाल सिंह विद्रोही

सूरजपुर ब्यूरो (दैनिक विश्व परिवार) कोल इंडिया और उसकी अनुषंगी इकाइयों मे मेडिकल अनफिट 9.4.0.कीबहाली को लेकर आज 28 मार्च 2025 को जंतर मंतर नई दिल्ली मे धरना प्रर्दशन किया गया जिसमे बैकवर्ड क्लश (ओ.बी.सी.)कोल एम्पलोइज वेलफेयर एसोसिएशन के राष्ट्रीय अध्यक्ष गुलाब सिंह एंव राष्ट्रीय महासचिव जय बहादुर सिंह यादव एंव कोल इंडिया के अनुषंगी कम्पनियों के केंद्रीय अध्यक्ष /महासचिव सम्मलित हुये ।जैसा कि पूर्व मे कोल इंडिया के कामगारों को कुछ बिमारीयो और विकलांग होने पर अनफिट करके उनके आश्रित को रोजगार दिया जा रहा था लेकिन बिगत सालो से ये 9.4.0.की सुविधा कोल इंडिया मे बंद कर दी गई है जिससे बिमार और विकलांग कर्मचारियों के अधिकारो का हनन हो रहा है ऐसे कर्मचारी कोल इंडिया मे मान्यता प्राप्त श्रमिक संगठनों को कितने बार मेडिकल अनफिट की सुविधा बहाल करने के लिये आवेदन दे चुके है लेकिन कुछ नही हुआ बल्कि आप पार्टी के सासंद संजय सिंह द्वारा संसद मे कोल इंडिया और उसकी अनुषंगी कम्पनियों मे मेडिकल अनफिट बहाल करने का मुद्दा उठाया जिस पर भारत सरकार के कोयला मंत्री जी.किशन रेड्डी ने 18 मार्च 2025 को संजय सिंह सासंद भारत सरकार को पत्र लिखकर जानकारी दी कि मैने कोल इंडिय लिमिटेड के साथ इस मुद्दे की विस्तार मे जाँच की है आपको यह जानकारी देना है कि एन.सी.डब्लू. ऐ.के खण्ड 9.4.0 के कार्यान्वयन के मामले मे 27/06/2024 को सी.आई.एल. की शीर्ष सयुक्त सलाहकार समिति की बैठक मे विचार विमर्श किया गया था जिसमे सी.आई.एल.और उसकी सहायक कम्पनियों के प्रबंधक और कोयला उदयोग में कार्यरत केंद्रीय ट्रेड युनियनो के प्रतिनिधि शामिल थे जिसमे विभिन्न आयामों को ध्यान मे रखते हुये सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया कि स्थायी रुप से विकलांग कर्मचारियों के आश्रित को रोजगार प्रदान करने के लिये एन.सी.डब्लू. ऐ.के खण्ड 9.4.0 को पुन: लागू करना संभव नही है । ऐसे मे कोल इंडिया में कार्यरत केंद्रीय ट्रेड यूनियनों का चाल और चरित्र मजदूरों के सामने आ गया कि इनके दिखाने के दांत अलग है और खानेके अलग है ऐसे मे बैकवर्ड क्लास (ओ.बी.सी.)कोल एम्पलोइज वेलफेयर एसोसिएशन कोल इंडिया और कोल इंडिया की अनुषंगी कम्पनियों के विकलांग कर्मचारियों के हक के लिये जंतर मंतर दिल्ली मे उनके साथ धरना प्रदर्शन कर रही है और आगे भी लड़ाई लड़ेगी जब तक कोल इंडिया और उसकी अनुषंगी कम्पनियों मे स्थायी रुप से विकलांग कर्मचारियों के आश्रित को रोजगार प्रदान करने के लिये एन.सु.डब्लू. ए. के खण्ड 9.4.0 पुन: लागू न हो जाय ।उक्त जानकारी बैकवर्ड क्लास (ओ.बी.सी.)कोल एम्पलोइज वेलफेयर एसोसिएशन एस.ई.सी.एल. बिलासपुर जोन के महासचिव मंगला सिंह यादव ने दी ।

आश्रितों को नौकरी न मिलना विभिन्न श्रमिक संगठनों के बड़े नेताओं का दोहरे चरित्र का परिणाम है -मंगला सिंह यादव

उक्त संबंध में ओबीसी कोल एम्पलाइज वेलफेयर एसोसिएशन एसईसीएल बिलासपुर जोन के महामंत्री मंगला सिंह यादव ने कहा कि कोल इंडिया के अनुष्ठांगिक इकाइयों में कार्यरत कर्मचारियों को अनफिट कर उनके आश्रितों को नौकरी न दिए जाने का निर्णय कोल इंडिया की संयुक्त सलाहकार समिति की संयुक्त बैठक में लिया गया था । केंद्रीय कोयला मंत्री के पत्र से स्पष्ट होता है कि उक्त बैठक में इस बिंदु पर संयुक्त सलाहकार समिति के नेताओं ने गंभीरता से अपनी बात नहीं रखी थी या यूं कहे कि बीमार कर्मचारियों को अनफिट कर उनके आश्रितों को नौकरी न देने का निर्णय पर आम समिति दी गई थी जो संयुक्त सलाहकार समिति के सदस्यों को कथनी और करनी को दर्शाता है जो मजदूर हित में ऐसा नहीं होना चाहिए।

संक्षिप्त समाचार

रामानुजनगर नवोदय में चयनित छात्रों को किया गया सम्मानित

सूरजपुर ब्यूरो (दैनिक विश्व परिवार) रामानुजनगर अंतर्गत जवाहर नवोदय विद्यालय में चयनित छात्रों का विकासखंड शिक्षा अधिकारी कार्यालय (बीआरसी भवन) में सम्मान किया गया। चयनित छात्रों को सर्वप्रथम तिलक लगाकर, मिठाई खिलाकर गुलदस्ता एवं कॉपी पेन दे कर उनका उत्साह वर्धन किया गया। इस वर्ष रामानुजनगर विकासखंड में लगभग 17 से अधिक छात्रों का चयन हुआ है, जिसमें प्रवीण पैकरा, प्रीतम पैकरा, शिव शंकर, करण साहू, अंशु ठाकुर, समर साहू, आदित्य कुमार साहू, रितिक कुमार साहू, यीशु साहू, बजरंग सिंह, आयुषी साहू, दिव्यांशी चौधरी, दीपिका भगत, शौर्य कुमार साहू, परी साहू, अश्वनी साहू, त्रिशा सिंह शामिल है। गत वर्ष विकाश खंड में 15 छात्रों का चयन हुआ था। कलेक्टर श्री एस जयवर्धन एवं जिला शिक्षा अधिकारी के मार्गदर्शन में शिक्षा सत्र के प्रारंभ से ही जवाहर नवोदय विद्यालय में चयन हेतु कक्षा पांचवी पढ़ने वाले छात्रों के लिए पांच कोचिंग सेंटर बनाए गए थे जिसमें निशुल्क कोचिंग शिक्षक कर रहे थे। समय-समय पर खंड स्तरीय शिक्षा अधिकारियों द्वारा सेंटरों का निरीक्षण कर आवश्यक सुविधा और निर्देश दिया गया। विकासखंड शिक्षा अधिकारी पंडित भारद्वाज ने चयनित छात्रों उनके शिक्षकों एवं अभिभावकों को बधाई और शुभकामना दिया। उन्होंने अपने उद्बोधन में कहा कि यह सफलता की प्रथम सीढ़ी है,जीवन में इसी तरह आपको हमेशा आगे बढ़ते रहना है। सहायक विकासखंड शिक्षा अधिकारी मनोज कुमार साहू छात्रों से कहा कि पीपल या बरगद का के छोटे से बीज में जिस प्रकार विशाल बरगद, पीपल के वृक्षों की संभावनाएं छुपी रहती है ठीक उसी प्रकार आप सभी चयनित छोटे छोटे बच्चों में अनंत संभावनाएं विद्यमान है। कठोर परिश्रम और अनुशासन के बल पर बहुत से बड़े-बड़े पदों पर चयनित होकर राष्ट्रहित में कार्य कर सकते हैं। बीआरसी मनोज जायसवाल ने सभी चयनित छात्रों को बधाई एवं शुभकामनाएं दी उन्होंने कहा कि आपने अपनी कड़ी मेहनत से सफलता प्राप्त की है, और इसी तरह अपने जीवन में नई ऊंचाइयों को छूते रहें। इस अवसर पर सीएसी रमेश जायसवाल, जयप्रकाश बरेठा, शिवलाल सिंह, रामकिशन राजवाड़े , गौरव मिश्रा, रामकली कुजूर, जे पी साहू विद्यालयों से आए हुए शिक्षक एवं छात्रों के अभिभावक बड़ी संख्या में उपस्थित थे।

31 मार्च सोमवार को जनदर्शन स्थगित

सूरजपुर ब्यूरो (दैनिक विश्व परिवार)-आगामी 31 मार्च सोमवार को ईद-उल-फ्तिर (ईद) का पर्व है। इस कारण 31 मार्च सोमवार को आयोजित होने वाला कलेक्टर जनदर्शन अवकाश के चलते स्थगित किया गया है। 31 मार्च के पश्चात आगामी सोमवार से कलेक्टर जनदर्शन अपने निर्धारित समय सारणी के अनुसार आयोजित होगा।

जलसंरक्षण में जनभागीदारी को प्रोत्साहित करने निकाली जा रही वाटरशेड यात्रा

जशपुरनगर(विश्व परिवार)। समुदाय संचालित दृष्टिकोण अंतर्गत परिकल्पित डब्ल्यूडीसी - पीएमकेएसवाई 2.0 के तहत जलसंरक्षण गतिविधियों में जागरूकता बढ़ाने तथा लोगों की भागीदारी को प्रोत्साहित करने के लिए ग्रामीण विकास मंत्रालय द्वारा 2025 को एक राष्ट्रव्यापी जन संपर्क अभियान वाटरशेड यात्रा की शुरूआत की गई है। इसी परिप्रेक्ष्य में कलेक्टर रोहित व्यास के मार्गदर्शन में छत्तीसगढ़ से वाटरशेड यात्रा का शुभारंभ जशपुर जिले में 26 मार्च को किया गया। उप संचालक कृषि, सह परियोजना प्रबंधक डब्ल्यूसीडीसी ने जानकारी देते हुए बताया कि प्रथम चरण में बगीचा विकासखण्ड के सन्ना क्षेत्र में संचालित जलग्रहण परियोजना के अंतर्गत ग्राम बहोरा व सन्ना में 26 मार्च को वाटरशेड यात्रा का आयोजन किया गया। यात्रा में स्थानीय जनप्रतिनिधि, समुदाय, लाईन विभाग, परियोजना क्षेत्र में कार्य करने वाले प्रतिष्ठित व्यक्ति, स्व-सहायता समूहों के सदस्यों, उपयोगकर्ता दल, कृषक उत्पादक संगठन एवं गैर सरकारी संस्थान रिड्स जशपुर के सदस्य शामिल रहे। वाटरशेड यात्रा कार्यक्रम में मजबूत सामुदायिक भागीदारी से प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना को किस तरह से सफल बनाया जा सकता है इसकी जानकारी दी गई। इसके साथ ही लोगों में जागरूकता पैदा करने एवं जनभागीदारी सुनिश्चित करने के लिये जमीनी स्तर पर विभिन्न गतिविधियों का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में जनभागीदारी से ग्राम बहोरा में तालाब का श्रमदान के माध्यम से साफ-सफाई किया गया।

कोरिया जिला प्रशासन ने 'आवा पानी झोंकी' अभियान शुरू किया

कोरिया(विश्व परिवार)। जल संरक्षण को लेकर देशभर में अनेक प्रयास किए जा रहे हैं। गिरते भूजल स्तर की चुनौती से निपटने के लिए आम जनता से लेकर शासन-प्रशासन तक अपनी भूमिका निभा रहे हैं। इसी दिशा में कोरिया जिला प्रशासन ने एक नवाचार करते हुए 'आवा पानी झोंकी' अभियान शुरू किया है, जिसका अर्थ है आओ सब मिलकर पानी को रोके। इस अभियान के तहत जल संरक्षण में ग्रामीण महिलाओं की भागीदारी को प्राथमिकता दी गई है। कलेक्टर चंदन त्रिपाठी के नेतृत्व में ठंड के मौसम में जिला प्रशासन ने सोनहत विकासखंड के दूरस्थ क्षेत्र में ग्रामीण महिलाओं के सहयोग से नाले में बोरी बांधने का कार्य किया था। यह जल संरक्षण की दिशा में एक सफल प्रयोग साबित हुआ। इसी क्रम में अब 28 मार्च को बैकुंठपुर विकासखण्ड के ग्राम पंचायत पोटेडांड और डोहडा में जन चौपाल का आयोजन किया जाएगा, जिसमें जनभागीदारी से जल संरक्षण योजनाओं के क्रियान्वयन पर चर्चा होगी। भारत सरकार द्वारा 'नारी शक्ति से जल शक्ति' अभियान के तहत यह पहल की जा रही है, जिसका उद्देश्य महिलाओं को जल संरक्षण की मुख्यधारा में लाना है। भारतीय समाज में नारी और पानी का गहरा संबंध है, क्योंकि घरेलू उपयोग से लेकर कृषि कार्यों तक महिलाएं ही सबसे अधिक जल संसाधनों का उपयोग करती हैं। इसी को ध्यान में रखते हुए, जिला प्रशासन ने महिलाओं को जल संरक्षण का नेतृत्व देने जैसे निर्णय ले रहे हैं। इस अभियान के तहत कई महत्वपूर्ण गतिविधियों को अंजाम दिया जाएगा, जिसमें ग्राम स्तर पर जन चौपाल का आयोजन, स्वयंसेवकों और युवाओं का चयन, जन प्रतिनिधियों की सहभागिता सुनिश्चित करना, जल बहिनी दल के माध्यम से वाटर लेवल सर्वे, ट्रांजिट वॉक कर जल स्रोतों की मैपिंग जैसे कार्य। इसके अलावा, जिला प्रशासन ने हाल ही में इस विषय पर एक कार्यशाला एवं मैदानी भ्रमण का आयोजन भी किया था। अब आगामी ग्राम वार बैठक में जल संरक्षण के लिए ठोस रणनीति पर अमल किया जाएगा।

जिला प्रशासन की पेयजल और साफ सफाई व्यवस्था को शिव भक्तों ने सराहा

जशपुरनगर (विश्व परिवार)। मयाली कार्यक्रम में पेयजल एवं साफ सफाई की व्यवस्था 21 मार्च से 27 मार्च तक शिव पुराण महा कथा का आयोजन किया गया। पंडित प्रदीप मिश्रा जी द्वारा शिव पुराण महाकथा का वाचन किया गया। इन सात दिनों में लाखों की संख्या में श्रद्धालुओं की भीड़ उमड़ी। इतनी भीड़ के लिए पेयजल, शौचालय एवं साफ सफाई की व्यवस्था करना अपने आप में एक बड़ी चुनौती थी। इस चुनौती को कलेक्टर रोहित व्यास एवं जिला सीईओ अभिषेक कुमार के मार्गदर्शन में जिला प्रशासन ने बड़ी बखूबी से व्यवस्थित किया। मयाली कार्यक्रम में मुख्य कथा स्थल, भोजन स्थल, पार्किंग स्थल एवं विभिन्न स्थानों पर जिला प्रशासन द्वारा पेयजल एवं शौचालय की व्यवस्था की गई। साफ सफाई के नोडल अधिकारी ओंकार यादव, एसडीएम जशपुर ने विभिन्न स्थानों पर 140 शौचालय स्थापित कराए एवं प्रतिदिन शौचालय की साफ सफाई की मॉनिटरिंग की। साथ ही साथ साफ सफाई के लिए जनपद पंचायतों एवं नगरीय निकायों के अधिकारी कर्मचारी को पाली वार मंच, भोजन स्थल, शौचालयों में ड्यूटी लगा कर व्यवस्थित किया। इस साफ सफाई के लिए एक फीडबैक सिस्टम रखा, जिसमें आम जनता ने जिला प्रशासन के सराहनीय प्रयास की तारीफ़ की। इसके साथ ही लाखों श्रद्धालुओं के लिए 14 स्थानों पर जिला प्रशासन द्वारा पेयजल की व्यवस्था की गई। साथ ही कथा स्थल पर पेयजल व्यवस्था की गई, जिसमें श्रद्धालुओं को पानी उपलब्ध कराया गया।

बोर्ड परीक्षा मूल्यांकन कार्य का कलेक्टर ने किया निरीक्षण

अम्बिकापुर(विश्व परिवार)। कलेक्टर विलास भोसकर ने छत्तीसगढ़ माध्यमिक शिक्षा मंडल रायपुर के अंतर्गत कक्षा 10वीं और 12वीं बोर्ड परीक्षाओं के उत्तर पुस्तिकाओं के मूल्यांकन केंद्र का औचक निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने मूल्यांकन केंद्राधिकारी एवं शिक्षकों से मूल्यांकन कार्य के संबंध में विस्तृत चर्चा की एवं बोर्ड द्वारा जारी दिशा-निर्देशों का कड़ाई से पालन करने के निर्देश दिए। ज्ञात हो कि प्रथम चरण में कक्षा 10वीं के हिन्दी, अंग्रेजी, गणित, विज्ञान, सामाजिक विज्ञान एवं व्यावसायिक अध्ययन विषयों की उत्तर पुस्तिकाओं का मूल्यांकन प्रारंभ हो चुका है। वहीं, कक्षा 12वीं के हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत, इतिहास, भूगोल, राजनीति विज्ञान, भौतिकी, रसायन, लेखा शास्त्र, व्यावसायिक अध्ययन एवं कृषि संकाय विषयों की उत्तर पुस्तिकाओं का मूल्यांकन जारी है। आज कुल 14 मुख्य परीक्षकों, 21 सहायक मुख्य परीक्षकों एवं 170 मूल्यांकनकर्ताओं की उपस्थिति में यह कार्य संचालित हुआ।

आठ वाहनों पर अवैध खनिज परिवहन के प्रकरण हुआ दर्ज

हर्राटिकरा, राजापुर, कुरूवा, खड़गंवाकला, कल्याणपुर, सतपता, जयनगर में वाहनों की कि गई जांच

सूरजपुर ब्यूरो (दैनिक विश्व परिवार)-कलेक्टर एस जयवर्धन के निर्देशों के अनुरूप जिले में अवैध उत्खनन/परिवहन/भण्डारण करने वालों पर अब सख्ती से कार्रवाई की जा रही है। खनिज विभाग द्वारा सूरजपुर जिले अन्तर्गत प्रभावित क्षेत्रों का चिन्हांकन कर विशेष निगरानी की जा रही है। ऐसे क्षेत्रों में निर्मित स्थायी संरचनाओं पुल-पुलिया व एनीकट के आसपास से खनिजों के अवैध उत्खनन/परिवहन/भण्डारण पर खनिज अमला द्वारा सतत जांच की जा रही।

खनिज अमला एवं राजस्व अमला सूरजपुर द्वारा विगत 02 दिनों में जिला सूरजपुर अन्तर्गत ग्राम हर्राटिकरा, राजापुर, कुरूवा, खड़गंवाकला, कल्याणपुर, सतपता, जयनगर में वाहनों के जांच के दौरान कुल 08 वाहनों में अवैध खनिज परिवहन के प्रकरण दर्ज कराये गये है। उपरोक्त सभी वाहनों को जप्त कर पुलिस थाना /चौकी विश्रामपुर, जयनगर लटोरी एवं खड़गंवाकला में सुरक्षार्थ रखा गया है। वित्तीय वर्ष 2024-25 की स्थिति में खनि अमला द्वारा कुल 61 प्रकरणों पर समझौता राशि 1335332.00 रूपये, अवैध खनिज भण्डारण का कुल 01 प्रकरण पर समझौता राशि 129178.00 रूपये और अवैध खनिज उत्खनन के कुल 03 प्रकरणों पर समझौता राशि 330470.00 रूपये कुल राशि 1794880.00 वसूल कर खनिज मद में जमा कराई गई है। शेष 05 प्रकरण प्रक्रियाधीन है।

बाल विवाह मुक्त अभियान अन्तर्गत ''उन्मुखीकरण कार्यशाला जागरूकता अभियान'' का हुआ आयोजन

सूरजपुर ब्यूरो (दैनिक विश्व परिवार)-आकांक्षी ब्लॉक प्रतापपुर में कलेक्टर श्री एस. जयवर्धन एवं मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत श्रीमती नन्दिनी साहू के निर्देशानुसार तथा महिला एवं बाल विकास विभाग के जिला कार्यक्रम अधिकारी श्री रमेश साहू के मार्गदर्शन में जनपद पंचायत प्रतापपुर के सभा कक्ष में बाल विवाह मुक्त सूरजपुर अभियान के तहत एक दिवसीय ''उन्मुखीकरण कार्यशाला जागरूकता अभियान'' आयोजित किया गया। जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में प्रतापपुर जनपद पंचायत अध्यक्ष एवं नगर पंचायत अध्यक्ष प्रतापपुर उपस्थित रहे। कार्यशाला की अध्यक्षता अनुविभागीय अधिकारी (रा.) प्रतापपुर श्रीमती ललिता भगत द्वारा किया गया। कार्यशाला में प्रतिभागी के रूप में विकासखण्ड स्तर के समस्त अधिकारी, कर्मचारी, जनपद पंचायत प्रतापपुर के समस्त जनपद पंचायत सदस्य, महिला एवं बाल विकास से पर्यवेक्षक आंगनबाड़ी कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

कार्यशाला में अनुविभागीय अधिकारी द्वारा अपने वक्तव्य में बताया गया कि ''बाल विवाह'' एक अभिशाप है जिसे हमें अपने क्षेत्र में रोकना है। ''बाल विवाह'' हो जाने पर बालक एवं बालिकाओं अपने शिक्षा एवं अपने अधिकार से वंचित हो जाती है और अपने जीवन को बेहतर नहीं बना पाते है। ''बाल विवाह'' को समय पर रोकने की जिम्मेदारी हम सभी का है यदि हम हमारे समाज, क्षेत्र, गांव एवं मोहल्ले पर ही सम्पन्न होने वाले ''बाल विवाह'' को रोक सकते है, और ''बाल विवाह'' विवाह के अभिशाप से बालक बालिकाओं को सुरक्षित कर सकते है। कार्यशाला में जिला बाल संरक्षण अधिकारी श्री मनोज जायसवाल द्वारा बाल विवाह करने के दुष्परिणामों के संदर्भ पर प्रकाश डाला गया जिसमें कम उम्र में बालिका का विवाह हो जाने पर बालिकों अनेक प्रकार की हिंसा का सामना करना पड़ता है। उन्हे कम उम्र की आयु में ही परिवार की रिती-रिवाज के अनुसार अपने मर्यादा में रहना पड़ता है। वैवाहिक आयु कम हो जाने पर यदि बालिका गर्भधारण करती है तो उसके बच्चें का बहुत खतरा होता है तथा अधित 18 वर्ष से कम आयु वर्ग की बालिकाऐं यदि बच्चें को जन्म देती है तो वह कुपोषित या मरा हुआ पैदा होता है। प्रतापपुर तहसीलदार सालिक राम गुप्ता के द्वारा बताया कि ग्रामीण क्षेत्रों में होने वाले बाल विवाह को रोकने के लिए छत्तीसगढ़ सरकार द्वारा अभियान चलाया जा रहा है। बाल विवाह मुक्त अभियान के लिए प्रदेश भर में युवा बालक बालिकाओं के सशक्तिकरण के सरकार निरन्तर प्रयास कर रही है। प्रतापपुर क्षेत्र को बाल विवाह से मुक्त कराने के लिए हम सब को मिलकर प्रयास करने की आवश्यकता है। जिसके लिए हम सभी को अपने क्षेत्र में बाल विवाह की पूर्णत: रोकथाम करेगें। महिला एवं बाल विकास विभाग से जैनेन्द्र दुबे परामर्शदाता द्वारा ''बाल विवाह'' को पंचायत स्तर पर ही रोकने के लिए प्रत्येक ग्राम पंचायत में पंचायत स्तरीय बाल संरक्षण समिति का गठन किया गया है जिसमें सरपंच अध्यक्ष, एवं सभी पंच, चयनित शिक्षक, सभी आंगनबाड़ी कार्यकर्ता, मितानिन एवं चयनित छात्र छात्राएं सदस्य होते है, तथा पंचायत सचिव को इस समिति का भी सचिव बनाया गया है, इस तरह से पंचायत स्तर पर यह समिति बाल संरक्षण तंत्र के रूप में कार्य करती है। चाइल्ड हेल्पलाइन सूरजपुर के परियोजना समन्वयक कार्तिक मजूमदार द्वारा ''बाल विवाह'' की शिकायत आपके द्वारा चाइल्ड हेल्पलाइन टोल फ्री नम्बर 1098 पर आप किसी भी समय शिकायत कर सकते है। चाइल्ड हेल्पलाइन का कन्ट्रोल रूप सूरजपुर जिला मुख्यालय में स्थित है जिसमें 24 घंटे काल उठाने के लिए उपस्थित रहते है। बाल विकास परियोजना अधिकारी द्वारा सभी से अपील किया गया कि किसी भी परिस्थिति में हम सभी को प्रतापपुर विकासखण्ड को बाल विवाह से मुक्त कराना है तथा एक भी ''बाल विवाह'' अपने विकासखण्ड में नहीं होने देना है। उक्त कार्यालय में उपस्थित सभी अतिथियों एवं प्रतिभागियों को अपने परिवार, समाज एवं क्षेत्र, गांव, मोहल्ले में ''बाल विवाह'' नहीं होने देने हेतु नगर पंचायत अध्यक्ष प्रतापपुर श्रीमती मानती सिंह द्वारा सभी को शपथ दिलाया गया। उक्त कार्यालय की संचालन श्री अमित भारिया विधिक सह परिवीक्षा अधिकारी द्वारा किया गया।

संपादकीय

आर्थिक धोखाधड़ी से सीख जरूरी.....

केंद्रीय वित्त मंत्री सीतारमण ने संसद में बताया कि बीते दस सालों में बैंकों ने 16.35 लाख करोड़ रुपये बट्टे खाते में डाले हैं। गैर-निष्पादित परिसंपत्तियों (एनपीए) को बैंक बट्टे खाते में डालते हैं। आंकड़ों के अनुसार 2014-15 में यह रकम लगभग 59 हजार करोड़ थी, जो 2023-24 में 1.70 लाख करोड़ रुपये से अधिक हो गई। सदन में बड़े कर्जदारों और औद्योगिक घरानों के लिए बट्टे खातों में डाले गए कर्ज के बारे में प्रश्न पूछे गए थे। वित्त मंत्री ने स्पष्ट किया कि बट्टे खाते में डालने से उधारकर्ताओं को देनदारियों में छूट नहीं मिलती। अलबत्ता, यह जरूर कहा कि कर्ज और बट्टे खाते में डाले गए कुल एनपीए का वषर्वार ब्योरा रखा जाता है। यह राशि बट्टे खाते में डाली गई कुल राशि का लगभग 57त्न है। हालांकि कंपनियों के नाम पर आरबीआई अधिनियम, 1934 की धारा 45ई के तहत उधारकर्ता का खुलासा निषिद्ध है। लेकिन बैंकों की तरफ से देय राशि की वसूली के संबंध में उधारकर्ताओं को लगातार फोन किया जाता है, और पत्र/ईमेल भी भेजे जाते हैं। राशि के आधार पर बैंक कॉरपोरेट उधारकर्ताओं के दीवालियापन समाधान के लिए कंपनी लॉ न्यायाधिकरण से भी संपर्क करता है। समय-समय पर सरकार के पक्षपाती रवैये पर ऋणमाफी को लेकर आरोप भी लगते रहते हैं जबकि इसकी तुलना में 2008 में यूपीए सरकार द्वारा मात्र 60 हजार करोड़ रुपये की कृषि माफी से की जा सकती है। सोलह लाख करोड़ रुपये से अधिक की राशि मोदी सरकार के कार्यकाल में बट्टे खाते में डाली गई, जो साल-दर-साल बढ़ती नजर आ रही है। सिर्फ बैंकों के बही-खातों को दुरुस्त रखने या मोटी राशि बट्टे खातों में छिपाने से अर्थव्यवस्था प्रधानमंत्री के दावों पर खरी नहीं उतर सकती। जैसा कि सीतारमण ने स्वीकारा भी कि ऋण की देनदारी बनी रहती है, मगर सरकार को सख्त नियम लागू करने में देर नहीं करनी चाहिए। असल सवाल है कि इस विशाल धनराशि के बट्टे खाते में डाले जाने का नुकसान किसको उठाना होगा। बैंकों पर ठीकरा फोड़ना मात्र मन-बहलाव है क्योंकि वे तो धन-प्रबंधक भर हैं। उद्योगपतियों की आर्थिक आपराधिक गतिविधियों का खमियाजा अंततः देश को भुगतना पड़ता है। बड़े औद्योगिक घरानों का पक्ष लेने और उनकी ऋणमाफी से सरकार जमाकर्ताओं को ज्यादा देर धोखा नहीं दे सकती।

कचरा-कचरा जिंदगी,समस्या और समाधान

कुलभूषण उपमन्यु

एकमुखी समाधान से काम नहीं चलेगा। स्थानीय स्थितियों के अनुसार विविध प्रकार की तकनीकों का प्रयोग करना पड़ेगा। इसके लिए प्लास्टिक बनाने और प्लास्टिक में पैक सामान बेचने वाली कंपनियों को भी जिम्मेदार ठहराया जाना चाहिए। उन्हें नवाचार के लिए फंड खड़ा करना चाहिए देवभूमि हिमाचल, जिसका नाम आते ही मन में एक चित्र उभरता है। निर्मल जल, स्वच्छ वायु, सुंदर चरागाह, चंहु ओर फैली हरितिमा, ऊंचे दर्रे, हिमाच्छादित गिरि शिखर, भौगोलिक विविधता, कल-कल बहती नदियां, समृद्ध वन एवं वन्य जीवन, आधुनिक आवागमन साधन, पर्याप्त आवास सुविधाएं, अनेक धार्मिक स्थल, रमणीय स्थल और सहयोगी स्वभाव के पर्वतवासी समुदाय, यानी पर्यटन के लिए आदर्श एवं सुरक्षित क्षेत्र। नि:संदेह हिमाचल ऐसा ही है। किंतु पर्यटन के साथ-साथ सूखे कचरे का भी विस्तार होता जा रहा है, जो हिमाचल के आदर्श, सौंदर्यपूर्ण प्राकृतिक परिदृश्य को ग्रसित करता जा रहा है। जगह-जगह कचरे के ढेर देख कर आदमी असहाय महसूस करने लगता है। स्वच्छता अभियान के चलते बड़े पैमाने पर शौचालय निर्माण का कार्य सफलतापूर्वक किया गया, जिसका परिणाम भी सुखद हुआ। किंतु सूखे कचरे के निष्पादन की दिशा में हालात दिन-प्रतिदिन खराब ही होते जा रहे हैं। क्या शहर और क्या गांव। शहरों से कचरा उठा कर डंपिंग स्थलों तक पूरा जा नहीं पाता। जो जा पाता है, उसके उपचार की व्यवस्थाएं अपर्याप्त हैं। सबसे ज्यादा समस्या प्लास्टिक कचरे से पैदा हो रही है। वैसे तो यह सार्वभौमिक समस्या बन गई है, किंतु पर्वतीय क्षेत्रों के लिए तो यहां की पर्यटन पर आधारित आजीविका के लिए ही खतरा पैदा हो गया है। इस समय दो करोड़ के लगभग पर्यटक वर्षभर में आते हैं। यानी यहां की जनसंख्या से तीन गुणा। सरकार इस संख्या को पांच करोड़ करना चाहती है। आर्थिक दृष्टि से यह आजीविका और सरकारी आय के लिए लाभप्रद ही सिद्ध होने वाला है। किंतु पर्यटन अपने साथ अनेक समस्याएं और प्रकृति पर दबाव भी लाता है। इनमें से कचरे की मात्रा में बढ़ोतरी भी अवश्यंभावी समस्या है। वर्तमान कचरा प्रबंधन की स्थिति देख कर लगता है कि हम आने वाले दबाव को कैसे झेल पाएंगे, जबकि वर्तमान स्थिति को ही हम संभालने में असमर्थ सिद्ध हो रहे हैं। शहरों में भी कचरा

जगह-जगह खुले में जलाने के दृश्य देखे जा सकते हैं। यहां तक कि कचरा निष्पादन स्थलों में भी कचरा जलाया जाता है। यह सीधा बीमारी को निमंत्रण है। गांव की तो हालत और भी खराब है। आजकल ज्यादातर दैनिक जरूरतों के सामान पैकिंग में ही आते हैं। कुरकुरे, नमकीन, चिप्स, चॉकलेट, करियाने का सामान, दूध, दही, सब प्लास्टिक में ही पैक होकर आ रहा है। सिंगल यूज प्लास्टिक पर पाबंदी के बावजूद यह सब पैकिंग का कचरा तो आ ही रहा है, इसके साथ सब्जियों का बाहरी राज्यों से जो आयात हो रहा है, वह ज्यादातर प्लास्टिक की पन्नियों में ही हो रहा है। इस तरह कचरे के अंबार तो बढ़ते ही जा रहे हैं। फिर चिकित्सा से जुड़ी सामग्री, बिजली के बल्ब, बैटरियां, इलेक्ट्रोनिक सामान शहरों से लेकर गांव तक चारों ओर फैलते जा रहे हैं। खेत-खलिहान, कूहलें, वन क्षेत्र कचरे की चपेट में हैं। जब तक कोई निश्चित व्यवस्था खड़ी नहीं होती, तब तक लोगों को भी दोषी नहीं ठहराया जा सकता, क्योंकि विकल्प देकर ही सख्ती भी की जा सकती है। उसके बिना तो लोग भी मजबूरी में गैरजिम्मेदार हो जाते हैं। हिमाचल में प्रतिदिन 370 मीट्रिक टन सूखा कचरा पैदा होता है, जिसके लगातार बढ़ते जाने की संभावना है। शहरों में कम से कम कचरा एकत्र करने की व्यवस्थाएं तो हैं, आगे उसका निष्पादन कैसे हो, यही समस्या आंशिक रूप से है। गांव की तो हालत और भी बुरी है। वहां तो कचरा एकत्रित करने की बुनियादी व्यवस्थाएं ही नहीं हैं। प्लास्टिक तो सब जगह पहुंच गया है। गांव में पहले तो केवल जैविक कचरा ही होता था, जिसका खाद बना लो या जला कर भी उतनी हानिकारक गैसें नहीं निकलती थीं। अब गांववासी उसी पुरानी सोच के साथ चल कर कचरे की समस्या से पार नहीं पा सकते। अत: गांव में पंचायतों के माध्यम से कचरा प्रबंधन की व्यवस्था बनानी पड़ेगी। पालमपुर की आईमा पंचायत की बहुप्रचारित कचरा प्रबंधन व्यवस्था भी अब बंद पड़ गई है। उसका अध्ययन करके व्यवस्था बनानी पड़ेगी। मोटे तौर पर हर घर से महीने में एक बार कम से कम कचरा एकत्रित करने की व्यवस्था की जा सकती है, जिसके लिए पंचायत उपयुक्त राशि निर्धारित कर सकती है जो हर परिवार महीने के अंत में स्वयं कचरा इकठ्ठा करने वाले कार्यकर्ता को दे सकता है। पंचायतों में अधिकांश जगह कचरा एकत्रित करने के लिए स्टोर बना दिए गए हैं। अब उनके प्रयोग करने की ओर ध्यान देना होगा। गांव में जैविक कचरा उठाने की जरूरत नहीं है। उसका खाद बनाने के लिए उपयोग किया जा सकता है। प्लास्टिक में भी मोटा प्लास्टिक कबाड़ी को बेचा जा सकता है। ठंडे की बोतलें भी बिक जाती हैं। उनके लिए केवल सख्ती से जागरूक करने की जरूरत है। अगली चुनौती एकत्रित किए गए कचरे के निष्पादन की है। इसके लिए तो सरकार को दीर्घकालीन योजना बना कर काम करना चाहिए और उसके क्रियान्वयन के लिए हर स्तर पर पर्याप्त आर्थिक व्यवस्था करनी होगी। तकनीकी व्यवस्था अगली चुनौती है। नई-नई खोजें हो रही हैं। स्वच्छता अभियान के चलते बड़े पैमाने पर शौचालय निर्माण का कार्य सफलतापूर्वक किया गया, जिसका परिणाम भी सुखद हुआ। किंतु सूखे कचरे के निष्पादन की दिशा में हालात दिन-प्रतिदिन खराब ही होते जा रहे हैं। क्या शहर और क्या गांव। शहरों से कचरा उठा कर डंपिंग स्थलों तक पूरा जा नहीं पाता। जो जा पाता है, उसके उपचार की व्यवस्थाएं अपर्याप्त हैं। सबसे ज्यादा समस्या प्लास्टिक कचरे से पैदा हो रही है। वैसे तो यह सार्वभौमिक समस्या बन गई है, किंतु पर्वतीय क्षेत्रों के लिए तो यहां की पर्यटन पर आधारित आजीविका के लिए ही खतरा पैदा हो गया है। इस समय दो करोड़ के लगभग पर्यटक वर्षभर में आते हैं। यानी यहां की जनसंख्या से तीन गुणा। सरकार इस संख्या को पांच करोड़ करना चाहती है। आर्थिक दृष्टि से यह आजीविका और सरकारी आय के लिए लाभप्रद ही सिद्ध होने वाला है। किंतु पर्यटन अपने साथ अनेक समस्याएं और प्रकृति पर दबाव भी लाता है। इनमें से कचरे की मात्रा में बढ़ोतरी भी अवश्यंभावी समस्या है। वर्तमान कचरा प्रबंधन की स्थिति देख कर लगता है कि हम आने वाले दबाव को कैसे झेल पाएंगे, जबकि वर्तमान स्थिति को ही हम संभालने में असमर्थ सिद्ध हो रहे हैं। उनका उपयोग किया जाना चाहिए। एकमुखी समाधान से काम नहीं चलेगा। स्थानीय स्थितियों के अनुसार विविध प्रकार की तकनीकों का प्रयोग करना पड़ेगा। इसके लिए प्लास्टिक बनाने और प्लास्टिक में पैक सामान बेचने वाली कंपनियों को भी जिम्मेदार ठहराया जाना चाहिए। कम से कम उन्हें प्लास्टिक निष्पादन के लिए नई-नई तकनीकों की खोज और नवाचार के लिए फंड खड़ा करने के लिए जिम्मेदार बनाया जाना चाहिए। 'प्रदूषण फैलाने वाला ही भरपाई करे', यह तो न्यायालय द्वारा स्थापित सिद्धांत है। किंतु लागू तो नहीं हो रहा है। इसके लागू होने से सरकार पर अतिरिक्त बोझ भी नहीं पड़ेगा। किंतु इन दीर्घकालीन उपायों को लागू करते हुए तात्कालिक उपायों की ओर भी ध्यान देना जरूरी है।

, वरना पर्वतीय राज्यों की हालत खराब होने वाली है। यहां की हवा, पानी, और पर्यटकों को आकर्षित करने वाली सब प्राकृतिक देनें जल्द ही कचरे की भेंट चढने वाली हैं।

आलेख

तेजी से बढ़ रही मोटापे की समस्याअमित बैजनाथ गर्ग

हाल में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने मन की बात में देश-दुनिया में तेजी से बढ़ रही मोटापे की समस्या का जिक्र किया। उन्होंने कहा कि खाने में ऐसी चीजों का प्रयोग मत कीजिए जिनसे मोटापा बढ़े। इनकी जगह शुद्ध सात्विक चीजों का सेवन करें। उन्होंने कहा कि स्वस्थ राष्ट्र बनाने के लिए मोटापे की समस्या से निपटना होगा। मोटापे से निजात पाना व्यक्तिगत समस्या नहीं है, बल्कि यह परिवार के प्रति भी हमारी जिम्मेदारी बनती है। उन्होंने खाने में तेल का उपयोग कम करने की सलाह देते हुए कहा कि यह कई बीमारियों की वजह बनता है। इससे मोटापे के साथ ही डायबिटीज, बीपी और दिल की बीमारियों का खतरा बना रहता है, इसलिए हमें तेल के अधिक प्रयोग से बचना जरूरी है। पीएम मोदी ने पहले भी मोटापा कम करने के लिए कहा है। इससे एक बार फिर महामारी बनती मोटापे की बीमारी पर देश भर में चर्चा छिड़ गई है। दुनिया भर के लिए मोटापा कितना गंभीर रोग बनता जा रहा है, इसका अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि दुनिया में हर आठ में से एक व्यक्ति मोटापे का शिकार है। स्वास्थ्य को लेकर जारी कई रिपोर्ट तस्दीक करती हैं कि भारत में भी मोटापा तेजी से पैर पसार रहा है। रिपोर्ट कहती हैं कि महिलाओं में पुरु षों के मुकाबले मोटापा अधिक है। महिलाओं में मोटापे की दर 9.8 फीसद है वहीं पुरु षों में यह 5.4 फीसद है, जबकि लड़कियों में मोटापे की दर 3.1 फीसद और लड़कों में 3.9 फीसद है। बच्चों में भी मोटापा चार गुना तक बढ़ गया है। भारत में 40 प्रतिशत महिलाएं और 12 प्रतिशत पुरु ष पेट से जुड़े मोटापे से ग्रस्त हैं। शहरी क्षेत्रों में मोटापा ग्रामीण क्षेत्रों से ज्यादा है। दक्षिण भारत में मोटापा अधिक है। केरल, तमिलनाडु, पंजाब और दिल्ली में मोटापे की दर ज्यादा है। मध्य प्रदेश और झारखंड में मोटापे की दर कम है। विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) के मुताबिक, 2022 में एक अरब से ज्यादा लोग इस समस्या से जूझ रहे थे। अध्ययन कहता है कि 2022 में अधिक वजन वाले वयस्कों की संख्या करीब 43 फीसद थी। यूरोप में अधिक वजन या मोटापा लोगों की मृत्यु और विकलांगता के प्रमुख कारणों में से एक है। एक अनुमान के मुताबिक, मोटापे के चलते पूरी दुनिया में हर वर्ष 12 लाख से अधिक लोगों की मौत हो जाती है। डब्ल्यूएचओ का कहना है कि अधिक वजन वाले और मोटापा ग्रस्त लोग कोविड महामारी के परिणामों से अलग-अलग रूप से प्रभावित हुए हैं, जिन्हें अक्सर अधिक गंभीर बीमारी और अन्य जटिलताओं का सामना करना पड़ रहा है। अधिक वजन या मोटापे को कम से कम 13 विभिन्न प्रकार के कैंसर का कारण माना जाता है, जो पूरे यूरोप में सालाना कैंसर के कम से कम दो लाख नये मामलों के लिए सीधे तौर पर जिम्मेदार हो सकता है। असल में मोटापे को एक जटिल दीर्घकालिक बीमारी समझा जाता है, जो संकट बन गई है। यह ऐसी महामारी के रूप में उभर रहा है, जिसमें पिछले कुछ दशकों में भारी वृद्धि हुई है। द लैंसेट में प्रकाशित एक अध्ययन के अनुसार, 1990 के बाद से मोटापे की चपेट में आने वाले वयस्कों की संख्या लगभग दोगुनी हो गई है। अध्ययन रिपोर्ट कहती है कि मोटापा कई गैर-संचारी रोगों के खतरे को बढ़ाता है, जिनमें हृदय रोग, टाइप-2 मधुमेह (डायबिटीज) और सांस संबंधी पुरानी बीमारियां शामिल हैं। कई देशों में मोटापा सेहतमंद बनाम गैर-सेहतमंद भोजन का मामला भी बन गया है। कई बार सेहतमंद भोजन की कीमत ज्यादा होने या उपलब्ध न होने पर भी लोग ऐसे भोजन को प्राथमिकता देते हैं, जो मोटापा बढ़ा सकते हैं। एक्सपर्ट कहते हैं कि वे मोटापे के आंकड़े को वर्षो से देखते रहे हैं। मोटापे की बढ़ती रफ्तार से हैरान हैं। कुछ एक्सपर्ट मोटापे को दो नई कैटेगरी में बांटने की वकालत भी करते हैं। पहली, क्लीनिकल मोटापा। इसका मतलब है मोटापे की वजह से हमारे शरीर का कोई अंग ठीक से काम नहीं कर रहा है, जैसे कि दिल, किडनी या लिवर। दूसरी है प्री-क्लीनिकल मोटापे की श्रेणी। इसका मतलब है कि अभी तक कोई बीमारी नहीं हुई है, लेकिन मोटापे की वजह से बीमार होने का खतरा बढ़ गया है। तेल मोटापे की सबसे बड़ी वजह है। अगर तेल के इस्तेमाल में धीरे-धीरे कटौती करेंगे तो वजन घटेगा। मोटापे से बचने के लिए आहार और जीवनशैली में बदलाव करें। रोजाना जितनी कैलोरी बर्न करते हैं, उससे ज्यादा कैलोरी न खाएं।

गहने कोहरे और पाले से कोकून में नमी..

पंकज चतुर्वेदी

तमिलनाडु का धरमपुर रेशम के लिए मशहूर है। यहां सालाना लगभग 17 लाख टन रेशम कोकून की पैदावार होती है। पिछले कुछ हफ्तों में जिले भर में कोहरे और खराब जलवायु परिस्थितियों ने ऐसा डेरा डाला कि कोकून की कीमत में भारी वृद्धि हो गई। फरवरी के दूसरे हफ्ते में इसके दाम 857 प्रति किग्रा. दर्ज किए गए जबकि इस समय औसत कीमत 520 रु पये से अधिक नहीं होती। आम तौर पर इस समय इलाके का मौसम खुला रहता है लेकिन इस बार गहने कोहरे और पाले से कोकून में नमी आ गई। इसके चलते अच्छी गुणवत्ता वाले रेशम का संकट दिखने लगा और दाम चढ़ गए। बदलते मौसम का असर शहतूत के पेड़ों पर भी देखा गया। विदित हो रेशम के कीड़ों का आहार शहतूत ही होता है। मंडी में आवक काम और दाम ज्यादा होने से बुनकर भी परेशान हैं। धर्मपुरी का रेशम तो एक उदाहरण भर है कि किस तरह समय से पहले गर्मी आने का व्यापक कुप्रभाव समाज पर पड़ रहा है। प्रवासी पक्षियों का पहले लौटना, सड़क के कुत्ते और अन्य जानवरों के व्यवहार में अचानक उग्रता और रबी की फसल की पौष्टिकता में कमी, कुछ और ऐसे कुप्रभाव हैं, जो जलवायु परिवर्तन के कारण हमारे यहां दिखने लगे हैं। इस साल इतिहास में तीसरा सबसे गर्म जनवरी और फरवरी रहा। जनवरी में देश में बारिश 70त्न कम रही। पहाड़ी राज्यों में बारिश और बर्फबारी 80त्न तक कम रही। फरवरी के आखिरी हफ्ते में विदर्भ से ले कर तेलंगाना तक 40 की तरफ दौड़ते तापमान ने लू का अहसास करवा दिया। मार्च के दूसरे हफ्ते में ऐन होली पर बरसात और ओलावृष्टि ने फसल का नुकसान दुगुना कर दिया। उसके बाद फिर गर्मी तेवर दिखा रही है। मौसम विभाग के मुताबिक अगले तीन हफ्तों में देश के अधिकांश हिस्सों में औसत तापमान सामान्य से अधिक रहने की संभावना है। उत्तराखंड के पवित्र तीर्थस्थल केदारनाथ में इस वर्ष पिछले 10 वर्षो में सबसे कम बर्फबारी दर्ज की गई है। इस बार सर्दियों में यहां सिर्फ दो फीट बर्फबारी हुई है, जो बीते वर्षो के मुकाबले काफी कम है। वैज्ञानिकों और विशेषज्ञों ने इस पर चिंता जताई है, क्योंकि इससे न केवल क्षेत्र की पारिस्थितिकी प्रभावित होगी, बल्कि जल स्रोतों पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है। बीते 10 वर्षो में केदारनाथ में बर्फबारी का पैटर्न बदलता दिखा है। जहां 2015 में आठ फीट बर्फ गिरी थी, वहीं 2025 में यह घट कर मात्र दो फीट रह गई है। कम बर्फबारी और जल्द गर्मी से ग्लेशियर जल्दी पिघलेंगे और गंगा-यमुना जैसी नदियों का जल प्रवाह प्रभावित होगा। केदारनाथ क्षेत्र में पाई जाने वाली दुर्लभ वनस्पतियां और वृक्ष कम बर्फबारी के कारण प्रभावित हो सकते हैं। इससे इस क्षेत्र की पारिस्थितिकी पर नकारात्मक असर पड़ेगा। कम बर्फबारी का मतलब है कि गर्मियों में जल स्रोतों में कमी आएगी जिससे पानी की किल्लत हो सकती है। जलवायु परिवर्तन का असर किस कदर पहाड़ों पर है, इसका उदाहरण इन दिनों धौलछीना के इर्द-गिर्द और बिनसर अभयारण्य के जंगलों में साफ दिख रहा है। पहाड़ में अक्सर फरवरी के दूसरे पखवाड़े से मार्च में खिलने वाला बुरांस का फूल इस बार जनवरी में ही खिल गया था। इससे लोग हैरत में हैं और मौसम चक्र में परिवर्तन को इसकी वजह मानते हैं। जंगलों में कई जगह काफल फरवरी में ही पकने लगा था। आम तौर पर पहाड़ के जंगलों में बुरांस का फूल 15 मार्च के बाद भी खिलता है। इसके बाद ही मार्च के दूसरे पखवाड़े और अप्रैल में काफल पकता है। मगर अब प्रकृति अपना अलग रंग दिखा रही है। हैरान करने वाली बात यह है कि इस बार जनवरी के पहले पखवाड़े से ही धौलछीना के आसपास तथा बिनसर अभयारण्य के जंगलों में बुरांस खिल गया। ठीक इसी तरह से हिमाचल प्रदेश में भी बुरांस और काफल समय से बहुत पहले जनवरी में फल-फूल गए। जलवायु बदलाव का असर असम के धुबरी जिले में अजीब ही तरह से देखा जा रहा है। यहां बहने वाली ब्रह्मपुत्र नदी में अचानक हिल्सा मछलियों की संख्या बढ़ती देखी जा रही है, जो जनवरी-फरवरी के महीनों में अस्वाभाविक है। वास्तव में इसका समय मई, जून, जुलाई और अगस्त होता है। विदित हो कि हिल्सा मछलियां समुद्र के मुहाने से अक्टूबर में ब्रह्मपुत्र नदी में अंडे देने के लिए बंगाल की खाड़ी से आती हैं। हालांकि, मौसम और प्रकृति में अस्वाभाविक परिवर्तन और ब्रह्मपुत्र नदी के धीरे-धीरे सूखने के कारण हिल्सा मछलियां इस साल जनवरी के अंत से नदी में चढ़ने लगी हैं। पर्याप्त ठंड न पड़ने, जाड़े में होने वाली बरसात के न आने और फरवरी में ही गर्मी का असर मध्य भारत के खेतों में रबी की फसल पर कीट के रूप में सामने आ रहा है। विशेष रूप से गेहूं में चंडवा, सरसों, मटर और चना की फसलों में माहू और इल्ली का प्रकोप बढ़ गया है, जिसके कारण इन फसलों में फूल गिरने लगे हैं, और किसानों को भारी नुकसान हो रहा है। विशेषज्ञों का मानना है कि इन कीटों के कारण आगामी दिनों में चना, मटर और सरसों का उत्पादन 30 प्रतिशत तक घट सकता है। सब्जी भी गर्मी के प्रकोप से बची नहीं रही। मिर्च, टमाटर, बैंगन, भिंडी जैसी सब्जी फसलों में भी माहू का प्रकोप बढ़ गया है। शाम होते ही अब खेत के करीब की सड़कों से निकलना मुश्किल है क्योंकि वाहनों की रोशनी होते ही माहू कीट के घने झुंड आ जाते हैं। कीट से बचने के लिए यदि किसान कीटनाशक का इस्तेमाल करता है, तो एक तो लागत बढ़ती है, दूसरा, गुणवत्ता भी प्रभावित होती है। कश्मीर में गर्मी के कारण सेब फल से ले कर केसर तक की खेती बुरी तरह प्रभावित हुई हैं।

देश में घटती महंगाई से बढ़ेगी आर्थिकी

डा. जयंतीलाल भंडारी

यद्यपि खाद्य कीमतों में तेज गिरावट और कम मुख्य मुद्रास्फीति के कारण नीतिगत दरों में कटौती की गुंजाइश बनती है, किन्तु घटती महंगाई और बढ़ते खाद्य उत्पादन को देखकर सरकार को कृषि क्षेत्र में लंबे समय से पसरी हुई चुनौतियों से नजर हटाने से बचना होगा। मौसम की अतिकारी घटनाओं तथा जलवायु परिवर्तन से निर्मित होने वाली समस्याओं पर लगातार ध्यान देना होगा। किसानों को मिलने वाली कीमत और उपभोक्ताओं द्वारा चुकाए जाने वाले मूल्य में भारी अंतर, भंडारण तथा गोदामों की कमी के कारण फसलों की बरबादी, खेत और मंडियों के बीच दूरी और खस्ताहाल सडकों जैसी रुकावटों को दूर करने पर निरंतर ध्यान देना होगा हाल ही में राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय (एनएसओ) के द्वारा जारी आंकड़ों के अनुसार भारत की खुदरा मुद्रास्फीति फरवरी 2025 में घटकर सात महीने के निचले स्तर 3.61 प्रतिशत पर आ गई, जबकि खाद्य मुद्रास्फीति लगभग दो वर्षों में पहली बार 4 प्रतिशत से नीचे आ गई है। यह महत्वपूर्ण है कि खुदरा मुद्राफीति में पिछले साल अक्टूबर के बाद से ही गिरावट आ रही है। अक्टूबर महीने में यह 10.87 फीसदी के स्तर पर थी। ऐसे में समग्र मुद्रास्फीति दर भी कुछ समय तक ऊंची बनी रही और भारतीय रिजर्व बैंक के लिए नीतिगत जटिलताओं का परिदृश्य निर्मित हुआ था। उल्लेखनीय है कि रिजर्व बैंक महंगाई और ब्याज दर में संतुलन बनाए रखने की नीति पर लगातार आगे बढ़ा और फिर उपयुक्त पाए जाने पर विगत 7 फरवरी को आरबीआई के गवर्नर संजय मल्होत्रा ने रेपो रेट में 0.25 फीसदी की कटौती कर इसे 6.25 फीसदी किया है। अब महंगाई और घटने से भारतीय रिजर्व बैंक की आगामी अप्रैल 2025 बैठक में ब्याज दरों में अधिक कटौती की उम्मीदें मजबूत हो गई हैं। इतना ही नहीं, इस समय इस बात के भी संकेत उभरकर दिखाई दे रहे हैं कि अर्थव्यवस्था में मांग और खपत बढ़ाने के लिए वित्त मंत्रालय इसी वर्ष 2025 में लघु बचत योजनाओं की ब्याज दरों को घटा सकता है। बचत योजनाओं की ब्याज दरों में कटौती से लोग धन खर्च करने के लिए आगे बढ़ेंगे। इसमें कोई मत नहीं हैं कि ब्याज दरें अधिक होने से उपभोक्ता कर्ज लेने से पीछे हट रहे थे और कर्ज की अधिक लागत से उद्यमी भी विस्तार की योजनाओं के लिए तत्परता नहीं दिखा रहे थे। ऐसे में नए फैसलों से लोगों की क्रयशक्ति और खपत बढने से विकास दर

को गति दी जा सकेगी। इसमें कोई दो मत नहीं हैं कि लंबे समय तक ऊंचे स्तर पर रहने के बाद देश में खुदरा मुद्रास्फीति के काफी नीचे आने के पीछे एक प्रमुख कारण बेहतर कृषि उत्पादन भी है। हाल ही में जारी 2024-25 में प्रमुख फसलों के उत्पादन के दूसरे अग्रिम अनुमान के मुताबिक खरीफ में पिछले साल से 7.9 फीसदी अधिक खाद्यान्न उत्पादन होने का अनुमान है और रबी की खाद्यान्न उपज में भी 6 फीसदी बढ़ोतरी की संभावना है। इससे गेहूं, चावल और मक्के की फसल का उत्पादन रिकॉर्ड स्तर पर पहुंच सकता है। साथ ही अन्य खाद्यान्नों तथा मोटे अनाज, तुअर और चना का उत्पादन भी रिकॉर्ड ऊंचाई पर पहुंच सकता है। इसी तरह फल और सब्जी उत्पादन में भी तेज वृद्धि होगी। फल और सब्जी उत्पादन के मद्देनजर भारत दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा देश है। अनुमान के मुताबिक 2024-25 में बागवानी फसल उत्पादन 36.21 करोड़ टन रह सकता है, जो 2023-24 की तुलना में 2.07 फीसदी ज्यादा होगा। इतना ही नहीं, वर्ष 2024-25 की सकल घरेलू उत्पाद में (जीडीपी में) कृषि और संबद्ध क्षेत्रों में 4.6 फीसदी वृद्धि हो सकती है। पिछले साल यह वृद्धि दर 2.7 फीसदी थी। यहां यह उल्लेखनीय है कि भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) की फरवरी 2025 की बुलेटिन और स्टेट बैंक ऑफ इंडिया (एसबीआई) की रिसर्च रिपोर्ट 2025 में एकमत से कहा गया है कि अब देश में आर्थिक गतिविधियों में तेजी के जोरदार संकेत विकास दर को बढ़ाने वाले सकारात्मक संदेश हैं। सरकार के पूंजीगत खर्च बढने, ग्रामीण मांग के साथ-साथ शहरी मांग में सुधार तथा महंगाई में कमी से अर्थव्यवस्था को बल मिल रहा है। आरबीआई के द्वारा जारी बुलेटिन में यह कहा गया है कि विकास संकेतक मसलन वाहन की बिक्री, हवाई यातायात, इस्पात खपत आदि देश की गतिविधियों में वृद्धि का संकेत दे रहे हैं और इन गतिविधियों में आगे भी तेजी की संभावना है। कहा गया है कि विकास के चार इंजन कृषि. एमएसएमई, निवेश और निर्यात को बढ़ावा देने को लेकर एक अप्रैल से प्रभावी होने वाले वर्ष 2025-26 बजट में किए उपायों से भारतीय अर्थव्यवस्था की मध्यम अवधि की विकास संभावनाओं को बढ़ावा मिलने की उम्मीद है। कृषि क्षेत्र के मजबूत प्रदर्शन से ग्रामीण मांग को और बढ़ावा मिलने की उम्मीद है। वित्त वर्ष 2025-26 के केंद्रीय बजट में घोषित आयकर राहत के बीच मुद्रास्फीति में गिरावट के साथ खर्च योग्य आय में वृद्धि को देखते हुए शहरी मांग में भी बड़े सुधार की उम्मीद है। वित्तमंत्री सीतारमण ने जिस तरह आयकर के नए टैक्स रिजीम की व्यवस्थाओं के तहत करदाताओं को अभूतपूर्व राहतों से लाभान्वित किया गया है।

धातु का कटोरा तो भर सकता है लेकिन 'मन' का कटोरा कभी नहीं भर सकता : मुनि श्री प्रमाण सागर जी महाराज

लालघाटी (विश्व परिवार)। 'मन' जिसमें अनंत प्यास है, जो हमें प्रतिपल दौड़ाता, भटकाता, उलझाता और तड़पाता है, धातु का कटोरा तो भर सकता है लेकिन 'मन' का कटोरा पूरी जिंदगी भी खप जाऐ, तो भी वह कभी नहीं भर सकता। उपरोक्त उद्‌गार मुनि श्री प्रमाण सागर जी महाराज ने नंदीश्वर जिनालय लालघाटी भोपाल में प्रात:कालीन धर्मसभा में व्यक्त किये। मुनि श्री ने कहा कि मन का स्वभाव बड़ा चंचल है, जो उसे अच्छा लगता है उसके पीछे पागल हो जाता है, इंद्रिय विषय की लालसा उसे तड़पाती है, तथा अंदर के विवेक को झंझकोर कर पागल कर देती है। मुनि श्री ने कहा कि यदि कोई बच्चा एक बार गरम पानी या दूध से जल जाता है, तो वह उसके निकट नहीं जाता लेकिन मनुष्य का 'मन' तो ऐसा है कि हाथों में अंगार लिये में पूंछता रहा कोई मुझे इन अंगारों की तासीर बता दे। मुनि श्री ने कहा कि प्रतिदिन कोई न कोई घटना घटती ही रहती है बहूत कम लोग है जो घटित प्रसंगों से सबक लेते है मुनि श्री ने कहा कि व्यापार में मान अपमान हांनी लाभ में हमेशा मुस्कुराते रहो, मुनि श्री ने चार बातें:-मन -मनन मौन- मुस्कान पर बात करते हुये कहा कि कौनसी बात हेय है, कौनसी बात उपादेय 'मन' का जब कौलाहल शांत हो जाता है, तो व्यक्ति आनंद से भर उठता है, दो के बीच में झगड़ा हो तो बीच में नहीं बोलना मुनि श्री ने कहा कि एक जगह झगड़ा हो रहा था तो एक आदमी ने दूसरे को कहा कि एक घूंसा दूंगा तो चौसठ बाहर होंगे, तो एक व्यक्ती से रहा नहीं गया और कहा कि दांत तो 32 ही होते है तो 64 किसके बाहर करोगे? तो उसने जबाब दिया हमें मालुम था कि आप जरुर बोलोगे 32 आपके और 32 उसके? मुनि श्री ने कहा कि नीति है कि जंहा पर जिस बात से झगड़ा हो वंहा पर मौन हो जाओ, भोजन करो तो मौन हो जाओ जितनी देर मंदिर में रहो पूजा पाठ करो प्रवचन सुनो तो मौन के साथ एकाग्रता के साथ सुनो बात मत करो।मुनि श्री ने कहा कि अपनी सोच को अच्छा रखोगे तो चार लोग आपके साथ खड़े नजर आऐंगे मन का मौन आ जाऐ तो जीवन में मुस्कान आ जाऐ, भगवान की मुद्रा को देख लो परम मुस्कान नजर आती है, मन के कोलाहल का शांत होंना ही मौन है जब हम अच्छी सोच के साथ कोई कदम बड़ाते है तो हमारा जीवन वेहतर बन पाता है। मुनिसंघ के प्रवक्ता अविनाश जैन विद्यावाणी ने बताया इस अवसर पर मुनि श्री निर्वेग सागर जी महाराज एवं मुनि श्री संधान सागर महाराज सहित समस्त क्षुल्लक उपस्थित थे। प्रतिदिन प्रात: 8:30 से धर्मसभा एवं सांयकाल 6:25 से शंकासमाधान का कार्यक्रम संपन्न हो रहा है। **-अविनाश जैन**

भगवान महावीर के यशोगान करते निकली भव्य शोभायात्रा, महावीर जन्म कल्याणक के उपलक्ष्य में सकल जैन समाज का आयोजन

रायपुर (विश्व परिवार)। वर्तमान शासन नायक और अंतिम तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी के 2624 वें जन्म कल्याणक महोत्सव के अवसर पर रायपुर शहर के सम्पूर्ण जैन समाज द्वारा सामूहिक रूप से 15 दिवसीय पूर्व विविध कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। इसी कड़ी में शुक्रवार को श्री 1008 वासुपूज्य जिनालय से प्रभात फेरी के रूप में भव्य शोभायात्रा निकाली गई।महावीर स्वामी के शासन काल से जुड़े मुख्य पात्रों चंदन बाला सहित चरित्रों को बालक ङ्क बालिकाओं ने वेशभूषा धारण कर मनोभावों को प्रदर्शित किया। वहीं खूबसूरती से सुज्जाजित रथ में भगवान महावीर के जन्म से जुड़ी घटनाओं को प्रस्तुत किया गया।

शोभायात्रा में केसरिया परिधानों से सज्जित महिलाओं और श्वेत कुर्ता पायज़मा में पुरुष वर्ग ने डी डी नगर, गोल चौक, अश्विनी नगर, जगन्नाथ मंदिर होते हुए महावीर के संदेशों और जय जयकारों से मार्ग को गुंजायमान कर दिया 7 पंद्रह दिवसीय प्रभात फेरी के आयोजन में इस फेरी के संयोजक सकल दिगंबर जैन समाज के अध्यक्ष नरेश जैन और विनोद राखेचा थे 7 प्रभात फेरी का समापन जैन कॉलोनी सुंदर नगर में हुआ।

इस कार्यक्रम में नरेश जैन, महावीर जन्म कल्याणक महोत्सव के अध्यक्ष महावीर कोचर, कोषाध्यक्ष वीरेंद्र डागा, अशोक जैन, अभिषेक जैन, आशीष जैन, प्रवीण जैन, राजेश सिंघई, यशवंत जैन, संजय जैन, अनिता काला एवं दिगंबर जैन सेवा समिति, आदिश्वर महिला मंडल सहित समाज के लोग बड़ी तादाद में उपस्थित थे। **-डॉ. मंजूला जैन**

संक्षिप्त समाचार

चरौदा में युवा संगठन ने सार्वजनिक प्याऊ केंद्र का किया शुभारंभ, युवाओं की पहल को सीआरपीएफ ने सराहा

आरंग (विश्व परिवार)। गुरुवार को ग्राम चरौदा में के युवाओं ने भक्त माता कर्मा मंदिर परिसर में सार्वजनिक प्याऊ केंद्र का शुभारंभ किया।इस अवसर पर सीआरपीएफ कैंप भिलाई के कमांडेंट डाक्टर मनीषा गर्ग ने पहुंचकर युवाओं द्वारा सार्वजनिक प्याऊ केंद्र संचालित करने की पहल की सराहना करते हुए कहा प्यासे को पानी पिलाना बहुत ही पुण्य का कार्य है।गर्मी में सभी प्राणियों को ठंडा जल की आवश्यकता होती है। गर्मी में शरीर को स्वस्थ रखने के लिए पर्याप्त जल पीना चाहिए। युवा साहू संगठन के युवाओं ने बताया विगत चार वर्षों से राहगीरों के लिए यहां सार्वजनिक प्याऊ केंद्र का संचालन करते आ रहे हैं। जिसमें प्रमुख रूप से युवा साहू संगठन अध्यक्ष दुलार साहू, सचिव जागेश्वर साहू, गिरिराज साहू, वासुदेव साहू, देवानंद साहू, जितेंद्र साहू, राजीव साहू, भीखम साहू, जगमोहन साहू, तोषण साहू, गौकरण साहू, लोकेश साहू, विष्णु साहू, चंदन साहू घनश्याम साहू, अमित साहू, देवानंद साहू की अहम भूमिका है।इस अवसर पर विष्णु साहू, शिक्षक महेन्द्र कुमार पटेल सहित ग्रामीण उपस्थित थे।

सड़क सुरक्षा एवं प्रवर्तन के विभिन्न महत्वपूर्ण पहलुओं पर कार्यशाला सम्पन्न

रायपुर (विश्व परिवार)। सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्रालय नई दिल्ली द्वारा एशियन परिवहन विकास संस्थान तथा अंतर्विभागीय लीड एजेंसी(सडक सुरक्षा) छत्तीसगढ़ के सहयोग से छत्तीसगढ़ यातायात पुलिस एवं परिवहन विभाग तथा सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्रालय के अधिकारियों को सड़क सुरक्षा एवं प्रवर्तन के विभिन्न पक्ष/विषयों के संबंध में 03 दिवसीय आवासीय प्रशिक्षण कार्यशाला का समापन श्री एस. प्रकाश सचिव सह परिवहन आयुक्त छत्तीसगढ़ ने इंस्टीट्यूट ऑफ ड्रायविंग एण्ड ट्रैफ़िक रिचर्स संस्थान ग्राम तेन्दुआ नवा रायपुर अटल नगर में किया। इस समापन कार्यक्रम के पूर्व आज बेहतर प्रवर्तन के लिये रोड़ एक्सीडेंट डाटा रिकार्डिग एवं विश्लेषण तथा सड़क दुर्घटनाओं की विवेचना एवं नियंत्रण हेतु उठाये जाने वाले उपायों तथा सड़क सुरक्षा के संबंध कानूनी प्रावधानों के संबंध में विस्तार से अवगत कराया गया।

ई-वे बिल छूट को 50,000 रूपये से बढ़ाकर 1,00,000 रूपये तक किये जाने पर अभार

रायपुर (विश्व परिवार)। देश के सबसे बड़े व्यापारिक संगठन कन्फेडरेशन ऑफ ऑल इंडिया ट्रेडर्स (कैट) के चेयरमेन मगेलाल मालू, अमर गिदवानी, प्रदेश अध्यक्ष जितेन्द्र दोशी, कार्यकारी अध्यक्ष विक्रम सिंहदेव, परमानन्द जैन, वाशु माखीजा, महामंत्री सुरिन्द्रर सिंह, कार्यकारी महामंत्री भरत जैन, एवं कोषाध्यक्ष अजय अग्रवाल ने बताया कि आज कन्फेडरेशन ऑफ ऑल इंडिया ट्रेडर्स (कैट) ने मुख्यमंत्री माननीय श्री विष्णुदेव साय जी, वित्तमंत्री माननीय श्री ओ.पी. चौधरी जी एवं आयुक्त, राज्य जीएसटी श्री पुष्पेन्द्र कुमार मीणा जी को ई-वे बिल छूट को 50, 000 रूपये से बढ़ाकर 1, 00, 000 रूपये तक किये जाने पर आभार व्यक्त किया। कन्फेडरेशन ऑफ ऑल इंडिया ट्रेडर्स (कैट) के प्रदेश अध्यक्ष श्री जितेन्द्र दोशी ने बताया कि कैट ने माननीय श्री विष्णुदेव साय जी, माननीय श्री ओ.पी. चौधरी जी एवं श्री पुष्पेन्द्र कुमार मीणा जी को ई-वे बिल छूट को 50, 000 रूपये से बढ़ाकर 1, 00, 000 रूपये तक किये जाने पर आभार व्यक्त किया। श्री दोशी ने आगे बताया कि कन्फेडरेशन ऑफ ऑल इंडिया (कैट) सी.जी. चैप्टर ने द्वारा राज्य बजट 2025 में ई-वे बिल छूट को 50, 000/-(पचास हजार रूपये) से बढ़ाकर 1, 00, 000/- (एक लाख रूपये) तक (कुछ उत्पादो को छोडकर) किया गया है। जिसकी अधिसूचना आज जारी की गई है।

एमएम स्कूल रायपुर में 15 दिवसीय रोबोटिक्स और कोडिंग समर कैम्प का आयोजन

आयोजक- IEEE कलिंगा यूनिवर्सिटी स्टूडेंट ब्रांच एवं भारत ड्रोन सिस्टम

रायपुर (विश्व परिवार)। IEEE कलिंगा यूनिवर्सिटी स्टूडेंट ब्रांच, भारत ड्रोन सिस्टम के सहयोग से, एमएम स्कूल में स्कूली छात्रों के लिए 20 मार्च, 2025 से 5 अप्रैल, 2025 तक रोबोटिक्स और कोडिंग पर 15 दिवसीय समर कैंप का सफलतापूर्वक आयोजन कर रही है। इस समर कैंप का मुख्य उद्देश्य छात्रों को रोबोटिक्स, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, और प्रोग्रामिंग की बुनियादी और उन्नत तकनीकों से अवगत कराना है।

यह अनूठी पहल कक्षा 4 से 8 तक के स्कूली छात्रों के लिए तैयार की गई है, जो उन्हें रोबोटिक्स, प्रोग्रामिंग और ड्रोन तकनीक एम्बेडेड सिस्टम, आईओटी (IoT), और मशीन लर्निंग जैसी उन्नत विषयों पर व्यावहारिक अनुभव प्रदान करती है।

इस समर कैंप का नेतृत्व छत्तीसगढ़ के कलिंगा विश्वविद्यालय, रायपुर के आईक्यूएसी की निदेशक, ढ्ढश्वश्वश्व स्क्क सेक्शन की सचिव; IEEE WIE AG MP सेक्शन की अध्यक्ष; और एजुकेशन सोसाइटी, IEEE MP सेक्शन 2025 की अध्यक्ष डॉ. विजयलक्ष्मी बिरादर कर रही हैं। इसके अतिरिक्त, प्रियांशु सिंह, पीयूष श्रीवास्तव, वेदांत राज, कोडा आयुषी राव और सिम्पी कुमारी सहित उत्साही IEEE छात्र स्वयंसेवकों की एक टीम पूरे कार्यक्रम में छात्रों को सक्रिय रूप से सुविधा प्रदान कर रही है और उनका मार्गदर्शन कर रही है। साथ ही श्री अश्वन साहू और श्री हेमंत साहू ने व्यावहारिक सत्रों के समन्वय में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, जिससे एक सहज और आकर्षक व्यावहारिक शिक्षण अनुभव सुनिश्चित हुआ है।

इस समर कैंप का मुख्य उद्देश्य है- छात्रों को प्रोग्रामिंग और रोबोटिक्स की बुनियादी बातों से परिचित कराना। छात्रों को आधुनिक कोडिंग प्लेटफ़ॉर्म और ऑटोमेशन टूल से परिचित कराना। ड्रोन तकनीक और इसके वास्तविक दुनिया के अनुप्रयोगों के बारे में छात्रों के ज्ञान को बढ़ाना। छात्रों को ऐसे कौशल प्रदान करना जो STEM क्षेत्रों में भविष्य के करियर के लिए आवश्यक हैं।

यह कैंप अनुभवात्मक शिक्षण, आलोचनात्मक सोच और प्रौद्योगिकी-संचालित शिक्षा पर जोर देकर राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 के साथ भी संरेखित है। इसके अतिरिक्त, यह कैंप समग्र शिक्षण अनुभव को प्रोत्साहित करता है, छात्रों को रचनात्मक रूप से सोचने और भारत में शिक्षा को बदलने की नीति के दृष्टिकोण के अनुरूप समस्या-समाधान मानसिकता विकसित करने के लिए सशक्त बनाता है।

एनआईटी रायपुर में आज अविन्या'25 का आयोजन

रायपुर (विश्व परिवार)। राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान (एनआईटी) रायपुर का इनोवेशन सेल (आई-सेल) 29 मार्च 2025 को वार्षिक इनोवेशन इवेंट अविन्या25 की मेजबानी डीडीयु ऑडिटोरियम में करने जा रहा है, जिसमें आकर्षक प्रतियोगिताएं, प्रस्तुतियां, इनोवेशन एक्सपो और इंटरैक्टिव सत्र शामिल हैं, जो छात्रों को अपनी रचनात्मकता दिखाने और इनोवेशन कौशल विकसित करने के लिए एक मंच प्रदान करेगा। यह कार्यक्रम सीडीसी के प्रमुख डॉ. समीर बाजपेयी और आई. सेल के फैकल्टी इन चार्ज डॉ. सौरभ गुप्ता के मार्गदर्शन में आयोजित किया जा रहा है।

अविन्या'25 के इस आकर्षक कार्यक्रम में उद्योग विशेषज्ञ ऋषभ सूरी और रिपीटगुड की ईशा झवर के साथ एक पैनल सत्र शामिल है, जिसमें इनोवेशन के रुझानों और विकास रणनीतियों पर चर्चा की जाएगी। इसके बाद, गगनयान टीम के अजित कृष्णन ऑनलाइन मोड में और स्ट्राइवर अपनी उद्यमशीलता की यात्रा, स्टार्टअप को आगे बढ़ाने और चुनौतियों पर काबू पाने के बारे में विस्तार से बताएंगे।

इस अद्भुत कार्यक्रम के एक दिन पहले प्री-इवेंट कार्यक्रम आयोजित किये गए। एक कार्यकम मैड ओवर मार्केटिंग ने साहसिक विचारों का प्रदर्शन किया, जिसमें टीम विजनरीज ने उन्नत ग्रिड द्वारा संचालित अभिनव स्टेशनों के माध्यम से ईवी चार्जिंग चुनौतियों का समाधान करने, सार्वजनिक-निजी भागीदारी (पीपीपी) और कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व (सीएसआर) के द्वारा ई वी चार्जिंग समस्याओं और समाधानों के बारे में अपने विचार रखे। इस बीच, टीम इलेक्ट्रोटाइटन्स ने मानसिक स्वास्थ्य समाधानों पर जोर दिया, जिसमें योग, ध्यान और स्वस्थ भविष्य के लिए सकारात्मक वातावरण को बढ़ावा देना शामिल रहे। अन्य प्री-इवेंट में बेग बॉरो स्टील और विंग्स ऑफ विक्ट्री शामिल थे, जो निर्णय लेने के कौशल का परीक्षण करते थे। रॉकेट राइडर वेनी ने रोमांचक चुनौतियों के माध्यम से टीमवर्क को प्रोत्साहित किया। दिन का समापन एक स्टारगेज़िंग इवेंट के साथ हुआ।

बुढ़ापे में सुनाई नहीं देना बड़ी समस्या, श्रवण यन्त्र ही सहारा

भगवान महावीर जन्मकल्याणक पर साधर्मिक व अनुकम्पा सेवा सप्ताह का आगाज

जैन संवेदना ट्रस्ट ने 13 बुजुर्गों व बच्चों को दिये श्रवण यन्त्र

रायपुर (विश्व परिवार)। भगवान महावीर जन्मकल्याणक महोत्सव के अवसर पर जैन संवेदना ट्रस्ट ने आज से साधर्मिक भक्ति व अनुकम्पा सेवा सप्ताह का आरम्भ किया है। श्री ऋषभदेव जैन मंदिर प्रांगण में 13 दिव्यांगों को श्रवण यन्त्र वितरित किए गए। जैन संवेदना ट्रस्ट के महेन्द्र कोचर व विजय चोपड़ा ने इस अवसर पर कहा कि मानवता की सेवा जीवन का सर्वोत्तम कार्य है। जीवन भर सुनने के बाद जब बुढ़ापे में कम सुनाई देने लगता है तो बड़ी समस्या पैदा हो जाती है। इस वक्‍त श्रवण यन्त्र ही बड़ा सहारा होता है। जैन संवेदना ट्रस्ट द्वारा गूंगे बहरे लोगों का परीक्षण कर श्रवण यंत्र का वितरण किया जाता है। ट्रस्ट के वीरेन्द्र डागा ने बताया कि 4 बच्चों में कु गोमती को जन्म से सुनाई नही देता था, डॉक्टरों ने जांच कर बताया कि श्रवण यन्त्र लगाकर गोमती सुन सकती है। आज श्रवण यन्त्र लगाकर चारों बच्चे सुनने लगे हैं। सभी के माता पिता प्रफुल्लित होकर जैन समाज का आभार जताया है।

छत्तीसगढ़ में बाल कुपोषण की चुनौती से निपटने के लिए प्रभावी प्रयास

एम्स रायपुर में राज्य पोषण मध्यवर्तन उत्कृष्टता केंद्र की पहल

रायपुर (विश्व परिवार)। छत्तीसगढ़ राज्य में बाल कुपोषण और एनीमिया की समस्या को समाप्त करने के लिए पिछले कुछ वर्षों में महत्वपूर्ण प्रयास किए गए हैं। इन प्रयासों और सशक्त करने हेतु, अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान रायपुर में राज्य पोषण मध्वर्तन उत्कृष्टता केंद्र, की स्थापना राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन और यूनिसेफ, रायपुर के सहयोग से की गयी है।

इस केंद्र का उद्देश्य कुपोषण और एनीमिया मुक्त छत्तीसगढ़ की दिशा में राज्य के प्रयासों को मजबूत बनाना है। इस केंद्र की कार्यप्रणाली को एम्स रायपुर के कार्यकारी निदेशक और सीईओ, लेफ्टिनेंट जनरल अशोक जिंदल (सेवानिवृत्त) के नेतृत्व में संचालित किया जा रहा है। उनके समृद्ध अनुभव और सामुदायिक चिकित्सा के क्षेत्र में दशकों से चल रहे योगदान ने इस केंद्र की रणनीतियों को आकार दिया है। यूनिसेफ और महिला एवं बाल विकास विभाग के सहयोग से किए गए इन प्रयासों ने छत्तीसगढ़ को कुपोषण मुक्त राज्य बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं। इस पहल के तहत हमर स्वस्थ लाइका जैसे समुदाय आधारित कार्यक्रमों की शुरुआत की गई है, जिससे कुपोषित बच्चों की निगरानी और सुधार की प्रक्रिया में तेजी आई है।

24 मार्च 2025 को यूनिसेफ इंडिया की पोषण प्रमुख, मैरी-क्लाउड डेसिलेट्स ने निदेशक, एम्स रायपुर से बैठक के दौरान कार्यक्रम के भविष्य पर चर्चा की और इसके साथ ही केंद्र के कामकाज का निरीक्षण किया। SCOEyN, एम्स रायपुर के कार्यक्रम निदेशक एवं शिशु रोग विभागाध्यक्ष डॉ. अनिल कुमार गोयल, यूनिसेफ रायपुर की पोषण विशेषज्ञ डॉ. अपर्णा देशपांडे, यूनिसेफ दिल्ली के पोषण अधिकारी डॉ. प्रफुल्ल रंजन मिश्रा और यूनिसेफ रायपुर के पोषण अधिकारी डॉ. महेंद्र प्रजापति के साथ-साथ दो यूनिसेफ स्वयंसेवक भी बैठक का हिस्सा थे।

इस कार्यक्रम के अंतर्गत, 2024 में 143 से बढ़कर 165 बच्चों का नामांकन स्मार्ट यूनिट में किया गया और 279 बच्चों को नजदीकी पोषण पुनर्वास केंद्र से जोड़ा गया। इसके अलावा, पोषण पुनर्वास केंद्रों की 466 टेली-मॉनिटरिंग और स्वास्थ्य केंद्रों पर आईवाईसीएफ 271 टेली मेंटरिंग सत्र के द्वारा इन्फेंट एंड यंग चाइल्ड फीडिंग प्रथाओं पर ध्यान केंद्रित किया गया।

कार्यक्रम में शिशु और छोटे बच्चों को पोषण की दिशा में सुधार लाने के लिए स्थानीय रूप से उपलब्ध सामग्री से ऊर्जा से भरपूर, कम लागत वाले व्यंजन तैयार किए जा रहे हैं। इसके परिणामस्वरूप, बच्चों के पोषण में सकारात्मक बदलाव देखने को मिल रहे हैं। इसके साथ ही, आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षण देकर कार्यक्रम के प्रभावी कार्यान्वयन में मदद की जा रही है।

सूरत स्टेशन में अमृत भारत स्टेशन योजना के तहत विकास, अनेक गाड़ियां उधना स्टेशन में ही समाप्त होगी

रायपुर (विश्व परिवार)। सूरत स्टेशन मॉडल स्टेशन के रूप में विकसित किया जा रहा है। सूरत स्टेशन को सर्वसुविधायुक्त बनाने हेतु चरणबद्ध तरीके से अनेक कार्य कराये गए हैं साथ ही अमृत भारत स्टेशन योजना के तहत विकास के विभिन्न कार्य कराये जा रहे हैं जो प्रगति पर है। सूरत स्टेशन में ज्यादा से ज्यादा यात्री गाड़ियों का ठहराव होने से वहाँ अन्य यात्री सुविधाएं बढ़ेगी साथ ही वाणिज्यिक विकास होगा जिसका सीधा लाभ स्टेशन के यात्रियों व व्यापारियों को मिलेगा।

यह कार्य विभिन्न चरणो में किया जाएगा। जिससे सूरत स्टेशन के बजाय अनेक गाड़ियो को उधना स्टेशन में ही समाप्त की जा रही है। सूरत स्टेशन से उधना स्टेशन की दूरी 4 किलोमीटर के लगभग है। दिनांक 01 अप्रैल, 2025 से दूसरा चरण का कार्य किया जा रहा है। जिसके फलस्वरूप दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे से होकर जाने वाली कुछ गाड़ियो को उधना स्टेशन में ही समाप्त होगी एवं कुछ का परिचालन प्रभावित रहेगा। जिसकी जानकारी इस प्रकार है-

सूरत स्टेशन के बजाय उधना स्टेशन में ही समाप्त एवं प्रारम्भ होने वाली गाडियाँ सूची इस प्रकार है- दिनांक 01 अप्रैल, 2025 को सूरत से रवाना होने वाली 23828 सूरत-पूरी एक्सप्रेस उधना से 08.20 बजे रवाना होगी। 07 अप्रैल, 2025 को सूरत से रवाना होने वाली 13426 सूरत-मालदा एक्सप्रेस उधना से 14.30 बजे रवाना होगी। 06 अप्रैल, 2025 को पूरी से रवाना होने वाली 22827 पूरी- सूरत एक्सप्रेस उधना से 14.25 बजे रवाना होगी। 05 अप्रैल, 2025 को मालदा से रवाना होने वाली 13425 मालदा - सूरत एक्सप्रेस उधना से 03.45 बजे रवाना होगी। 01 अप्रैल, 2025 को अहमदाबाद से रवाना होने वाली 12833 अहमदाबाद - हावड़ा एक्सप्रेस उधना से 04.35 बजे पहुँचकर 04.40 बजे रवाना होगी। 01 अप्रैल, 2025 को अजमेर से रवाना होने वाली 20824 अजमेर- पूरी एक्सप्रेस उधना से 07.20 बजे पहुँचकर 07.25 बजे रवाना होगी। 05 अप्रैल, 2025 को ओखा से रवाना होने वाली 22939 ओखा- बिलासपुर एक्सप्रेस उधना से 08.00 बजे पहुँचकर 08.05 बजे रवाना होगी। 04 अप्रैल, 2025 को गांधीधाम से रवाना होने वाली 12993 गांधीधाम - पूरी एक्सप्रेस उधना से 08.00 बजे पहुँचकर 08.05 बजे रवाना होगी। 02 अप्रैल, 2025 को पोरबंदर से रवाना होने वाली 12905 पोरबंदर -शालीमार एक्सप्रेस उधना से 21.25 बजे पहुँचकर 21.30 बजे रवाना होगी। 06 अप्रैल, 2025 को ओखा से रवाना होने वाली 22905 ओखा - शालीमार एक्सप्रेस उधना से 21.25 बजे पहुँचकर 21.30 बजे रवाना होगी। 04 अप्रैल, 2025 को

पोरबंदर से रवाना होने वाली 12949 पोरबंदर - संतरगाछी कविगुरु एक्सप्रेस उधना से 21.25 बजे पहुँचकर 21.30 बजे रवाना होगी। 03 अप्रैल, 2025 को अहमदाबाद से रवाना होने वाली 12844 अहमदाबाद - पूरी एक्सप्रेस उधना से 23.00 बजे पहुँचकर 23.05 बजे रवाना होगी। 04 अप्रैल, 2025 को अहमदाबाद से रवाना होने वाली 20862 अहमदाबाद - पूरी एक्सप्रेस उधना से 23.00 बजे पहुँचकर 23.05 बजे रवाना होगी। 02 अप्रैल, 2025 को गांधीधाम से रवाना होने वाली 22973 गांधीधाम - पूरी एक्सप्रेस उधना से 23.00 बजे पहुँचकर 23.05 बजे रवाना होगी। 04 अप्रैल, 2025 को शालीमार से रवाना होने वाली 12906 शालीमार - पोरबंदर एक्सप्रेस उधना से 01.50 बजे पहुँचकर 01.55 बजे रवाना होगी। 01 अप्रैल, 2025 को शालीमार से रवाना होने वाली 22906 शालीमार - ओखा एक्सप्रेस उधना से 01.50 बजे पहुँचकर 01.55 बजे रवाना होगी। 01 अप्रैल, 2025 को पूरी से रवाना होने वाली 12843 पूरी - अहमदाबाद एक्सप्रेस उधना से 02.09 बजे पहुँचकर 02.14 बजे रवाना होगी। 02 अप्रैल, 2025 को पूरी से रवाना होने वाली 20861 पूरी - अहमदाबाद एक्सप्रेस उधना से 02.09 बजे पहुँचकर 02.14 बजे रवाना होगी। 31 मार्च, 2025 को पूरी से रवाना होने वाली 12994 पूरी - गांधीधाम एक्सप्रेस उधना से 02.09 बजे पहुँचकर 02.14 बजे रवाना होगी। 30 मार्च, 2025 को संतरगाछी से रवाना होने वाली 12950 संतरगाछी - पोरबंदर एक्सप्रेस उधना से 03.30 बजे पहुँचकर 03.35 बजे रवाना होगी। 30 मार्च, 2025 को पूरी से रवाना होने वाली 20823 पूरी - अजमेर एक्सप्रेस उधना से 05.25 बजे पहुँचकर 05.30 बजे रवाना होगी। 31 मार्च, 2025 को बिलासपुर से रवाना होने वाली 22940 बिलासपुर - ओखा एक्सप्रेस उधना से 05.25 बजे पहुँचकर 05.30 बजे रवाना होगी। 30 मार्च, 2025 को हावड़ा से रवाना होने वाली 12834 हावड़ा - अहमदाबाद एक्सप्रेस उधना से 07.39 बजे पहुँचकर 07.45 बजे रवाना होगी। 05 अप्रैल, 2025 को पूरी से रवाना होने वाली 22974पूरी -गांधीधाम एक्सप्रेस उधना से 20.00 बजे पहुँचकर 20.05 बजे रवाना होगी।

संक्षिप्त समाचार

चोरी के एक आरोपी को बस्तर पुलिस ने किया गिरफ्तार बोधघाट थाना क्षेत्र का हैं मामला

जगदलपुर (विश्व परिवार)। पुलिस अधीक्षक, शलभ कुमार सिन्हा के नेतृत्व में बस्तर पुलिस के द्वारा अपराधिक तत्वों के विरूद्ध लगातार कार्यवाही किया जा रहा है। इसी तारतम्य में शांति नगर वार्ड में पल्सर मोटर सायकल चोरी करने के आरोपी को गिरफ्तार करने में बस्तर पुलिस को सफलता मिली है। ज्ञात हो कि थाना बोधघाट में मनीष मरकाम पिता बंशीलाल मरकाम थाना उपस्थित होकर रिपोर्ट दर्ज कराया कि वह दिनांक 26.03.25 को शांति नगर मोती राम पार्षद के घर सामने अपने पल्सर क्रमांक सीजी17 केवी 5112 को खड़ा करके अपने भाई दीपक सोनी से मिलने गया था तभी प्रार्थी के पल्सर गाड़ी को कोई अज्ञात चोर के द्वारा चोरी कर ले गया है, प्रार्थी की रिपोर्ट पर थाना बोधघाट में अपराध क़ायम कर तत्काल पुलिस अधीक्षक शलभ कुमार सिन्हा के मार्गदर्शन में अति. पुलिस अधीक्षक माहेश्वर नाग के मार्गदर्शन एवं नगर पुलिस अधीक्षक आकाश श्रीमाल के पर्यवेक्षण में थाना प्रभारी बोधघाट लीलाधर राठौर के नेतृत्व में तत्काल कार्यवाही हेतु टीम तैयार किया गया, उक्त टीम के द्वारा आसपास लगे सीसी टीवी कैमरा का अवलोकन कर संदेह के आधार पर चंद्रशेखर उर्फ़ शेखर पिता गडरु उम्र 24 वर्ष निवासी आकाश नगर वार्ड जगदलपुर से पूछताछ किया गया उक्त संदेही के द्वारा अपराध घटित करना कबूल करते हुए चोरी किये हुए पल्सर क्रमांक सीजी17 केवी 5112 किमती 70000 रु. को पेश करने पर उक्त आरोपी को गिरफ्तार कर न्यायिक रिमांड पर न्यायालय पेश किया गया है।

शादी का प्रलोभन देकर बलात्कार करने वाला आरोपी थाना बंडाजी पुलिस के गिरफ्त में

जगदलपुर (विश्व परिवार)। दिनांक 26.03.2025 को प्रार्थी ने थाना हाजिर आकर रिपोर्ट दर्ज कराया कि शादी का प्रलोभन देकर आरोपी ने जबरदस्ती बलात्कार कर पीड़िता को गर्भवती कर दिया गया है, की रिपोर्ट पर बडांजी में अपराध क. 15/2025 धारा-64(1),64 (2) (एम), बीएनएस, कायम कर विवेचना में लिया गया। पुलिस अधीक्षक शलभ कुमार सिन्हा के निर्देशन , अति. पुलिस अधीक्षक महेश्वर नाग के मार्ग दर्शन एवं एस.डी.ओ.पी. लोहण्डीगुड़ा ईश्वर त्रिवेदी के पर्यवेक्षण में व थाना बडांजी प्रभारी केशरी चंद साहू के नेतृत्व में आरोपी विनोद कश्यप पिता तुलसी कश्यप जाति गौण उम्र बाईस वर्ष के विरुद्ध धारा 64(1),64 (2) (एम) बीएनएस के अंतर्गत पर्याप्त सबूत पाये जाने पर उक्त धारा के अंतर्गत गिफ्तार कर आज दिनांक 27.03.2025 को माननीय न्यायालय पेश कर न्यायिक रिमांड हेतु माननीय न्यायलय पेश किया गया ।

ऑनलाइन नेटवर्क के माध्यम से देशभर में नशीली टेबलेट की सप्लाई करने वाले गिरोह का पर्दाफाश

गरियाबंद (विश्व परिवार)। पुलिस की एण्ड टू एण्ड कार्यवाही सफल, चार आरोपी गिरफ्तार,गरियाबंद पुलिस ने नशीली टेबलेट की अवैध सप्लाई करने वाले एक बड़े नेटवर्क का पर्दाफाश किया है। पुलिस ने इस गिरोह के चार आरोपियों को गिरफ्तार कर उनके कब्जे से कुल 680 नशीली टेबलेट बरामद की हैं।

मुख्य बिंदु:

आरोपी यूट्यूब चैनल और इंस्टाग्राम के माध्यम से नशीली टेबलेट का प्रचार करता था।

थाना पाण्डुका में 90 और थाना राजिम में 590 नशीली टेबलेट बरामद।

पुलिस ने बिहार से संचालित इस गिरोह के मास्टरमाइंड लक्की कुमार को गिरफ्तार किया।

गिरोह कुरियर के माध्यम से छत्तीसगढ़ समेत कई राज्यों में नशीली दवाइयों की सप्लाई करता था।

अन्य संलिप्त आरोपियों की जल्द गिरफ्तारी की जाएगी।

कैसे हुआ खुलासा?

गरियाबंद के वरिष्ठ अधिकारियों के निर्देश पर जिले की एंटी नारकोटिक्स टास्क फोर्स (हृज्ञस्न) द्वारा लगातार नजर रखी जा रही थी। इसी दौरान थाना पाण्डुका पुलिस ने 02 मार्च 2025 को आरोपी भुनेश्वर साहू को 90 नशीली टेबलेट के साथ गिरफ्तार किया। पूछताछ में उसने बताया कि ये टेबलेट लक्की कुमार (बिहार) से आती थीं। इसके बाद पुलिस ने लक्की कुमार को 20 मार्च 2025 को गिरफ्तार कर लिया।

लक्की कुमार सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म जैसे यूट्यूब और इंस्टाग्राम पर अपना नंबर साझा कर ग्राहकों से संपर्क करता था। फिर कुरियर के माध्यम से टेबलेट की सप्लाई की जाती थी।

इसके बाद, पुलिस ने निखिल फुले (रायपुर) और पीयूष गोस्वामी (खरियार रोड, ओडिशा) को गिरफ्तार किया। 27 मार्च 2025 को पुलिस ने मुखबिर की सूचना पर पीयूष गोस्वामी को 240 टेबलेट के साथ पकड़ा। पूछताछ में उसने बताया कि उसे यह टेबलेट निखिल फुले (रायपुर) ने दी थीं। इसके बाद पुलिस ने निखिल फुले को भी गिरफ्तार कर लिया, जिसके पास से 350 टेबलेट और एक धारदार चाकू बरामद हुआ।

बरामद सामग्री:

?? 59 स्ट्रीप – Nitrazepam Tablets IP Nitrosun 10 (कुल 590 नग)

90 अन्य नशीली टेबलेट, एक धारदार चाकू

पुलिस की अपील

गरियाबंद पुलिस ने आम जनता से अपील की है कि वे यूट्यूब और सोशल मीडिया पर नशीली दवाओं के प्रचार में न फंसे। साथ ही, नशे से दूर रहें और समाज को भी नशे से बचाने में सहयोग करें।

गिरफ्तार आरोपी:

थाना पाण्डुका में गिरफ्तार

1. भुनेश्वर साहू उर्फराजा (19) – मगरलोड़, धमतरी
2. लक्की कुमार (24) – फ्तुहा, पटना, बिहार

थाना राजिम में गिरफ्तार

1. पीयूष गोस्वामी (19) – खरियार रोड, ओडिशा
2. निखिल फुले (20) – रायपुर

हैंडबॉल चैंपियन बनी गरियाबंद पुलिस, फाइनल में रायपुर को 12-10 से हराया

गरियाबंद (विश्व परिवार)। रायपुर में आयोजित अंतर जिला पुलिस खेलकूद प्रतियोगिता में गरियाबंद पुलिस ने शानदार प्रदर्शन करते हुए पुरुष हैंडबॉल चैम्पियनशिप का खिताब अपने नाम किया। रोमांचक फाइनल मुकाबले में गरियाबंद की टीम ने रायपुर को 12-10 से हराकर ट्रॉफी पर कब्जा जमाया।

E-30 यूनिट के खिलाड़ियों ने दिखाया दम- इस जीत में गरियाबंद पुलिस टीम के खिलाड़ियों आशीष सफा, चुडामणि देवता, मनीष चंद्राकर, टीकम पटेल, कृष्णा पाटकर, राजू साहू, मोहित पटेल, अमृत यादव, अजित, लुकेश्वर सोरी और कोच जैमुनि बगर्ती व रवि सिन्हा ने अहम भूमिका निभाई। खास बात यह रही कि टीम के अधिकतर खिलाड़ी विशेष श्व-30 यूनिट से जुड़े हुए हैं, जिन्होंने अपनी एकजुटता और बेहतरीन खेल से यह सफलता हासिल की।

SP रखेचा बोले - हमारे जवान खेल में भी बेस्ट- गरियाबंद पुलिस अधीक्षक निखिल अशोक रखेचा ने टीम की इस ऐतिहासिक जीत पर गर्व जताते हुए कहा,

हमारी टीम ने खेल में उत्कृष्टता के साथ पुलिस जवानों की मेहनत, लगन और अनुशासन का भी शानदार प्रदर्शन किया है। यह जीत हर उस जवान के लिए प्रेरणा है, जो अपने कर्तव्य के साथ-साथ खेल में भी पहचान बनाना चाहता है। मुझे गर्व है कि हमारे जवान सिर्फ सुरक्षा ही नहीं, बल्कि खेलों में भी सर्वश्रेष्ठ हैं।

अधिकारियों ने दी बधाई- गरियाबंद पुलिस की इस उपलब्धि पर अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक धीरेन्द्र पटेल, डीएसपी निशा सिन्हा, थाना प्रभारी ओम प्रकाश यादव, गरिमा दादर, रक्षित निरीक्षक सनथ ठाकुर समेत कई अधिकारियों ने टीम को बधाई दी। सभी ने इस जीत को गरियाबंद पुलिस की एकता और समर्पण का प्रतीक बताया।

खेल से जवानों को मिलती है मानसिक मजबूती -SP- एसपी निखिल अशोक रखेचा ने आगे कहा कि खेलकूद प्रतियोगिताएं पुलिस जवानों के आत्मविश्वास और भाईचारे को बढ़ाने का बेहतरीन जरिया हैं। उन्होंने पुलिस बल में खेल भावना को प्रोत्साहित करने की बात कहते हुए जवानों को आगे भी इसी तरह उत्कृष्ट प्रदर्शन करने के लिए प्रेरित किया।

गरियाबंद पुलिस की ऐतिहासिक जीत, बनी मिसाल- गरियाबंद पुलिस की इस जीत ने न सिर्फ जिले का मान बढ़ाया, बल्कि अन्य पुलिस इकाइयों के लिए भी एक मिसाल कायम की है। यह उपलब्धि आने वाले समय में टीम को और बेहतरीन प्रदर्शन के लिए प्रेरित करेगी।

पुलिस चाइल्ड पोर्नोग्राफी के मामलों में लगातार कार्यवाही कर आरोपियों को भेज रही जेल

विभिन्न सोशल मीडिया, आनलाइन साइट से बच्चों से संबंधित पोर्नोग्राफी वीडियो अपलोड करना है अपराध, ऐसा कोई भी कृत्य, आपको पहुंचा सकता है, सीधे जेल

बलौदाबाजार(विश्व परिवार)। भारत सरकार गृह मंत्रालय के हृष्टत्रक्ब शाखा नई दिल्ली द्वारा प्रेषित सायबर टीपलाईन के अनुसार जिला बलौदाबाजार-भाटापारा पुलिस द्वारा विभिन्न सोशल मीडिया पर बच्चों से संबंधित पोर्नोग्राफी विडियो अपलोड करने वाले आरोपी को गिरफ्तार कर जेल भेजने की कार्यवाही लगातार की जा रही है। ऑनलाइन साइट अथवा माध्यमों से किसी भी प्रकार से बच्चों से संबंधित पोर्नोग्राफी वीडियो/फोटो अपलोड करना कानूनन अपराध है। इसी क्रम में थाना लवन के अपराध क्र. 239/2023 धारा 67(-),67 (क्) आईटी एक्ट एवं 14,15 पाक्सो एक्ट का भारत सरकार गृह मंत्रालय के हृष्टत्रक्ब शाखा नई दिल्ली द्वारा प्रेषित सायबर टीपलाईन में 11.07.2022 को सेवा प्रदाता कंपनी से जानकारी प्राप्त कर विश्लेषण किया गया, घटना दिनांक व समय में संदेही मोबाईल के धारक का थाना लवन क्षेत्र में होना बताया गया है। जिस पर थाना लवन द्वारा अपराध पंजीबद्ध कर विवेचना में लिया गया। प्रकरण की विवेचना में *सोशल मीडिया में महिला/बच्चों से संबंधित पोर्न विडियों को अपलोड करने वाले आरोपी के आईपी एड्रेस से पता करने पर आरोपी के मोबाईल नंबर 79095 50673 के द्वारा विडियो अपलोड* करना पता चलने पर आरोपी मोबाईल धारक गोविंद रजक को आज दिनांक 26.03.2025 को विधिवत गिरफ्तार कर माननीय न्यायालय के समक्ष प्रस्तुत करने की प्रक्रिया की जा रही है।

190 लाख की लागत से सड़क निर्माण का भाजपा प्रदेश अध्यक्ष किरण देव ने किया भूमिपूजन व शुभारंभ

जगदलपुर विधानसभा के आड़ावाल एवं परपा पुलिस आवासीय भवनों में पहुंच मार्ग का हुआ शुभारंभ

जनता की मूलभूत सुविधाओं को पूरा करना प्रथम दायित्व, सतत रूप से होंगे क्षेत्र के विकास कार्य - किरण देव

जगदलपुर (विश्व परिवार)।। भारतीय जनता पार्टी प्रदेश अध्यक्ष एवं क्षेत्रीय विधायक श्री किरण देव के दृढ़संकल्प एवं लगातार सक्रियता के चलते जगदलपुर विधानसभा क्षेत्र में चौमुखी विकास कार्य हो रहे हैं। विधायक श्री किरण देव की सक्रियता के चलते क्षेत्र की देवतुल्य जनमानस की बहुप्रतीक्षित मांग के अनुरूप जगदलपुर विधानसभा के आड़ावाल एवं परपा पुलिस आवासीय भवन में पहुंच मार्ग निर्माण कार्यों एवं ग्राम आड़ावाल पंचायत के कुसुमपाल पारा एवं अन्य स्थल एवं ग्राम पंचायत पंडरीपानी में सीसी सड़क निर्माण कार्य का विधिवत भूमिपूजन एवं शुभारंभ किया गया। आड़ावाल पुलिस आवासीय भवन में 1.250 किलोमीटर निर्माण कार्य लागत 74.15 लाख एवं परपा पुलिस आवासीय भवन में 1.250 किलोमीटर लागत 75.95 लाख, कुल 150 लाख की लागत से आड़ावाल, एवं परपा पुलिस आवासीय कालोनी में सड़क निर्माण कार्य , ग्राम आड़ावाल पंचायत में कुसुमपाल पारा में 400 मीटर सी सी सडक लागत राशि 11.25 लाख, छविलाल धर से सोमदेव धर तक सी सी सडक 250 मीटर लागत 8.33 लाख

,सी सी सडक नवीन ठाकुर धर से सुखमन धर तक 250 मीटर ,लागत 8.33 लाख रुपए एवं ग्राम पंचायत पंडरीपानी मे 350 मीटर सी सी सडक लागत राशि 10.17 लाख से निर्माण किया जायेगा। ज्ञात हो कि विधानसभा चुनाव के दौरान वहां की देवतुल्य जनता ने भाजपा प्रदेश अध्यक्ष एवं विधायक श्री किरण देव के समक्ष सड़क निर्माण की मांग रखी थी । जिस पर क्षेत्रीय विधायक श्री किरण देव ने जनमानस की भावना को पूर्ण रूप देते हुये सड़क निर्माण कार्य 190 लाख रुपए की लागत से पूरा होगा और जनता के मांग के अनुरूप विकास कार्य किया जाएगा। आड़ावाल एवं परपा पुलिस आवासीय कॉलोनी में सड़क निर्माण की वर्षों पुरानी मांग रही, जो आज विधायक श्री किरण देव के सक्रियता से पूरी हो रही है। जल्द ही सड़क निर्माण कार्य तय समय सीमा में गुणवत्ता के साथ पूर्ण होगा और जनता को यह सौगात मिलेगी। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष एवं विधायक श्री किरण देव ने कहा कि जनता के मांग की अनुरूप लगातार जगदलपुर विधानसभा क्षेत्र में विकास कार्य अनवरत जारी है। आपका स्नेह इसी तरह भाजपा को मिलते रहे । देवतुल्य जनता के मांग के अनुरूप उनकी मूलभूत सुविधाओं को पूरा करना हमारा प्रथम दायित्व है । हमारे मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय के नेतृत्व में लगातार क्षेत्र में चौमुखी विकास कार्य कर रही है। जिसके लिए हम हमारे सरकार के यशस्वी मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय एवं उपमुख्यमंत्री लोक निर्माण विभाग मंत्री श्री अरुण साव का जगदलपुर विधानसभा की जनता की ओर से सहृदय धन्यवाद ज्ञापित करते हैं ।वहीं कुसुमपाल में भूमिपूजन कार्यक्रम के दौरान गांव के एक पिता ने अपने दिव्यांग बच्चे के लिए ट्राईसाईकिल की मांग रखी जिस पर विधायक श्री किरण देव ने तत्काल इस विषय को गंभीरता से लेते मात्र 15 मिनट में उक्त बच्चें को बैटरी रहित ट्राई साइकिल प्रदान कराया । इस पर संबंधित ग्रामवासीय एवं उक्त बच्चों के पिता ने विधायक के प्रति धन्यवाद एवं आभार व्यक्त किया । वहीं परपा पुलिस आवासीय भवन में सड़क के शुभारंभ कार्यक्रम में वार्ड वासियों ने एक ट्रांसफार्मर की मांग रखी जिस संबंध में क्षेत्रीय विधायक श्री किरण देव ने तत्काल संबंधित विभाग से चर्चा कर आगामी 1 सप्ताह में ट्रांसफार्मर लगने की बात वार्ड वासियों से कहीं । कार्यक्रम में विधायक श्री किरण देव की इस सक्रियता एवं विषय को गंभीरता से लेते हुए देवतुल्य जनता की मांगों को तत्काल पूरा करने की पहल पर अपने विधायक की प्रति जनता में खुशी एवं प्रसन्नता व्यक्त किया ।

छत्तीसगढ़ की सांस्कृतिक धरोहर को नई पहचान, चिंगरा पगार: कला और प्रकृति का अनोखा संगम

धरम और मनीषा नेताम की कला से सजी चिंगरा पगार की चट्टानें

वन्य जीवों की जीवंत मूर्तियों से जगमगाया चिंगरा पगार

गरियाबंद (विश्व परिवार)। प्राकृतिक सुंदरता के लिए मशहूर चिंगरा पगार वॉटरफॉल अब अपनी अनोखी कलाकृतियों के कारण भी सुर्खियों में है। खैरागढ़ जिले के कलाकार दंपति धरम नेताम और मनीषा नेताम ने यहां की विशाल चट्टानों पर वन्य जीवों की अद्भुत मूर्तियां उकेरकर इन्हें नया जीवन दिया है।

पत्थरों पर उकेरी जंगल की जादुई दुनिया- इस अनोखी कला में शेर, अजगर, मगरमच्छ, तेंदुआ, बिच्छू, गिरगिट, कछुआ, जंगली भैंसा और कई अन्य वन्य जीवों की आकृतियां शामिल हैं। इन नक्काशियों को देखकर ऐसा लगता है जैसे प्रकृति और कला का अनूठा संगम हो गया हो। चट्टानों पर उकेरी गई ये आकृतियां इतनी जीवंत हैं कि हर कोई इन्हें देखकर दंग रह जाता है।

कलाकार दंपति की मेहनत लाई रंग- धरम और मनीषा नेताम ने खैरागढ़ के कला संस्थान से पत्थरों को मूर्त रूप देने का प्रशिक्षण लिया है। हाल ही में वे अहमदाबाद में भी अपनी कला का प्रदर्शन कर चुके हैं। पिछले दो महीनों की कड़ी मेहनत के बाद उन्होंने चिंगरा पगार की चट्टानों को इस नई पहचान से सजा दिया है।

पर्यटन और सांस्कृतिक विरासत को मिलेगा बढ़ावा- वन विभाग के अधिकारियों के मुताबिक, इस पहल से पर्यटन को बढ़ावा मिलेगा और छत्तीसगढ़ की सांस्कृतिक विरासत को नई पहचान मिलेगी। कलाकार दंपति का मानना है कि यह कला न केवल पर्यटकों को आकर्षित करेगी बल्कि पर्यावरण संरक्षण के प्रति भी जागरूकता बढ़ाएगी।

यात्रा कीजिए इस अनोखे अनुभव की दुनिया- अगर आप भी इस जादुई कला को करीब से देखना चाहते हैं, तो गरियाबंद से मात्र 8 किलोमीटर दूर चिंगरा पगार की यात्रा जरूर करें। यहां की प्राकृतिक सुंदरता और पत्थरों पर उकेरी गई अनूठी दुनिया आपका मन मोह लेगी।

www.vishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@yahoo.com

दैनिक
विश्व परिवार

खेल-व्यापार

रायपुर शनिवार 29 मार्च 2025

व्यापार समाचार

काइनेटिक ग्रीन ने ई-लूना पर इंडस्ट्री का पहला 'अश्योदर्ड बायबैक ऑफर' पेश कर रचा नया मानक, ग्राहकों का भरोसा और मजबूत होगा

पुणे: भारत में इलेक्ट्रिक वाहनों की अग्रणी कंपनी काइनेटिक ग्रीन ने ई-लूना के लिए एक खास 'अश्योर्ड बायबैक ऑफर' की घोषणा की है। सीमित अवधि के इस ऑफर के जरिए कंपनी ने ग्राहकों की संतुष्टि और उनकी मानसिक शांति सुनिश्चित करने की अपनी प्रतिबद्धता को और मजबूती दी है। इस विशेष पेशकश के तहत ऑफर अवधि में खरीदे गए सभी ई-लूना वाहनों पर कंपनी ?36,000 की गारंटीशुदा बायबैक वैल्यू देगी। यह बायबैक लाभ तीन वर्षों के वाहन स्वामित्व के बाद लिया जा सकेगा और इसमें अनलिमिटेड किलोमीटर की शर्त शामिल है, जो कि उद्योग में पहली बार किसी कंपनी ने पेश की है। यह पहल न केवल काइनेटिक ग्रीन के इलेक्ट्रिक टू-व्हीलर्स की टिकाऊ गुणवत्ता पर कंपनी के विश्वास को दर्शाती है, बल्कि ग्राहकों के लिए ईवी अपनाने के निर्णय को भी अधिक आसान और लाभकारी बनाती है। साथ ही, यह सेकेंड हैंड वैल्यू की चिंता को भी दूर करती है। इस अवसर पर काइनेटिक ग्रीन की संस्थापक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी सुश्री सुलज्जा फिरोदिया मोटवानी ने कहा, काइनेटिक ग्रीन में हम शहरी परिवहन को टिकाऊ और किफायती समाधानों के जरिए नया आकार देने के लिए प्रतिबद्ध हैं। ई-लूना एक गेम-चेंजर साबित हुआ है और अश्योर्ड बायबैक ऑफर के साथ हम इसे ग्राहकों के लिए और भी आकर्षक बना रहे हैं। यह पहल ग्राहकों को सुनिश्चित मूल्य की गारंटी देती है और इलेक्ट्रिक वाहनों की बढ़ती दुनिया में भरोसा भी बढ़ाती है। हम ग्राहकों से अपील करते हैं कि इस विशेष ऑफर का लाभ उठाएं और हरित क्रांति का हिस्सा बनें। यह बायबैक ऑफर काइनेटिक ग्रीन के देशभर के सभी अधिकृत डीलरशिप्स पर उपलब्ध है और इसका उद्देश्य ग्राहकों को एक सहज, भरोसेमंद और सुविधाजनक खरीदारी अनुभव देना है। इस नई पहल के साथ कंपनी ने एक बार फिर पर्यावरण के अनुकूल और किफायती मोबिलिटी समाधानों को बढ़ावा देने की अपनी सोच को मजबूती से सामने रखा है।

टाटा न्यू एचडीएफसी बैंक क्रेडिट कार्ड ने माइलस्टोन का जश्न मनाया: 2 मिलियन से अधिक कार्ड जारी किए गए

मुंबई, : टाटा न्यू और एचडीएफसी बैंक ने आज एक महत्वपूर्ण माइलस्टोन घोषित किया: टाटा न्यू एचडीएफसी बैंक क्रेडिट कार्ड ने 2 मिलियन से ज्यादा कार्ड जारी किए हैं, जिससे भारत के पसंदीदा रिवॉर्ड क्रेडिट कार्ड में से एक के रूप में इसकी स्थिति मज़बूत हुई है। यह उपलब्धि देश भर के ग्राहकों को मूल्य और एक सहज रिवॉर्ड इकोसिस्टम प्रदान करने में कार्ड की उल्लेखनीय सफलता को रेखांकित करती है।

टाटा न्यू एचडीएफसी बैंक क्रेडिट कार्ड ने अगस्त 2022 में लॉन्च होने के बाद से महत्वपूर्ण प्रगति की है, भारतीय क्रेडिट कार्ड बाज़ार में सबसे सरल और पारदर्शी रिवॉर्ड इकोसिस्टम की पेशकश करने के लिए इसके उपयोगकर्ताओं द्वारा पसंद किया गया है। जारी किए गए नए कार्डों की एक महत्वपूर्ण हिस्सेदारी (क्यू-3 एफवाई-25-आरबीआई में जारी किए गए 13 प्रतिशत से ज्यादा नए कार्ड) के साथ इसने देश भर के ग्राहकों का तेज़ी से विश्वास और वफ़ादारी हासिल की है।

मुख्य विशेषताएँ: 2 मिलियन से अधिक कार्ड जारी किए गए: बाजार में मजबूत स्वीकृति और ग्राहकों की पसंद को दर्शाता है।

13 प्रतिशत से अधिक बाजार हिस्सेदारी: वित्त वर्ष 25 की तीसरी तिमाही में उद्योग में जारी किए गए नए कार्डों में से 13 प्रतिशत से अधिक पर कब्जा (आरबीआई डेटा के अनुसार) जो भारत में किसी भी सह-ब्रांडेड कार्ड के लिए सबसे अधिक है।

एकीकृत पुरस्कार पारिस्थितिकी तंत्र: टाटा न्यू पारिस्थितिकी तंत्र में किराने का सामान, दवाइयाँ, बिल भुगतान, यूपीआई, उपहार कार्ड और वित्तीय सेवाओं से लेकर फैशन, उपभोक्ता इलेक्ट्रॉनिक्स, यात्रा और मनोरंजन जैसी जीवनशैली-उन्मुख पेशकशों तक पुरस्कारों को सहजता से एकीकृत करता है।

हाई इंगेजमेंट: यूपीआई सुविधा एक बड़ी सफलता है, जिसमें प्रति माह 12 मिलियन से अधिक लेनदेन की उच्च रन-रेट है, जो कि यूपीआई पर मासिक 800 करोड़ रुपये से अधिक खर्च करता है।

शीर्ष व्यय श्रेणियाँ: किराना, ईंधन और उपयोगिताएँ शीर्ष व्यय श्रेणियाँ हैं, जो कुल व्यय का लगभग 30 प्रतिशत प्रतिनिधित्व करती हैं, जो इस बात पर प्रकाश डालती हैं कि यह ग्राहकों के लिए एक शीर्ष- वॉलेट कार्ड है जो ग्राहकों की रोज़मर्रा की ज़रूरतों को पूरा करता है।

भोजपुरी समाज के अजय सिंह प्रदेश उपाध्यक्ष पद पर हुए नियुक्त

रायपुर। यह बहुत ही हर्ष का विषय है कि अखिल भारतीय भोजपुरी समाज के सम्मान समारोह में अजय सिंह को प्रदेश उपाध्यक्ष पद पर नियुक्त किया गया। यह उनकी समाज सेवा और भोजपुरी भाषा एवं संस्कृति के प्रति समर्पण का प्रमाण है। समारोह में पंकज शर्मा द्वारा सम्मान पत्र प्रदान करना और प्रदेश अध्यक्ष मुक्तिनाथ पाण्डेय द्वारा उनके कार्यों की सराहना करना यह दर्शाता है कि अजय सिंह ने समाज के उत्थान में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। भोजपुरिया समाज द्वारा उनकी इस उपलब्धि को सराहा जाना और तालियों से स्वागत किया जाना यह साबित करता है कि वे समाज में एक प्रभावशाली और प्रेरणादायक व्यक्तित्व हैं। सम्मान समारोह में समाज के सैकड़ो की संख्या में भोजपुरी समाज के सदस्य एवं पदाधिकारी उपस्थित थे। सभी ने उनके उज्जवल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ प्रदान की।

शुभमन गिल की कप्तानी पर भड़के सहवाग, बोले- अभी वो तैयार नहीं है

नईदिल्ली(एजेंसी)। शुभमन गिल और उनकी टीम गुजरात टाइटंस के लिए इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) 2025 की शुरुआत अच्छी नहीं रही। मंगलवार को पंजाब किंग्स के खिलाफ अपने पहले मैच में 244 रनों के विशाल लक्ष्य का पीछा करते हुए गुजरात को 11 रनों से हार का सामना करना पड़ा। इस हार के बाद कई क्रिकेट पंडितों ने शुभमन की कप्तानी पर सवाल उठाए। इसी कड़ी में भारतीय क्रिकेट टीम के पूर्व खिलाड़ी वीरेंद्र सहवाग ने भी पंजाब किंग्स के खिलाफ पहले मैच में शुभमन गिल की कप्तानी पर नाराज़गी जाहिर की। सहवाग ने कहा कि शुभमन ने बिल्कुल भी अच्छी कप्तानी नहीं की और वो बिल्कुल भी तैयार नहीं दिखे। सहवाग उनके द्वारा किए गए गेंदबाजी में बदलावों से नाखुश दिखे। खासकर मोहम्मद सिराज, जिनके पहले दो ओवरों में केवल 14 रन गए लेकिन इसके बावजूद उन्हें आक्रमण से हटा दिया गया। सहवाग ने क्रिकबज पर बोलते हुए कहा, मुझे लगा कि शुभमन गिल की कप्तानी अच्छी नहीं थी। वो तैयार नहीं थे, वो सक्रिय नहीं थे। जब सिराज अच्छी गेंदबाजी कर रहे थे, तो उन्होंने अरशद खान को लाया, जिन्होंने मुझे लगता है कि पावरप्ले में 21 रन दिए और उस ओवर ने मैच को पंजाब की तरफ मोड़ दिया। अगर सिराज नई गेंद से अच्छी गेंदबाजी कर रहा है, तो उसे डेथ ओवरों के लिए रोकने का कोई मतलब नहीं है और आप देख सकते हैं कि उसे अंत में मार भी पड़ी। इसलिए गेंदबाज़ का इस्तेमाल करते समय वो सक्रियता गायब थी। पंजाब के खिलाफ मैच में मिली हार पर गिल ने भी स्वीकार किया कि गुजरात के पास अपने मौके थे, लेकिन वो महत्वपूर्ण चरणों का फ़ायदा उठाने में विफल रहे। गिल ने मैच के बाद कहा, जब हम गेंदबाजी और बल्लेबाजी कर रहे थे, तब हमें मौके मिले। पारी के आखिरी छोर पर हमने बहुत ज़्यादा रन दिए। बीच के उन तीन ओवरों में, हमने लगभग 18 रन बनाए और हमारे पहले तीन ओवरों में हमने ज़्यादा रन नहीं बनाए। इससे हमें मैच में हार का सामना करना पड़ा इसके अलावा, आज हमारे लिए कई सकारात्मक बातें रहीं। बेंच पर बैठे किसी खिलाड़ी के लिए यॉर्कर फेंकना आसान नहीं है। यहां बल्लेबाजी के लिए हमेशा अच्छा विकेट होता है।

देश के 'विकसित भारत' सपने की ओर बढ़ने की कुंजी 'इनोवेशन' : केंद्रीय मंत्री पीयूष गोयल

नई दिल्ली(एजेंसी)। केंद्रीय वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री पीयूष गोयल ने कहा कि 'इनोवेशन' देश के 'विकसित भारत' सपने की ओर बढ़ने की कुंजी है। इसी के साथ ट्रेडमार्क सर्च और बौद्धिक संपदा (आईपी) प्रवर्तन में मॉडर्न टेक्नोलॉजी जैसे आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और डेटा एनालिटिक्स की जरूरत बनी हुई है। केंद्रीय मंत्री ने इनोवेटर्स और व्यवसायों के हितों की रक्षा के लिए मजबूत कॉपीराइट सुरक्षा उपायों के महत्व पर भी जोर दिया। 'राष्ट्रीय बौद्धिक संपदा पुरस्कार 2024' कार्यक्रम में केंद्रीय मंत्री ने विधायी परिवर्तनों, प्रशासनिक सुधारों और इनोवेशन और रिसर्च को बढ़ावा देने के उद्देश्य से नई पहलों के जरिए आईपी इकोसिस्टम को मजबूत करने की सरकार की प्रतिबद्धता पर जोर दिया। केंद्रीय मंत्री गोयल ने कहा, इनोवेशन हमेशा से हमारे डीएनए में रहा है। हमें बहुत गर्व है कि 'शून्य' की उत्पत्ति भारत से हुई है। शतरंज को भी अब एक खेल के रूप में पहचाना जा रहा है, जिसकी उत्पत्ति हमारी प्राचीन परंपरा चतुरंग से हुई है। 'इनोवेशन' देश के विकसित भारत बनने की यात्रा को परिभाषित करेगा। रिसर्च और डेवलपमेंट (आरएंडडी) के महत्व पर प्रकाश डालते हुए केंद्रीय मंत्री गोयल ने जोर देकर कहा कि कोई भी देश इनोवेशन, नए विचारों, टेक्नोलॉजी-ड्रिवन प्रगति पर ध्यान केंद्रित किए बिना विकसित होने का दावा नहीं कर सकता।

ऋषभ पंत को ओपनिंग करने दो और मारक्रम को ड्रॉप कर दो एलएसजी को मिली बड़ी सलाह

नईदिल्ली(एजेंसी)। इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) 2025 के चौथे मुकाबले में ऋ षभ पंत की टीम लखनऊ सुपरजायंट्स को हार का सामना करना पड़ा। अपने पहले मैच में ऋषभ पंत ना तो कप्तान के रूप में चले और ना ही एक बल्लेबाज़ के रूप में उनका बल्ला चला लेकिन अब ये टीम सनराइजर्स हैदराबाद के खिलाफ पलटवार के इरादे से उतरेगी। इस मैच से पहले पूर्व भारतीय बल्लेबाज संजय बांगर ने लखनऊ की टीम को एक बड़ी सलाह दी है। बांगर ने कहा कि ऋषभ पंत को इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) 2025 में लखनऊ सुपर जायंट्स (एलएसजी) के लिए ओपनिंग करनी चाहिए। खैर लखनऊ का खेमा बांगर की इस सलाह को कितना सीरियस लेता है ये देखना दिलचस्प होगा। बांगर ने ब्रॉडकास्टर्स से बात करते हुए कहा, मेरा हमेशा से मानना रहा है कि सफेद गेंद के प्रारूप में उनके लिए सबसे अच्छी स्थिति टॉप पर है। उन्हें पारी की शुरुआत करने दें। मारक्रम को बाहर करें और शमर जोसेफ को टीम में लाएं। जहां तक विदेशी बल्लेबाजों का सवाल है, मध्यक्रम में कोई बदलाव नहीं होना चाहिए और ऋषभ पंत को ऊपर मौका दें। बल्लेबाज के तौर पर ऋषभ ने लंबे प्रारूप में दिखाया है कि वो बेहतरीन तेज गेंदबाजों के खिलाफ भी बेहतर खिलाड़ी हैं। स्पिन के खिलाफ बल्लेबाजी करने के लिए उनकी प्रतिष्ठा है। उन्होंने तेज गेंदबाजों के खिलाफ भी अच्छा प्रदर्शन किया है। इसलिए उन्हें शीर्ष क्रम में इस्तेमाल करें। न्यूजीलैंड के पूर्व कप्तान केन विलियमसन ने भी एसआरएच के खिलाफ पंत के अच्छे प्रदर्शन का समर्थन किया है। विलियमसन ने कहा, वो एक बेहतरीन खिलाड़ी है। उसके पास अनुभव है। आईपीएल एक लंबा टूर्नामेंट है। खिलाड़ी हमेशा खेल को आगे बढ़ाते हैं। ऋषभ इस मामले में सर्वश्रेष्ठ में से एक है, मुझे लगता है कि आप उससे हैदराबाद में अच्छा प्रदर्शन करने की उम्मीद कर सकते हैं।

रयान पराग की कप्तानी में राजस्थान रॉयल्स का हुआ बुरा हाल

कैप्टन साहब के भी नाम हुआ ये शर्मनाक रिकॉर्ड

नईदिल्ली(एजेंसी)। आईपीएल 2025 में बीते बुधवार, 26 मार्च को टूर्नामेंट के छठे मुकाबले में कोलकाता नाइट राइडर्स ने रयान पराग की कैप्टेंसी वाली राजस्थान रॉयल्स की टीम को 152 रनों का लक्ष्य महज़ 17.3 ओवर में हासिल करके 8 विकेट से धूल चटाई। इसी के साथ अब रयान पराग के नाम एक ऐसा अनचाहा रिकॉर्ड दर्ज हो गया है जो कि कोई भी कैप्टन अपने नाम नहीं चाहेगा। दरअसल, आईपीएल के इतिहास के 18 साल में रयान पराग राजस्थान रॉयल्स के ऐसे पहले कप्तान बन गए हैं जिनकी अगुवाई में टीम ने लगातार शुरुआती दो मैच हारे। गौरतलब है कि वो राजस्थान रॉयल्स के आईपीएल में सातवें कप्तान हैं और आईपीएल 2025 में टीम की शुरुआती तीन मैचों में कैप्टेंसी करने के लिए चुने गए हैं। हालांकि बतौर कैप्टन उनकी शुरुआत किसी बुरे सपने की तरह रही और टीम ने पहले मैच में सनराइजर्स हैदराबाद से 44 रनों से मैच हारा और फिर कोलकाता नाइट राइडर्स ने भी उन्हें 8 विकेट से एकतरफा मात दी। यही वज़ह है जिस शर्मनाक रिकॉर्ड से सभी कैप्टन बचना चाहते हैं वो अब रयान पराग के गले पड़ गए गया है। उनके अलावा राजस्थान रॉयल्स के लिए कोई भी ऐसा कैप्टन नहीं हुआ जिनकी लीडरशिप में टीम ने शुरुआती दो मैच ही गंवा दिए हों। ये भी जान लीजिए कि रयान पराग से पहले राजस्थान रॉयल्स के लिए आईपीएल में शेन वॉर्न, शेन वॉटसन, राहुल द्रविड़, स्टीव स्मिथ, अजिंक्य रहाणे और संजू सैमसन कैप्टेंसी कर चुके हैं। आईपीएल 2025 में भी संजू सैमसन ही टीम के कैप्टन हैं, लेकिन वो अपने अंगूठे पर लगी चोट के कारण राजस्थान के लिए सीजन के शुरुआती तीनों में ये भूमिका निभाने के लिए उपलब्ध नहीं हैं, जिस वज़ह से रयान पराग को कैप्टेंसी के लिए चुना गया। बात करें अगर पॉइंट्स टेबल पर राजस्थान रॉयल्स की पॉजिशन की तो वो अपने पहले दो मैचों में हार का सामना करने के बाद सबसे नीचे यानी 10वें पायदान पर पहुंच गए हैं। उनका नेट रन रेट भी -1.88 है जो कि टीम के लिए बड़ी मुश्किल की वज़ह बन सकता है।

एल्बम सुपर स्टार करन-किरण की फिल्म मया बिना रहे नइ जाए 4 अप्रैल से होगी प्रदर्शित....

रायपुर । छत्तीसगढ़ी सिनेमा प्रेमियों के लिए एक बेहतरीन फिल्म एवीएम गाना ऑडियो वीडियो कंपनी के बैनर तले बनी छत्तीसगढ़ी फिल्म मया बिना रहे नइ जाए 4 अप्रैल से रायपुर सहित प्रदेशभर के सिनेमाघरों में रिलीज होने जा रही है। निर्माता संतोष कुर्रे और उनके पुत्र दीपक कुर्रे के निर्देशन में बनी फिल्म में नायक करन एवं किरण पहले भी कई हिट एल्बम गीतों में साथ नजर आ चुके हैं। फिल्म का निर्देशन कर रहे दीपक कुर्रे को छत्तीसगढ़ी फिल्म इंडस्ट्री का लंबा अनुभव कैमरा एडिटिंग डबिंग में काफी लंबा अनुभव रहा है, उन्होंने मशहूर निर्देशक सतीश जैन को भी असिस्ट किया है। संगीतकार कैलाश मांडले ने फिल्म के गीतों को कर्णप्रिय बनाने में कोई कसर नहीं छोड़ी है। फिल्म के निर्माता संतोष कुर्रे ने बताया कि करन-किरण की जोड़ी को एल्बम गीतों में दर्शकों से जबरदस्त प्यार मिला, जिसके चलते उन्होंने फिल्म निर्माण का फैसला लिया। फिल्म मे अदाकारी की है.करण किरण चौहान, पुष्पेंद्र सिंह मनोज जोशी, अंजलि चौहान, सुमित्रा साहू, संगीता निषाद, भूपेश लिल्हारे, मायरा यदू, दीवाना पटेल, शशि रंगीला ,सरला गंधर्व चौहान, झरनेश यादव, शंकर झारिया, मुस्कान शर्मा, रितेश चौहान, पिंकी साहू, बबली कुर्रे अमर सिंह कुर्रे. मया बिना रहे नइ जाए साफ-सुथरी, पारिवारिक ताने-बाने, और इमोशन्स से भरपूर फिल्म है। इसके शानदार गाने, दमदार अभिनय और बेहतरीन निर्देशन इसे खास बनाते. जो दर्शकों को बेहद पसंद आयेंगे।

भारत में टेस्टेड, भारत के लिए निर्मित OPPO F29 सीरीज, ड्यूरेबल चैंपियन का हुआ भारत में लॉन्च

नईदिल्ली। OPPO India ने ट्रू ड्यूरेबल चैंपियन OPPO F29 सीरीज़ पेश की है। यह ड्यूरेबल स्मार्टफ़ोन और विश्वसनीय नेटवर्क प्रदान करती है। भारत में टेस्टेड और भारत के लिए निर्मित F29 सीरीज़ में विश्व स्तरीय इंजीनियरिंग, मिलिट्री-ग्रेड की मजबूती, बेहतर कनेक्टिविटी और शक्तिशाली बैटरी परफॉरमेंस का बेहतरीन मिश्रण है। इन सभी खूबियों के साथ यह खूबसूरत और स्लिम स्मार्टफोन व्यस्त गलियों से लेकर मुश्किल रास्तों तक हर चुनौती का सामना कर सकता है। भारत के लिए टेस्टेड और भारत के लिए निर्मित OPPO F29 सीरीज़ में उद्योग का अग्रणी डस्ट एवं लिक्विड प्रोटेक्शन दिया गया है। इसलिए यह केरल के मानसून और राजस्थान की भारी गर्मी से लेकर कश्मीर की बर्फीली ठंड तक भारत के चुनौतीपूर्ण वातावरण को सहन कर सकता है। IP66, IP68 और IP69 मानकों के लिए भारत में स्वस् (सोसाइटी जेनरल डे सर्विलांस), बेंगलुरु द्वारा टेस्टेड F29 सीरीज अपने सेगमेंट में सबसे मजबूत स्मार्टफ़ोन है। IP66 रेटिंग के कारण यह पानी की तेज धार का सामना कर सकता है। इसलिए यह वेंडर्स से लेकर कंस्ट्रक्शन कर्मियों तक उन सभी लोगों के लिए उत्तम है, जो गीले वातावरण में काम करते हैं। IP68 रेटिंग के कारण यह 30 मिनट तक 1.5 मीटर गहरे पानी में डूबने पर भी सुरक्षित रहता है। यानी पानी से भरे गड्ढों और रसोई के सिंक में गिरने पर भी यह सुरक्षित रहेगा। वहीं IP69 रेटिंग के कारण यह 80 डिग्री एष्ट तक के उच्च दबाव, उच्च तापमान वाले पानी की धार को सहन कर सकता है। इसलिए यह उद्योगों में या बहुत ज़्यादा नमी वाले मौसम में काम करने के लिए उत्तम है। F29 सीरीज बेहतर लिक्विड रेजिस्टेंस के कारण भारी बारिश, नदी के पानी, गर्म झरनों, जूस, चाय, दूध, कॉफी, बीयर, भाप, बर्तन धोने के पानी, डिटर्जेंट का घोल, बर्फीला पानी क्लीनिंग फ़ोम और गंदे पानी के गिरने पर भी सुरक्षित रहती है। अगर यह पानी में डूब जाए, तो एक अद्वितीय कंपन वाली साउंड स्पीकर से पानी को बाहर निकाल देती है। OPPO India के हेड, प्रोडक्ट कम्युनिकेशंस, सैवियो डिसूज़ा ने कहा, OPPO F29 सीरीज़ भारत के लिए निर्मित है ङ्क इसमें ड्यूरेबिलिटी के साथ मजबूती, कनेक्टिविटी और परफ़ॉर्मेंस का बेहतरीन मिश्रण है।

भारत की पहली एआई पर्सनल असिस्टेंट कार MG एस्टर अब बन गई 'द ब्लॉकबस्टर एसयूवी'

रायपुर। JSW MG मोटर इंडिया ने स्व एस्टर के एमवाई 2025 एडिशन को 'द ब्लॉकबस्टर एसयूवी' के रूप में पेश करने की घोषणा की है। यह बदलाव ब्रांड की ग्राहकों के लिए एक ऑटो-टेक मास्टरपीस लाने की प्रतिबद्धता को दर्शाता है, जिसमें दमदार परफॉर्मेंस, स्टाइल, इनोवेशन और टेक्नोलॉजी का जबरदस्त मेल है। एमवाई2025 एडिशन के साथ, एस्टर 'ब्लॉकबस्टर एसयूवी' नई तकनीकों को अपनाने में आगे रहने वाले ग्राहकों के लिए खास तौर पर डिजाइन की गई है। स्व एस्टर अब अपनी सेगमेंट की इकलौती एसयूवी है, जो अपने नए शाइन वेरिएंट के साथ 12.5 लाख रुपये (एक्स-शोरूम) से कम कीमत में पैनोरमिक सनरूफ पेश करती है। वहीं, सिलेक्ट वेरिएंट में छह एयरबैग और प्रीमियम आइवरी लेदरेट सीट्स मिलती हैं, जो सेफ्टी और कम्फर्ट को और बढ़ाती हैं। एसयूवी के शौकीन लोग अपने नज़दीकी JSW MG मोटर इंडिया डीलरशिप पर जाकर 'द ब्लॉकबस्टर एसयूवी' के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकते हैं और इसे 9.99 लाख रुपये (एक्स-शोरूम) की शुरुआती कीमत पर बुक कर सकते हैं। 2025 स्व एस्टर 1.5एल एमटी एंड सीवीटी और 1.3 टर्बो एटी पावरट्रेन के साथ उपलब्ध है। JSW MG मोटर इंडिया के डायरेक्टर (सेल्स एंड ऑपरेशन्स) राकेश सेन ने इस मौके पर कहा, "MG एस्टर एक नया और दमदार अंदाज लेकर आई है, जो उन लोगों के लिए परफेक्ट एसयूवी है, जो नई चीजें अपनाने में आगे रहते हैं। यह कार उन लोगों के लिए है, जो प्रैक्टिकैलिटी से ज्यादा, एक शानदार ड्राइविंग अनुभव और स्टाइल की चाह रखते हैं। हम समझते हैं कि ग्राहक एक ऐसी कार चाहते हैं, जो उनकी तरक्की को दर्शाए, उनके सपनों और हकीकत के बीच सही संतुलन बनाए और हर सफर को यादगार बना दे। झंचलती-फिरती ब्लॉकबस्टर स्व एस्टर में यह सबकुछ मिलता है। 'द ब्लॉकबस्टर एसयूवी' 50 से ज्यादा सेफ्टी फीचर्स के साथ आती है, जिसमें प्रीमियम इंटीरियर और पैनोरमिक सनरूफ ड्राइविंग के अनुभव को आराम के एक नए स्तर पर ले जाते हैं। कई सुविधाओं और एक सुखद ड्राइविंग अनुभव के साथ, स्व एस्टर भारत की पहली एसयूवी भी है जिसमें पर्सनल एआई असिस्टेंट और 14 एडवांस्ड ड्राइवर असिस्टेंस सिस्टम (एडीएएस) की सुविधा उपलब्ध हैं।

दैनिक
विश्व परिवार
महानगर

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

रायपुर, शनिवार 29 मार्च 2025

जिला जांजगीर-चांपा संशोधित प्रत्याशी की अंतिम सूची

रायपुर (विसं)। छत्तीसगढ़ चेंबर ऑफ़ कॉमर्स एंड इंडस्ट्रीज के चुनाव प्रक्रिया के तहत 27 मार्च को प्रत्याशियों की अंतिम सूची का प्रकाशन शाम 6 बजे किया गया था। उक्त सूची में जिला जांजगीर-चांपा से मंत्री पद हेतु टंकण त्रुटि के कारण जीतेन्द्र कुमार चंद्राकर का नाम उल्लेखित है। उक्त स्थान पर जिला जांजगीर-चांपा के मंत्री पद हेतु दीपक पालीवाल का नाम पढ़ा जावे। 29 मार्च को प्रातः 11 बजे से दोपहर 2 बजे तक अधिकृत प्रत्याशियों के चुनाव चिन्ह हेतु आवेदन लिया जाएगा तत्पश्चात 1 अप्रैल 2025 को शाम 6 बजे प्रत्याशियों को चुनाव चिन्ह का आवंटन किया जाएगा।

संक्षिप्त समाचार

लखनऊ रेल मंडल में दोहरीकरण एवं फूलपुर स्टेशन के यार्ड को जोड़ने का कार्य, फलस्वरुप कुछ यात्री गाड़ियों का परिचालन रहेगा प्रभावित

रायपुर (विश्व परिवार)। अधोसंरचना विकास हेतु उत्तर रेलवे के लखनऊ रेल मंडल के जंघई-फाफा मऊ सेक्शन में दोहरीकरण का कार्य एवं फूलपुर स्टेशन के यार्ड को जोडने का कार्य के लिए नॉन इंटरलोकिंग का कार्य किया जायेगा। यह कार्य के लिए कुछ यात्री गाड़ियों का परिचालन प्रभावित रहेगा। यह कार्य दिनांक 01 से 07 अप्रैल, 2025 तक किया जायेगा। इस कार्य के पूर्ण होते ही गाडियों की समयबद्धता एवं गति में तेजी आयेगी। इस कार्य के फलस्वरूप दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे की एक यात्री गाड़ी को प्रयागराज स्टेशन एवं वाराणसी सिटी स्टेशन में नियत्रित होकर चलाई जाएगी। जिसका विवरण इस प्रकार है- **नियत्रित होने वाली गाड़ी**- दिनांक 01 से 04 अप्रैल, 2025 को दुर्ग से रवाना होने वाली गाडी संख्या 15160 दुर्ग-छपरा सारनाथ एक्सप्रेस को प्रयागराज स्टेशन में 60 मिनिट नियत्रित की जाएगी। 05 एवं 06 अप्रैल, 2025 को दुर्ग से रवाना होने वाली गाडी संख्या 15160 दुर्ग-छपरा सारनाथ एक्सप्रेस को प्रयागराज स्टेशन में 02 घंटे 30 मिनिट नियत्रित की जाएगी। 06 एवं 07 अप्रैल, 2025 को छपरा से रवाना होने वाली गाडी संख्या 15159 छपरा-दुर्ग सारनाथ एक्सप्रेस को वाराणसी सिटी स्टेशन में 02 घंटे 10 मिनिट नियत्रित की जाएगी। रेल प्रशासन यात्रियों को होने वाली असुविधा के लिए खेद व्यक्त करता है तथा सहयोग की आशा करता है।

जन्मकल्याणक महोत्सव विशेष

सकल जैन समाज द्वारा 15 दिवसीय 3 टेस्ट नि:शुल्क का आयोजन

रायपुर (विश्व परिवार)। तेरापंथ युवक परिषद्, रायपुर द्वारा संचालित अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् का मानव सेवा हेतु कृत संकल्पित महनीय उपक्रम आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर, रायपुर द्वारा रायपुर सकल जैन समाज समाहित भगवान महावीर जन्मकल्याणक महोत्सव समिति-2025 अंतर्गत आयोजित 15 दिवसीय आयोजन दिनांक 26 मार्च से 9 अप्रैल 2025 तक 3 टेस्ट नि:शुल्क प्रदान करते हुए प्रस्तुत किये गए। जिसका लाभ आज तृतीय दिन Thyroid/Sugar/CBC-25 समाज जनों द्वारा लिया गया। जिसमें विशेष सहयोग लैब में कार्यरत सहायकों का रहा। श्री मनीष जी फलोदिया परिवार ने सहयोगी की भूमिका निर्वहन करते हुए विसजर्न किया।

समाजसेवी राजेश वासवानी ने सिंधी समाजसेवी संस्था सारथी के दरियाशाह जी महाआरती का पोस्टर विमोचन किया

रायपुर (विश्व परिवार)। रायपुर चेट्रीचंड़ महोत्सव के पर्व पर बहुत दिनों से भगवान झूलेलाल की मौज लगी हुई है। इसी कड़ी में सिंधी समाजसेवी संस्था 'सारथी' परिवार ने दरियाशाह जी महाआरती भव्य रंगारंग सिंधी सांस्कृतिक कार्यक्रम, तेलीबांधा सरोवर मरीन ड्राइव रायपुर छत्तीसगढ़ में शाम 5 बजे से 8 तक प्रोग्राम रखा गया है। इस प्रोग्राम में सांई श्री मुरलीधर उदासी जी, सुरेश दोदवानी, विजय बठेजा, राजेश रतनानी, महेश बजृवानी, मुकेश थावानी, इंदु गोधवानी, सुरेश रतनानी, संजय ठाकुर, सतराम दास मयानी, तनेश आहूजा, अमर चंदनानी, सुरेश सुखीजा, नरेश आडवानी, नंदलाल बलवानी, डॉ महेश रामचंदानी, सुरेश बुधवानी, रतन वल्यानी, रवि पंजवानी व सारथी महिला मंडल एवं समस्त मुखीगण, गणमान्य नागरिक उपस्थित रहेंगे।

झूलेलाल जन्मोत्सव को लेकर युवाओं में दिख रहा काफी उत्साह, चारों तरफ खुशियों का माहौल

रायपुर (विश्व परिवार)। रायपुर में आने वाले 30 मार्च को झूलेलाल महोत्सव के लिए तैयारियां जोरों पर है बताते चले कि शहर के चारों तरफ सिंधियों में उत्साह का माहौल है साथी विभिन्न रंगारंग कार्यक्रमों के माध्यम से झूलेलाल महोत्सव को भव्य और आकर्षित बनाने के लिए आयोजन किया जा रहे हैं इसी क्रम में तेलीबांधा रवि ग्राम युवा बिन द्वारा भव्य झूलेलाल जी की मूर्ति स्थापित कर उनकी पूजा अर्चना की जा रही है बताते चले कि आज भव्य रंगारंग कार्यक्रम का आयोजन भी किया गया हैसाथ ही प्रत्येक दिन विशाल आरती का भी आयोजन किया जा रहा है बताते चलें कि झूलेलाल महोत्सव को लेकर युवाओं में काफी उत्साह और उमंग देखने को मिल रहा है आने वाले 30 मार्च को झूलेलाल जन्मोत्सव को लेकर चारों तरफ काफी खुशनुमा माहौल देखने को मिल रहा है।

पार्षद आशु चंद्रवंशी ने बजट को आत्मविश्वास से भरपूर सही नियत के साथ लाया गया बजट बताया

रायपुर (विश्व परिवार)। आज नगर निगम रायपुर के 2025-26 के बजट में चर्चा में भाग लेते हुए डीडी नगर वार्ड क्रमांक-40 के पार्षद आशु चंद्रवंशी ने बजट को विष्णुदेव सरकार के सुशासन के अनुकूल शहर की जनता के जीवन स्तर को बेहतर बनाने की दिशा में आत्मविश्वास से भरपूर सही नियत के साथ लाया गया बजट बताया। उन्होंने बजट के प्रावधानों में अधोसरंचना विकाश में प्रगति, समानता, स्थिरता व सुगमता के लक्ष्य को प्रभावी कदम बताया। साथ ही तालाब सहित पुराने कुओ के संरक्षण, प्राचीन धरोहर महादेव घाट के सौंदर्यकरण, यातायात व्यवस्था हेतु चौक चौराहों के पुनर्विकास, शहर प्रवेश सात द्वारो में म्यूरल साइनेज के निर्माण योजना को अतुलनीय बताया। उन्होंने प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत अनाबंटित 1258 मकानों को शीघ्र ही आबंटित करने एवम बजट में समाहित चिंगरी नाला की तरह डीडी नगर वार्ड एवम डंगनिया में जलनिकासी की दृष्टि से जीवनदायनी सरोना नाला में भी लाइनिंग वर्क के लिए अपनी मांग रखी।

आयुक्त द्वारा कचना तालाब, मोवा व्यवसायिक परिसर, खम्हारडीह आवासीय कॉलोनी का निरीक्षण

रायपुर (विसं)। आज नगर पालिक निगम रायपुर के आयुक्त विश्वदीप ने नगर निगम जोन क्र.-9 के क्षेत्र के तहत स्वच्छ सर्वेक्षण अभियान 2025 के अंतर्गत तैयारी का प्रत्यक्ष निरीक्षण किया और आवश्यक निर्देश दिए. आयुक्त ने कचना तालाब, मोवा व्यवसायिक परिसर, खम्हारडीह आवासीय कॉलोनी में सफाई व्यवस्था का निरीक्षण निगम उपायुक्त जसदेव सिंह बाबरा, जोन 9 जोन कमिश्नर संतोष पाण्डेय, कार्यपालन अभियंता पद्माकर श्रीवास, सहायक अभियंता स्वच्छ भारत मिशन योगेश कडु की उपस्थिति में किया. आयुक्त ने सभी अफसरों को शहर स्वच्छ और सुन्दर बनाने के कार्यों में पूरी तरह फोकस होकर निरीक्षण के दौरान गन्दगी दिखने पर तत्काल सफाई करवाकर स्वच्छता कायम करने के निर्देश दिए हैं.

एएमएनएस इंडिया ने परियोजना आरोग्य के तहत पटेलपारा-किरंदुल बस्ती में नि:शुल्क नेत्र जांच शिविर का सफल आयोजन किया

किरंदुल (विश्व परिवार)। एएम/एनएस इंडिया ने अपनी सीएसआर पहल 'परियोजना आरोग्य' के तहत पटेलपारा-किरंदुल बस्ती में एक दिवसीय 'नि:शुल्क नेत्र जांच शिविर' का सफल आयोजन किया। इस आयोजन में वार्ड नंबर 18 के प्रतिनिधि अनिल मरकाम, सोनू कुंजाम, सोनू मांडवी, राजू कुंजाम, आंगनवाड़ी कार्यकर्ता लक्ष्मी ओयामी, तथा पटेलपारा प्राथमिक विद्यालय की शिक्षिका ममता लोहरे उपस्थित रहीं।

इस नेत्र जांच शिविर में पटेलपारा, नरियापारा, तामोपारा, मिश्रा कैंप, और पटवारीपारा सहित किरंदुल बस्ती के विभिन्न क्षेत्रों से कुल 188 निवासियों ने भाग लिया। नेत्र परीक्षण जेके आई हॉस्पिटल एंड रेटिना केयर, जगदलपुर के चिकित्सा दल द्वारा किया गया। परीक्षण के दौरान 73 निवासियों में दृष्टि दोष (रिफ्रैक्टिव एरर) तथा 6 व्यक्तियों में मोतियाबिंद की समस्या पाई गई।

सभी निवासियों को नि:शुल्क परामर्श और दवाएं प्रदान की गईं, तथा जिन लोगों में नेत्र संबंधी समस्याएं पाई गईं, उन्हें नि:शुल्क चश्मे भी उपलब्ध कराए जाएंगे। इस शिविर की सफलता एएम/एनएस इंडिया की दक्षिण बस्तर, दंतेवाड़ा के दूरदराज के आदिवासी क्षेत्रों में सुलभ और गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करने की प्रतिबद्धता को दर्शाती है।

इस पहल से स्थानीय लोगों को अत्यधिक लाभ मिला, जिससे सीमित स्वास्थ्य सेवाओं के बावजूद समय पर निदान और उपचार सुनिश्चित हो सका। डॉक्टरों और चिकित्सा विशेषज्ञों की टीम ने लोगों को स्वास्थ्य जागरूकता और बीमारियों की रोकथाम के उपायों के बारे में भी जानकारी दी।

स्थानीय निवासियों ने एएम/एनएस इंडिया के इस प्रयास की सराहना की और भविष्य में भी इस तरह के स्वास्थ्य शिविरों के निरंतर आयोजन की मांग की, ताकि अधिक से अधिक लोगों को इसका लाभ मिल सके। एएम/एनएस इंडिया की यह पहल सिर्फ स्वास्थ्य सेवाओं को बढ़ावा ही नहीं देती, बल्कि सामुदायिक कल्याण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्रं.-5)
ईदगाहभाठा,नवीन पानी टंकी परिसर, रायपुर
Email ID - rmczone5@gmail.com

पत्र क्रं./19455/न.पा.नि./जोन क्रं.-5/2025
रायपुर दिनांक : 28-03-2025

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 19455
वार्ड का नाम-67-भक्तमाता कर्मा वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि **67** स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी-आई.डी.- **RPR567K1165A** जो कि निगम अभिलेख में **श्री/श्रीमती MILAN SONI** पिता/पति, श्री/श्रीमती **MAHESH SONI** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **SEEMA DEWANGAN** पिता/पति, श्री/श्रीमती **SANTOSH DEWANGAN** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार / **पंजीकृत विक्रय विलेख** / वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नही की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

सूचना जारी करे
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रं. - 5
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

पीएचडीसीसीआई द्वारा 'एक दिवसीय बौद्धिक संपदा जागरूकता कार्यक्रम' का आयोजन संपन्न

नई दिल्ली (विश्व परिवार)। पीएचडीसीसीआई ने लघु और मध्यम उद्यम मंत्रालय, भारत सरकार के विकास आयुक्त कार्यालय के सहयोग से 'एक दिवसीय बौद्धिक संपदा (IP) जागरूकता कार्यक्रम' (नेशनल IP आउटरीच मिशन - विकसित भारत) का आयोजन 28 मार्च 2025 को IGKV डायरेक्टर रिसर्च सर्विसेज, IGKV, कृषक नगर, रायपुर (छत्तीसगढ़) में किया। इस कार्यशाला में डॉ. हुलास पाठक (प्रिंसिपल इन्वेस्टिगेटर एवं CEO, RKVY RAFTAAR एग्री-बिजनेस इनक्यूबेटर, IGKV) एवं डॉ. अमित दुबे (वैज्ञानिक, छत्तीसगढ़ विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद, छत्तीसगढ़ सरकार) ने अपनी गरिमामयी उपस्थिति दर्ज कराई।

कार्यक्रम के उद्घाटन सत्र में पीएचडीसीसीआई छत्तीसगढ़ राज्य चैप्टर के सदस्य श्री निखिल अग्रवाल ने सभी प्रतिभागियों का स्वागत किया। उन्होंने कहा कि बौद्धिक संपदा अधिकार (IPR) का आज के आधुनिक युग में विशेष महत्व है। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि ज्ञान और विचार आज के उद्योगों को आगे बढ़ाने में अहम भूमिका निभाते हैं, इसलिए बौद्धिक संपदा की सुरक्षा पहले से कहीं अधिक महत्वपूर्ण हो गई है। उन्होंने यह भी बताया कि पेटेंट, ट्रेडमार्क, कॉपीराइट और व्यापारिक रहस्य (ट्रेड सीक्रेट्स) नवाचारों को सुरक्षित रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, जिससे व्यवसायियों, उद्यमियों, कलाकारों और शोधकर्ताओं को लाभ मिलता है।

डॉ. हुलास पाठक ने अपने संबोधन में कहा कि ज्ञान को साझा करना आवश्यक है, लेकिन उद्यमियों को अपने विचारों को कार्यान्वित करने की जिम्मेदारी स्वयं लेनी चाहिए। उन्होंने यह भी बताया कि कृषि क्षेत्र में नवाचार की अपार संभावनाएं हैं, क्योंकि इस क्षेत्र में नई कृषि उत्पादों के लिए विशाल बाजार मौजूद है। उन्होंने यह भी उल्लेख किया कि इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय कृषि और अन्य उत्पादों पर व्यापक शोध कर रहा है, जो इस क्षेत्र में नवाचार के अनेक अवसर प्रदान करता है।

डॉ. अमित दुबे ने कहा कि केवल शोध करना ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि उसके क्रियान्वयन पर भी ध्यान देना आवश्यक है। उन्होंने बताया कि भारत ने विश्व स्तर पर 4 लाख से अधिक शोध पत्र प्रस्तुत किए हैं, जो दुनिया में सबसे अधिक हैं। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि शोध का असली प्रभाव उसके व्यावहारिक उपयोग में निहित होता है। उन्होंने यह भी बताया कि माइक्रोसॉफ्ट ने कंप्यूटर उद्योग में क्रांति ला दी, और आज भारत कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) के अनुप्रयोगों में अग्रणी भूमिका निभा रहा है। उन्होंने नवाचारकों और उद्यमियों को सलाह दी कि वे अपने उत्पादों की पैकेजिंग और ब्रांडिंग स्वयं करें, क्योंकि यदि इसे किसी अन्य संस्था द्वारा किया जाता है, तो लाभ भी वही उठाएंगे। इसके अलावा, उन्होंने MSME मंत्रालय, भारत सरकार की SCIPP योजना के बारे में भी विस्तृत जानकारी दी।

थुहा (कुरूद) उपकेन्द्र में 315 एमवीए का ट्रांसफॉर्मर ऊर्जीकृत

अंतर्राज्यीय पारेषण तंत्र के विस्तार में ऊंची छलांग

रायपुर (विश्व परिवार)। अंतर्राज्यीय पारेषण प्रणाली के विस्तार के अभियान में छत्तीसगढ़ स्टेट पॉवर ट्रांसमिशन कंपनी को एक बड़ी उपलब्धि मिली जब थुहा (कुरूद) के 400 केवी उपकेंद्र में 315 एमवीए का विशाल ट्रांसफॉर्मर ऊर्जीकृत किया गया। मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय के निर्देशानुसार प्रमुख सचिव ऊर्जा श्री सुबोध कुमार सिंह के मार्गदर्शन में 27 मार्च को प्रबंध निदेशक छत्तीसगढ़ स्टेट पॉवर ट्रांसमिशन कंपनी श्री आरके शुक्ला द्वारा इस वृहद ट्रांसफॉर्मर का ऊर्जीकरण किया गया।

छत्तीसगढ़ स्टेट पॉवर ट्रांसमिशन कंपनी द्वारा दूसरे राज्यों से बिजली प्राप्त करने के लिए 6 हजार मेगावॉट क्षमता की पारेषण प्रणाली को विकसित करने का लक्ष्य रखा गया है। जिसके अंतर्गत प्रदेश में विभिन्न स्थानों पर पारेषण लाइनों-उपकेंद्रों की स्थापना, नए वृहद ट्रांसफॉर्मरों की स्थापना व क्षमता वृद्धि जैसे अनेक कार्य किए जा रहे हैं। छत्तीसगढ़ की पूंजीगत व्यय के अधीन कुरूद तहसील के ग्राम थुहा स्थित 400/220 केवी उपकेन्द्र में अतिरिक्त 315 एमवीए विशाल ट्रांसफॉर्मर की तीसरी इकाई की स्थापना 39 करोड रू. की लागत से की गई है।

नये ट्रांसफॉर्मर के चालू होने से 400 केवी कुरूद (थुहा) उपकेन्द्र की कुल क्षमता अब 915 एमवीए हो गयी है एवं प्रदेश में ट्रांसमिशन कंपनी में 400 केवी उपकेन्द्र की क्षमता 3150 एमवीए से बढ़कर 3465 एमवीए हो गई है।

उपकेन्द्र की इस क्षमता वृद्धि का लाभ एक ओर राजिम, पाटन, गुरूर (बालोद), महासमुंद (परसवानी) स्थित 220 केवी उपकेन्द्रों से आपूर्ति प्राप्त कर रहे सभी श्रेणी के ग्रामीण एवं शहरी विद्युत उपभोक्ताओं को गुणवत्तापूर्ण विद्युत आपूर्ति के रूप में होगा। वहीं दूसरी ओर इससे राज्य को केन्द्रीय उपक्रम के कोटे से आबंटित बिजली की अधिक मात्रा प्राप्त करने में सुविधा होगी।

नये ट्रांसफॉर्मर का ऊर्जीकरण कंपनी के प्रबंध निदेशक श्री आरके शुक्ला द्वारा किया गया। इस अवसर पर कंपनी के वरिष्ठ कार्यपालक निदेशक श्री संजय पटेल, श्री केएस मनौठिया, श्रीमती ज्योति नंनौरे एवं मुख्य अभियंता श्री वीके दीक्षित, श्रीमती शारदा सोनवानी, अतिरिक्त मुख्य अभियंता श्री प्रसन्ना गोसावी, श्री आरके राठौर, अधीक्षण अभियंता श्री वीए देशमुख, श्री संजय शर्मा, श्री करूणेश यादव, कार्यपालन अभियंता श्री उमाकांत यादव, श्री प्रत्युष अग्रवाल सहित संबंधित मैदानी अधिकारी उपस्थित रहे। उल्लेखनीय है कि कुरूद (थुहा) 400 केवी उपकेन्द्र से हाल ही में राजिम स्थित 220 केवी उपकेन्द्र हेतु नई लाइन भी ऊर्जीकृत की गई है। यह कार्य टर्न-की संस्था मेसर्स कल्पतरू पॉवर ट्रांसमिशन कंपनी लिमिटेड, गांधी नगर गुजरात द्वारा संपन्न किया गया।

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्रं.-5)
ईदगाहभाठा,नवीन पानी टंकी परिसर, रायपुर
Email ID - rmczone5@gmail.com

पत्र क्रं./19457/न.पा.नि./जोन क्रं.-5/2025
रायपुर दिनांक : 28-03-2025

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 19457
वार्ड का नाम-41-दीनदयाल उपाध्याय वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि **41** स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी-आई.डी.- **RPR569E00207** जो कि निगम अभिलेख में **श्री/श्रीमती SUSANTA KUMAR PRADHAN** पिता/पति, श्री/श्रीमती **BHUBANESWAR PRADHAN** के नाम से दर्ज है, जिसको **श्री/श्रीमती JITENDRA KUMAR SAHU** पिता/पति, श्री/श्रीमती **NIRANJAN RAM SAHU** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/**पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नही की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

सूचना जारी करे
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रं. - 5
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्रं.-5)
ईदगाहभाठा,नवीन पानी टंकी परिसर, रायपुर
Email ID - rmczone5@gmail.com

पत्र क्रं./19458/न.पा.नि./जोन क्रं.-5/2025
रायपुर दिनांक : 28-03-2025

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 19458
वार्ड का नाम-41-दीनदयाल उपाध्याय वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि **41** स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी-आई.डी.- **RPR569E00053** जो कि निगम अभिलेख में **श्री/श्रीमती LALITA KUMBHALKAR** पिता/पति, श्री/श्रीमती **SHANKAR RAO KUMBHALKAR** के नाम से दर्ज है, जिसको **श्री/श्रीमती KARUNA INDRAPAL SINGH** पिता/पति, श्री/श्रीमती **INDRAPAL SINGH** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/**पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नही की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

सूचना जारी करे
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रं. - 5
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्रं.-5)
ईदगाहभाठा,नवीन पानी टंकी परिसर, रायपुर
Email ID - rmczone5@gmail.com

पत्र क्रं./ 19459/न.पा.नि./जोन क्रं.-5/2025
रायपुर दिनांक : 28-03-2025

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 19459
वार्ड का नाम-68-खूबचंद बघेल वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि **68** स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी-आई.डी.- **RPR567C00388** जो कि निगम अभिलेख में **श्री/श्रीमती RAJENDRA KUMAR NISHAD** पिता/पति, श्री/श्रीमती **PANCHURAM NISHAD** के नाम से दर्ज है, जिसको **श्री/श्रीमती NEETA SONI** पिता/पति, श्री/श्रीमती **DINDAYAL SONI** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/**पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नही की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

सूचना जारी करे
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रं. - 5
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्रं.-5)
ईदगाहभाठा,नवीन पानी टंकी परिसर, रायपुर
Email ID - rmczone5@gmail.com

पत्र क्रं./19456/न.पा.नि./जोन क्रं.-5/2025
रायपुर दिनांक : 28-03-2025

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 19456
वार्ड का नाम-41-दीनदयाल उपाध्याय वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि **41** स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी-आई.डी.- **RPR569B00541** जो कि निगम अभिलेख में **श्री/श्रीमती KABIJ- PUKHRAJ CHAHANDE** पिता/पति, श्री/श्रीमती **DINKAR RAO CHAHANDE** के नाम से दर्ज है, जिसको **श्री/श्रीमती RAJESH KUMAR RAMANI** पिता/पति, श्री/श्रीमती **OMPRAKASH RAMANI** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/**पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नही की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

सूचना जारी करे
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रं. - 5
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्रं.-5)
ईदगाहभाठा,नवीन पानी टंकी परिसर, रायपुर
Email ID - rmczone5@gmail.com

पत्र क्रं./19460/न.पा.नि./जोन क्रं.-5/2025
रायपुर दिनांक : 28-03-2025

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 19460
वार्ड का नाम-68-खूबचंद बघेल वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि **68** स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी-आई.डी.- **RPR567B0299B** जो कि निगम अभिलेख में **श्री/श्रीमती KAMENDRA GUPTA** पिता/पति, श्री/श्रीमती **PREMNARAYAN GUPTA** के नाम से दर्ज है, जिसको **श्री/श्रीमती RITA SARTHI** पिता/पति, श्री/श्रीमती **DINESH SARTHI** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/**पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नही की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

सूचना जारी करे
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रं. - 5
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

प्रकाशक, मुद्रक, स्वामी प्रियेश कुमार जैन द्वारा आसमां पब्लिसर्स इंडिया प्रा.लि. पंजाब नेशनल बैंक के सामने, जयस्तंभ चौक, रायपुर से मुद्रित एवं ओलंपस जिम के पीछे, सेक्टर-1, शंकर नगर रायपुर (छ.ग.) से प्रकाशित। संपादक : प्रदीप कुमार जैन, फोन नं. : 0771- 4017966, मो.- 9981924252 RNI.NO.CHHHIN/2013/50354